अध्याय 5

मसीही चलन

(भाग 1)

अध्याय 5 का आरम्भ आयत 1 में हाजिरा और सारा के दृष्टांत की संक्षिप्त प्रासंगिकता के साथ होता है। इस प्रासंगिकता के बाद एक नया खण्ड 5:2—6:10 मसीही चलन को वर्णित करता है। यह मसीह में स्वतन्त्रता (5:2-15) और आत्मा के द्वारा चलने (5:16-26) का अर्थ ब्यान करता है। 5:19-26 में ''शरीर के कामों'' को ''आत्मा का फल'' से अलग किया गया है।

हाजिरा और सारा के दृष्टांत की प्रासंगिकता (5:1)

[1]मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; अतः इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो।

आयत 1. सम्भवता यह आयत अध्याय 4 के अंत से सम्बन्धित है। कुछ अंग्रेज़ी संस्करणों (NEB; REB; NRSV) और मानक यूनानी नये नियम के कुछ संस्करणों में 4:31 के बाद और 5:2 के साथ नया पद्य आरम्भ करके आयत को जोड़ते हुए इस विचार का समर्थन किया गया है।

आरम्भिक यूनानी हस्तलिपियों में आम तौर पर पद्य, वाक्य को तोड़ने तथा विराम-चिह्नों का इस्तेमाल नहीं किया जाता था। इसके बजाय मूल पाठ बिना रुके एक से दूसरी पंक्ति में बड़े अक्षरों के साथ आगे बढ़ता रहता था। किसी शब्द को बिना हाइफन के जो आम तौर पर पंक्ति के अंत में बीच में तोड़ दिया जाता, अगली पंक्ति के आरम्भ तक चलता रहता। पद्य के विभाजन और वाक्य की समाप्ति आधुनिक संपादकों तथा अनुवादकों की समझ पर छोड़ दी जाती है।

आयत 1 अध्याय 4 के पिछले पद्य का न केवल तर्कसंगत अर्थ लगता है बल्कि व्याकरण भी यही संकेत देती है कि पौलुस के दृष्टांत का यही सार है। 4:31 में यूनानी शब्द (*dio*) का अनुवाद ''तो फिर'' या ''इसलिए'' (NIV) किया गया है। प्रेरित ने आगे कहा, **मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है।** यूनानी में शब्दों के क्रम में ''स्वतंत्रता'' (*eleutheria*, एलुथेरिया) शब्द पर विशेष बल दिया गया है। मूल धर्मशास्त्र में यूनानी शब्द *eleutheria* (एलुथेरिया) सम्प्रदान कारक में है, जिसे हम लाभ की अभिव्यक्ति के लिए लेते हैं। ''*स्वतन्त्रता के लिए* मसीह ने हमें स्वतन्त्र किया है!''

प्राचीन जगत में स्वतन्त्रता एक ऐसी अवधारणा थी जिससे यूनानी लोग उत्तेजित और प्रोत्साहित होते थे। वे अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ने को तुरन्त तैयार हो जाते थे यानी वे दासता सहने के बजाय मरने को तैयार हो जाते थे। दक्षिणी गलातिया के नगर पूरी तरह से यूनानीवादी थे यानी वे उस समय की यूनानी भाषा और संस्कृति में रचे बसे थे। गलातिया के लोग ही यूनानी बोलने वाले ही नहीं थे बल्कि पौलुस का पालन-पोषण भी किलिकिया के पास के

विश्वविद्यालय नगर तरसुस में हुआ था। वह उनके साहित्य और सोच से भली भांति परिचित था जो सिकन्दर महान के समय से, शक्तिशाली, ऊर्जावान यूनानियों के प्रभाव में आ गए थे।

परन्तु पौलुस यूनानी प्रभाव से कहीं बड़े संसार को बदलने वाली शक्ति की बात कर रहा था। वह पाप के दोष और शक्ति के बोझ से मन और हृदय की स्वतन्त्रता की बात कर रहा था। प्रेरित ने उस स्वतन्त्रता की बात बताई जो केवल उन्हें ही मालूम थी जिनके जीवनों में आत्मा के वास से सामर्थ मिली थी। इस स्वतन्त्रता ने संसार को जीतने (सिकन्दर की तरह) का नहीं बल्कि अपने आपको जीतने का दर्शन दिया था। पौलुस ने पक्के विश्वास वाले जीवन यानी इस संसार को पार पाने वाले विश्वास और आशा के लिए नया जन्म पाने की बात की थी। इस स्वतन्त्रता को पा लेने वाला व्यक्ति विश्वास के द्वारा महिमामय पर अभी अदृश्य स्वर्गीय संसार में प्रवेश पा लेता है।

''स्वतन्त्रता के लिए!'' इससे बढ़कर प्राप्ति और लाभ और क्या हो सकता है? मसीह ने हमें परमेश्वर की संतान होने का लाभ दिया है। जिसकी अकल ठिकाने हो उसके सामने पसंद रखे जाने पर वह परमेश्वर के पुत्रों की महिमामय स्वतन्त्रता को छोड़ दासता के व्यर्थ जीवन को भला क्यों चुनेगा?

पौलुस ने अपनी प्रासंगिकता को यह कहते हुए पूरा किया: **अतः इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो।** ''दासत्व का जूआ'' व्यवस्था थी। अलंकारिक रूप में कहें तो हाजिरा अपने बच्चों अर्थात वर्तमान यरूशलेम के साथ दासत्व में थी। प्रेरित ''ऊपर के यरूशलेम'' के विपरीत शरीर के अनुसार अब्राहम की संतान यानी इस्राएल को दर्शाने के लिए सांसारिक यरूशलेम का इस्तेमाल कर रहा था (4:24-26)। उसका प्रभावशाली संदेश था ''स्वतन्त्र हो जाओ!'' यानी ''स्वतन्त्र रहो!''

व्यवस्था का ''जूआ'' सीनै पहाड़ पर मूसा के द्वारा इस्राएलियों के ऊपर रखा गया था। अन्यजातियों के सम्बन्ध में जो मसीह में विश्वास ला रहे थे, व्यवस्था झगड़े का कारण थी। अन्यजातियों के द्वारा इसे माने जाने की आवश्यकता पर बहस के कारण यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों की सभा बुलाई गई थी। पतरस के शब्दों में यह एक ऐसा ''जूआ'' था ''जिसे न हमारे बापदादा उठा सके थे और न हम उठा सकते हैं'' (प्रेरितों 15:10)। आयत 1 और प्रेरितों 15:10 में दोनों जगह ''जूआ'' शब्द का इस्तेमाल उपमा के रूप में किया गया है। यह उपयोग पुराने नियम में और बाद में यहूदी मत में भी पाया जाता है।

''जूआ'' के लिए यूनानी शब्द (*zugos*, ज़ुगोस), पट्टी या तख्ते की मूल अवधारणा है। LXX (सप्तति अनुवाद) में इसे आम तौर पर बोझ उठाने वाले जानवरों के जूआ (''बैल का जूआ'') का संकेत देता है। यह तराजू का संकेत भी देता है जिसमें कीमत तय करने के लिए चीज़ें तोली जाती हैं (लैव्यव्यवस्था 19:36; दानिय्येल 5:27)।

अपने लाक्षणिक अर्थ में *zugos* (ज़ुगोस) अधिकारी के सामने दासत्व या बलपूर्वक अधीनता के प्रतीक के लिए बार-बार आता है (जैसे मिस्र जैसी विदेशी शक्ति के लिए; लैव्यव्यवस्था 26:13)। जब सुलैमान मर गया और उसकी गद्दी पर उसका पुत्र रहूबियाम बैठा तो इस्राएलियों के उत्तरी गोत्रों ने नये राजा से विनती की कि ''तेरे पिता ने तो हम लोगों पर भारी जूआ डाल रखा था, तो अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को, और उस भारी जूए को, जो उस

ने हम पर डाल रखा है, कुछ हल्का कर; तब हम तेरे अधीन रहेंगे" (1 राजाओं 12:4)। इस विनती की पृष्ठभूमि का सम्बन्ध अत्याधिक टैक्स लगाए जाने और सुलैमान के बड़े भवन निर्माण के कार्यों के लिए कठिन परिश्रम करवाए जाने से था (देखें 1 शमूएल 8:10-18)।

किसी भी प्रकार के जूए के अधीन होने का विचार विशेष तौर पर नकारात्मक अर्थ में ही माना जाता है। आयत 1 में यह उस स्वतन्त्रता के बिल्कुल उलट बताया गया था जिसे पौलुस गलातिया में अपने भाइयों को पाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था, जिनके विश्वास को यहूदी मत की शिक्षा देने वालों ने डगमगा दिया था। जूए की अवधारणा चाहे आम तौर पर गुलामी की अनचाही स्थिति से जुड़ी होती है पर वचन से जुड़ने में ऐसा नहीं होता। उदाहरण के लिए यहोवा की बाट जोहने और अपने उद्धार की तलाश के संदर्भ में यिर्मयाह ने लिखा:

> पुरुष के लिये जवानी में जूआ उठाना भला है। वह यह जानकर अकेला चुपचाप रहे, कि परमेश्वर ही ने उस पर यह बोझ डाला है (विलापगीत 3:27, 28)।

इसके तुरन्त बाद चाहे कष्ट का बोझ था पर संदर्भ संकेत देता है कि कष्ट भी आशीष हो सकता है।[1] मत्ती 11:28-30 में प्रभु के चेले बनने के निमन्त्रण में नकारात्मकता स्पष्ट दिखाई नहीं देती। उसने कहा:

> हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।

जिस जूए को उठाने के लिए यीशु लोगों को बुलाता है वह इसे स्वीकार करने वालों को विश्राम और शांति देता है। एक और जगह पर यीशु ने अपने मानने वालों को खुली चुनौती दी कि उसके पीछे चलने में दुख उठाना और सताव सहना आवश्यक होना था।

जूए की उपमा किसी रब्बी के निर्देश से बंधे होने के लिए यहूदी दायरों में आम इस्तेमाल की जाती थी। यीशु की भाषा और उसकी शिक्षा रब्बियों से उसके ढंग के अलग होने के कारण कठोर रही होगी। उनका ढंग कठिन और भारी था। उसका ढंग आसान और हल्का था। 5:1 में पौलुस इसी बात को कह रहा था। *सुसमाचार में स्वतन्त्रता मिलती है परन्तु व्यवस्था के साथ दासत्व का जूआ मिला है।* यह सुसमाचार का विरोधाभास ही है कि अपने आपको परमेश्वर की इच्छा और यीशु के प्रभु होने से बांधना ही सम्पूर्ण स्वतन्त्रता पाने का एकमात्र ढंग है। यह बात मत्ती 11:28-30 में मसीह द्वारा बताई गई सच्चाई से मेल खाती थी।

सीराच (प्रवक्ता ग्रंथ) की अप्रामाणिक पुस्तक मत्ती 11:28-30 में यीशु की बात की अवधारणा से बहुत मेल खाती है जिसमें बुद्धि (एक स्त्री के प्रतीक के रूप में) अपने जूए को मानने और उससे सीखने के लिए आने के लिए ऐसा ही एक निमन्त्रण देती है:

> तुम, जो अशिक्षित हो,
> मेरे पास आओ और शिक्षा के घर में एकत्रित हो जाओ।

देर क्यों करते हो, जब कि तुम्हारी आत्माएं उसके लिए तरस रही हैं?
मैं मुंह खोलकर बोलती हूं:
मुफ्त में प्रज्ञा प्राप्त करो।
तुम जूए के नीचे गर्दन झुकाओ।
तुम्हारा हृदय शिक्षा ग्रहण करे;
क्योंकि वह तुम्हारे लिए प्रस्तुत है।[2]

आम तौर पर यह कहा जाता है कि मत्ती 11:28-30 में यीशु का निमन्त्रण उसके घर में आकर उसे गुरु मानने के लिए रब्बियों के निमन्त्रण के सांचे में ढाला गया है। यीशु ने अपने चेलों को चाहे शास्त्रियों और फरीसियों की व्यर्थ लालसा और घमण्ड की नकल करते हुए ऐसे सम्मानजनक पद स्वीकार न करने का आदेश दिया (मत्ती 23:1-8), पर यीशु को स्वयं आम तौर पर ''रब्बी'' कहकर बुलाया जाता था। उसे पतरस द्वारा (मरकुस 9:5; 11:21), अन्द्रियास और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के एक और चेले (यूहन्ना 1:38, 40), नतनएल (यूहन्ना 1:49), नीकुदेमुस (यूहन्ना 3:1, 2), और उसके चेलों द्वारा (यूहन्ना 4:31; 9:2; 11:8) आम तौर पर ''हे गुरु'' या ''हे रब्बी'' कहकर ही बुलाया जाता था। यहूदियों की भीड़ भी जो उसके करीबी चेलों में से नहीं थी उसे इसी प्रकार से बुलाती थी (यूहन्ना 6:24, 25)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को भी उसके चेले ''रब्बी'' कहकर बुलाते थे (यूहन्ना 3:25, 26)। यीशु के सम्बोधन के इस रूप को स्वीकार करने में कोई असंगति नहीं है क्योंकि उसे उसके मिशन के लिए परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था (यूहन्ना 3:17)। वह सचमुच में ''गुरु'' था।

''रब्बी'' शब्द एक इब्रानी शब्द से निकला है[3] जिसका सही अनुवाद ''मेरा प्रभु'' होता है। हम आसानी से समझ सकते हैं कि यीशु अपने चेलों को जिनकी राज्य के लिए अपनी महत्वाकांक्षी योजनाएं थी, केवल भाइयों के रूप में काम करवाना चाहता था (मत्ती 20:20-28; यूहन्ना 13:12-17)। यीशु को ''रब्बी'' के एक तीव्र रूप ''रब्बूनी'' कहकर भी बुलाया जाता था जिसका अर्थ अक्षरश: ''मेरा प्रभु'' या ''मेरा स्वामी'' है (मरकुस 10:51; यूहन्ना 20:16)। यूहन्ना 20:16 ''रब्बूनी'' की परिभाषा ''गुरु'' के रूप में करता है। ''रब्बी'' सामान्य इस्तेमाल में था परन्तु यह उस सम्बोधन का रूप था जिसे लोग अपने आपको दूसरों से अलग, ऊंचा मानने के प्रलोभन में पड़ते थे।

मत्ती 11:28-30 में यीशु के ''रब्बियों वाले'' निमन्त्रण के सम्बन्ध में यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि बड़े रब्बी अपने छात्रों को शिक्षा देने से बढ़कर और बहुत कुछ करते थे (शिक्षा चाहे सचमुच में महत्वपूर्ण और कठोर होती थी)। यीशु के समय के रब्बी चाहे पाठशाला आराधनालयों में या और कहीं लगाते थे परन्तु बड़े रब्बी अपने छात्रों को अपने घरों में भी बुला लिया करते थे। इस प्रकार से छात्रों को रब्बियों की शिक्षा को सुनने के अलावा उस घर के प्रमुख के रूप में काम करने वाले के जीवन के ढंग को देखने की अनुमति मिल जाती थी। रब्बी लोग चेले को सिखाने की प्रक्रिया में अनुकरणीय व्यक्ति की सामर्थ के महत्व को बख़ूबी समझते थे। यह हो सकता है कि बुजुर्ग रब्बान गमलीएल के कदमों में ऐसी शिक्षा पाने वाला तरसुस का युवा शाऊल था (प्रेरितों 22:3)। (''रबान'' ''हमारा गुरु'' के लिए ''रब्बी'' से भी ऊंचा रुतबा के लिए अरामी शब्द था।) यीशु अपने चेलों के साथ इकट्ठा होने पर ऐसे ही सुपरिचित ढंग में करता

था, जैसे प्रभु भोज की स्थापना करने के समय। बेशक वह ऐसी औपचारिक रब्बियों वाली शिक्षा नहीं देता था (यूहन्ना 7:14, 15), परन्तु यह स्वाभाविक ही था कि वह सिखाने के उस ढंग में अपने आपको ढाल लेता जो उसके समय में आम था।

इन विचारों के अलावा जूए के रूपक के उद्देश्य और इरादे की भी बात होनी चाहिए। शाब्दिक अर्थ में जूआ जो लादू जानवर की गर्दन पर रखा जाता था, किसी काम को करने के लिए तैयार किए जाने के लिए था। बिना जूए के जानवर हल, गाड़ी, या कोई और चीज़ खींच नहीं सकता था। 11:28-30 में ज़ोर शास्त्रियों और फरीसियों के ''भारी बोझों'' की तुलना में यीशु के ''सहज'' जूए और ''हलके'' बोझ के अंतर पर दिया गया लगता है (मत्ती 23:1-4)। व्यवस्था के कठोर जूए के विपरीत सहज जूआ सुहावना लगता है, विशेषकर समय के विद्वानों के द्वारा जैसे इसकी व्याख्या की जाती है। वास्तविक जूआ खुरदरी सी लकड़ी में से कटा हुआ हो सकता है जिससे बैल की गर्दन रगड़ी जा सकती है या इसे चमड़े की गद्दी लगाकर सजाया जा सकता है जिससे खुर्दरापन कम हो जाए।

व्यवस्था के जूए के सम्बन्ध में कार्ल हेनरिच रैंगस्ट्रॉफ ने लिखा है कि ''आज्ञाओं का जूआ'' और ''उस पवित्र का जूआ'' ''परमेश्वर की इच्छा की अधीनता को जताता विचार'' जैसी अभिव्यक्तियां हैं। उसने कहा कि इस जूए को ''बोझ नहीं'' बल्कि ''आशीष'' माना जाता था।[4] परन्तु यह विवरण मुख्यतया रब्बियों की बातों से सम्बन्धित था। इसमें यह पता नहीं चलता कि साधारण लोग क्या मानते थे और न ही यह कि यीशु के कहने का क्या मतलब था। निश्चित रूप से यह गलातियों के संदर्भ में पौलुस द्वारा दिखाया व्यवहार नहीं था, न ही यह प्रेरितों 15:10 में पतरस का विचार था।

बेशक यीशु के जूए के रूपक का इस्तेमाल करने की तरह, सेवा, ज़िम्मेदारी, आज्ञाओं को मानने के दायित्व और उसकी इच्छा को मानने जैसी अवधारणा को निकाला नहीं जा सकता। आखिर जूए की अवधारणा में ये अपने आप ही समाई हुई हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए जिसे उस जूए का जिसके लिए उसे बुलाया जा रहा है कोई अनुभव नहीं है, विरोधाभास बना रहता है। यीशु के जूए को मानने के लिए विश्वास का कदम उठाना आवश्यक है। परन्तु यदि वह अपनी पहली हिचकिचाहट को दूर करके यह कदम उठा लेता है तो प्रभु की ''मुझ से सीखो'' की चुनौती को मान लेने पर (मत्ती 11:29) उसे पता चलेगा कि यीशु ने सच बोला है। उसका विश्वास बढ़ने पर वह सचमुच में अपने मन में विश्राम पाएगा। क्योंकि सृष्टि के सर्वशक्तिमान प्रभु के रूप में यीशु में भरोसे के जीवन ने विश्वासी के जीवन के परिणाम की (उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान के द्वारा) गारंटी दी है। इसका अर्थ यह हुआ कि इस तथ्य में भरोसा उसके मन को, मृत्यु और विनाश के सभी खतरों के बावजूद जो उसके भविष्य को डराते हुए से लगते हैं, उसे मन में शांति मिलेगी।

प्रभु के जूए को ''सहज'' बनने का काम विश्वासी की स्वेच्छा से समर्पण (रोमियों 6:17) और पवित्र आत्मा का दान बना देता है जो उसे आत्मिक जहाज पर रहने के लिए दिलेर करता है (गलातियों 5:16-18)।

मसीह में स्वतन्त्रता (5:2-15)

व्यवस्था बनाम मसीह (5:2-6)

[2]देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा। [3]फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूं कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी। [4]तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो। [5]क्योंकि आत्मा के कारण हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं। [6]मसीह यीशु में न खतना और न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है।

खतने का मुद्दा बड़ा महत्वपूर्ण था। इसका पुरानी और नई वाचाओं के साथ मसीही व्यक्ति के सम्बन्ध पर सीधा असर था। इस कारण पौलुस ने अन्यजाति मसीहियों के द्वारा इसे माने जाने का कड़ा विरोध किया।

आयत 2. प्रेरित ने दृढ़तापूर्वक कहा, **देखो, मैं पौलुस तुम से कहता हूं कि यदि खतना कराओगे, तो मसीह से तुम्हें कुछ लाभ न होगा।** पत्र में ''खतने''[5] (*peritomē*, पेरिटोम) का यह पहला उल्लेख नहीं है; 2:3 में पौलुस ने अपने अन्यजाति सहकर्मी तीतुस के सम्बन्ध में इस विषय से परिचित करवाया था।

गलातियों पर खतने को थोपे जाने को पौलुस केवल इसी लिए अनदेखा नहीं कर पाया क्योंकि यह पहले परमेश्वर और अब्राहम और उसकी संतान के बीच ''वाचा का चिह्न'' था (उत्पत्ति 17:10-13) और बाद में इसे सीनै पर्वत पर पुरानी वाचा में शामिल कर लिया गया था।[6] यहूदियों के लिए यह इतना आवश्यक था कि नये नियम में उन्हें बार-बार ''खतना किए हुए'' कहकर दोहराया गया,[7] जो उन्हें उन अन्यजातियों से जिन्हें ''खतनारहित'' कहा जाता है, अलग करता था[8] (गलातियों 2:7-9)।

पौलुस ने गलातियों को बताया कि यदि वे खतने को मान लेते तो ''मसीह में [उन्हें] कुछ लाभ न'' [होना था]। उसने समझाया कि मसीही बनने के लिए खतने को आवश्यक मानने वाला कोई भी व्यक्ति मसीह के साथ अपने सम्बन्ध और मसीह में होने के लाभों से अपने आपको वंचित कर रहा था। खतने और पुरानी वाचा के बीच सम्बन्ध इतना गहरा था कि इसे मानने वाले का मसीह से सम्बन्ध अपने आप टूट जाता था। यह शिक्षा इस बात पर ज़ोर देती है कि दोनों वाचाओं को आपस में मिलाया नहीं जा सकता। व्यवस्था (या अपनी धार्मिकता कमाने का नियम) और यीशु में अनुग्रह के सुसमाचार के बीच में से एक को चुनना आवश्यक है।

आयत 3. पौलुस गलत समझे जाने की किसी भी सम्भावना को निकाल देना चाहता था, इस कारण उसने स्वयं ज़ोर देकर कहा: **फिर भी मैं हर एक खतना करानेवाले को जताए देता हूं कि उसे सारी व्यवस्था माननी पड़ेगी।** ऐसा ही दोहराव 1:9 में मिलता है। दोनों मामलों में दोहराव इस बात का संकेत है कि पौलुस की घोषणा किसी छोटे मुद्दे पर नहीं थी।

यीशु ने कहा, ''क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी

टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा'' (मत्ती 5:18)। पुराने नियम का धर्मशास्त्र मसीह की गवाही देता था (यूहन्ना 5:39)। यीशु ने उन्हें जो उसे मानने में आनाकानी कर रहे थे पर मूसा को मानने पर अड़े हुए थे, चेतावनी दी, ''यह न समझो, कि मैं पिता के सामने तुम पर दोष लगाऊंगा; तुम पर दोष लगानेवाला तो मूसा है, जिस पर तुम ने भरोसा रखा है। क्योंकि यदि तुम मूसा का विश्वास करते, तो मेरा भी विश्वास करते, इसलिये कि उसने मेरे विषय में लिखा है'' (यूहन्ना 5:45, 46)।

अपनी सारी गवाही, शिक्षा, पेशिनगोई, सांत्वना देने वाली, चेतावनी, शर्त और दोष लगाने वाली सामर्थ के साथ व्यवस्था आज भी हमारे लिए पुराने नियम के हवाले और व्याख्या को समझाने का काम करती है। परन्तु परमेश्वर की महिमा हो कि मसीही व्यक्ति जो आत्मा में रहता है अब व्यवस्था के अधीन नहीं है (रोमियों 8:1-4)। पुराने ''शिक्षक'' (*paidagōgos*, पेडोगोस) द्वारा हमें सिखाए गए पाठ आज भी याद रखे जाने आवश्यक है; ''परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे'' (गलातियों 3:25)। पौलुस ने उन्हें जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते थे व्यवस्था की सुनने को कहा था कि वह क्या कहती है (4:21)। उसने उपमा के द्वारा (4:22-30), यह निष्कर्ष निकालते हुए कि मसीही व्यक्ति व्यवस्था की संतान नहीं है (4:31) व्यवस्था की भूमिका को संक्षिप्त किया था। यहां प्रेरित ने इस नियम को लागू किया *कि यदि कोई विश्वासी उद्धार के लिए शर्त के रूप में खतने को मानकर व्यवस्था की संतान की तरह काम करने की ज़िद करे तो वह उस उद्धार को जो विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उसे मानने वाले जिसे मसीह ने विश्वास के द्वारा सब लोगों के लिए उपलब्ध किया था, खो देना था।*

पुराना नियम भी नई वाचा के आने की गवाही देता था। सबसे प्रसिद्ध वचन शायद यिर्मयाह 31:31-34 है जहां परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि ''नई वाचा'' उस वाचा के समान न होगी जो मैंने ''उनके पुरखाओं से ... बांधी थी। ... क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।'' पौलुस ने परमेश्वर के उसे और अन्य प्रेरितों को ''नई वाचा के सेवक होने के योग्य'' होने का विशेष दावा किया ''शब्द के सेवक [या मिनिस्टर] नहीं, वरन आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है'' (2 कुरिन्थियों 3:6)। मूसा को पुरानी वाचा का सेवक या मध्यस्थ माना जाता था जो न तो क्षमा और न पवित्र आत्मा दे सकती थी। इसके उलट यह ''मृत्यु'' और ''दोषी ठहराने वाली वाचा'' थी (2 कुरिन्थियों 3:7-9)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लिखा, ''यह अनहोना है कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)।

नई वाचा के आने की यिर्मयाह की भविष्यवाणी को उद्धृत करने के बाद, इब्रानियों के लेखक ने कहा कि परमेश्वर ने ''प्रथम वाचा को पुरानी ठहरा दिया'' और जोड़ा कि ''जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती हैं उसका मिट जाना अनिवार्य है'' (इब्रानियों 8:13)। पुरानी वाचा ने अपने लोगों अर्थात आत्मिक इस्राएल के लिए परमेश्वर की इच्छा के द्वारा हटाए जाकर अपने ही हटा दिए जाने की गवाही दी। ये लोग यीशु के लहू की खूबी के द्वारा क्षमा और अनुग्रह की इस नई वाचा की संतान को छोड़ और कुछ नहीं हैं (इब्रानियों 10:9, 10)। मसीही व्यक्ति के लिए महत्व आत्मिक खतने का यानी हृदय के खतने का है (रोमियों 2:28, 29), जो बपतिस्मा लेने के समय होता है (कुलुस्सियों 2:9-13)। विश्वास के इस अधीन होने के कार्य में मनपरिवर्तन

करने वाला व्यक्ति उस अनुग्रह को स्वीकार करता है जिसे परमेश्वर पापों की क्षमा और आत्मा के वास के दान के द्वारा देता है (प्रेरितों 2:38; 22:16)।

आयत 4. प्रेरित ने गलातियों को **जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते** थे, गम्भीर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी। पहले तो उसने कहा कि तुम **मसीह से अलग** हो **गए हो**। अनुवादकों को यह समझने में कठिनाई आती है कि क्रिया शब्द (*katargeō*) का बेहतर अनुवाद क्या होगा। NASB ने जहां ''काट दिया'' शब्द अनुवाद किया है वहीं अन्य अनुवादों में ''अपने आपको काट डालो'' (NRSV), ''दूर कर दिए'' (NIV) और ''हटाए गए'' (NKJV) शामिल है। ये अनुवाद शब्द का बुनियादी अर्थ देते हैं पर यह इसके शाब्दिक अर्थों और विभिन्न संदर्भों में इसके इस्तेमाल के तरीके पर विचार करने के लिए लाभदायक है। वाल्टर बाउर के लैक्सिकन में ये परिभाषाएं दी गई हैं:

1. किसी चीज़ को निष्फल करवाना, काम में लाना, खत्म करवाना, जैसे वृक्ष भूमि के संसाधनों को ''काम में लाता'' है (लूका 13:7);
2. किसी चीज़ से इसकी शक्ति या प्रभाव खत्म करवाना, बेकार करना, जैसे व्यवस्था अब्राहम से की गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा को ''टाल'' नहीं सकी (गलातियों 3:17);
3. किसी का अस्तित्व मिटाना, खत्म करना, मिटा देना, रद्द करना, जैसे पौलुस ने बड़ा होने पर अपनी बचपन की आदतें ''छोड़ दीं'' (1 कुरिन्थियों 13:11);
4. किसी को किसी दायित्व से छुड़ाना (उसका अब उससे कोई सम्बन्ध नहीं), या (कर्मवाच्य में) मुक्त करवाने के लिए छुड़वाना। पति की मृत्यु होने पर महिला उसके साथ विवाह के बंधन से छूट जाती है। मसीही लोग व्यवस्था से ''छूट गए'' हैं (रोमियों 7:2, 6)।[9]

किसी दूसरे के साथ सम्बन्ध ''छूटने'' के विचार के सम्बन्ध में पौलुस ने कहा, ''मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया कि परमेश्वर के लिए जीऊं'' (2:19)। इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस मसीह की ओर मुड़ने पर खत्म हो गया बल्कि यह है कि वह व्यवस्था के उसे बांधने, गुलाम बनाने वाले सम्बन्ध से जिसने उसके व्यवहार और कार्यों को बांध रखा, मुक्त हुआ था। बाइबल में ''मृत्यु'' का अर्थ अस्तित्व मिट जाना नहीं बल्कि इसका अर्थ सम्बन्ध का अंत है।

यूनानी में ''अलग हुए'' क्रिया का पूर्णकाल अलगाव की स्थिति का अर्थ देता है, एक ऐसी अवस्था जिसमें कोई पूरी तरह से खो जाता है। NCV में चाहे वचन का अक्षरश: अनुवाद नहीं है परन्तु उसमें इन शब्दों के संदेश का सार है: ''यदि तुम व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के साथ सही होने की कोशिश करते हो तो मसीह के साथ तुम्हारा जीवन खत्म है।''

दूसरे परिणाम के सम्बन्ध में पौलुस ने घोषणा की कि तुम **अनुग्रह से गिर गए हो**। ''गिर गए'' यूनानी क्रिया शब्द (*ekpiptō*, एक्पिप्टो) से लिया गया है जिसका अक्षरश: अर्थ किसी भी जगह से ''गिर'' जाना है।[10] इसका इस्तेमाल प्रतीकात्मक अर्थ में अच्छी अवस्था से बुरी अवस्था में यानी ''खोने'' में बदलने के लिए किया जाता है।[11] प्रेरित ने कहा कि हर कोई जो व्यवस्था के द्वारा अपने आपको धर्मी ठहराने की कोशिश करता है वह ''अनुग्रह से गिरा हुआ''

होने के कारण खोए होने की अवस्था में है। आखिर उद्धार तो अनुग्रह के द्वारा ही सम्भव है।[12]

जो कोई ''एक बार उद्धार मिल गया तो सदा के लिए मिल गया'' (या ''विश्वासत्याग यानी बेदीनी की असम्भावना'') की झूठी शिक्षा का समर्थन करता है वह तर्क दे सकता है कि पहली बात तो ऐसे लोगों का कभी उद्धार हुआ ही नहीं। परन्तु यदि कोई कभी अनुग्रह में नहीं था तो वह अनुग्रह से गिर ही नहीं सकता। यह भाषा इस बात का संकेत देती है कि कोई उद्धार पा सकता है और बाद में अपने उद्धार को खो सकता है।

असल में नये नियम में मसीही लोगों को विश्वासत्याग के खतरे की कई चेतावनियां दी गई हैं। पतरस ने अपने पाठकों को समझाया कि ''तुम चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फंसकर अपनी स्थिरता को कहीं हाथ से खो [*ekpiptō*, एक्पिप्टो] न दो'' (2 पतरस 3:17)। यहूदा ने उनके विषय में लिखा जो ''हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं'' और पाठकों को याद दिलाया कि ''कि प्रभु ने एक कुल को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लाने वालों को नष्ट कर दिया'' (यहूदा 4, 5)। यह एक तथ्य है कि किसी का उद्धार हुआ हो सकता है और पवित्र आत्मा का भागीदार बन जाने के बावजूद वह परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित हो सकता है जिससे उसे ''मन फिराव के लिए फिर से नया बनाना अनहोना है'' (इब्रानियों 6:4-6)।

आयत 5. व्यवस्था, खतने, स्वतन्त्रता और दासत्व की चर्चा करते करते पौलुस ने पवित्र आत्मा के विषय को उठा लिया। पिछले दो अध्यायों में हमें पवित्र आत्मा के कई हवाले मिलते हैं।[13] उसने कहा, **क्योंकि आत्मा के कारण हम विश्वास से, आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं।** यूनानी धर्मशास्त्र में सर्वनाम शब्द ''हम'' (*hēmeis*, हेमीस) सुस्पष्ट है। पौलुस अपने आपको तथा अन्य विश्वासयोग्य मसीहियों को उन विश्वासियों से अलग कर रहा था जो व्यवस्था को मानकर धार्मिकता को पाने की उम्मीद कर रहे थे। वह कुछ यूं कह रहा था: विश्वासी चेलों के रूप में क्योंकि *हम* उस धार्मिकता की राह उत्सुक्ता से देख रहे हैं जिसकी हमें आत्मा के द्वारा विश्वास के आधार पर पाने की उम्मीद है न कि व्यवस्था के आधार पर।''

वाक्य में पहले इन पर ज़ोर देने के लिए ''आत्मा के कारण'' और ''विश्वास से'' वाक्यांश मिलते हैं। यह इस बात का सुझाव देता है कि गलातियों के नाम पत्र[14] में दोनों अभिव्यक्तियां अपने विपरीत शब्दों के बिल्कुल अलग है। ''आत्मा के कारण'' और ''विश्वास से'' ''शरीर के अनुसार'' (जो शारीरिक प्रयास से पाया जा सकता है) और ''व्यवस्था के कामों के अनुसार''[15] में भिन्नता है।

''आत्मा के कारण'' वाक्यांश से पौलुस का क्या अर्थ था? क्या वह आत्मा के दान के रूप में दी गई धार्मिकता की बात कर रहा था? क्या वह आत्मा के सामर्थ के वास यानी मसीही जीवन जीने के लिए आत्मिक सामर्थ का संकेत दे रहा था? इस वाक्यांश में यह दोनों विचार हो सकते हैं। बल्कि इससे भी बढ़कर हो सकता है कि पौलुस केवल मानवीय प्राप्ति के आधार पर किसी भी प्रकार की धार्मिकता को खारिज कर रहा था। आखिर किसी और जगह उसने कहा है कि ''परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है'' (फिलिप्पयों 2:13)। क्योंकि ''धार्मिकता'' ''पवित्र किया जाना'' और ''छुटकारा'' मसीह के द्वारा परमेश्वर की ओर से है, इस कारण मसीही व्यक्ति को चाहिए

कि अपने आप में नहीं बल्कि ''प्रभु में घमण्ड करे'' (1 कुरिन्थियों 1:30, 31; NKJV)।

आयत 5 का अगला भाग कहता है कि विश्वासी मसीही ''आशा की बाट जोहते हैं।'' यूनानी क्रिया शब्द (*apekdechomai*, अपेक्डेखोमे) का अर्थ है ''उत्सुक्ता से प्रतीक्षा करना'' (NIV; REB)। NCV में कहा गया है कि ''हम इस आशा की प्रतीक्षा उत्सुक्ता से करते हैं।'' पौलुस ने जब ''आशा'' कहा तो उसके कहने का अर्थ आत्मगत अर्थ में यानी हमारी भावना को जगाने वाली हमारे मनों के भीतर आशा नहीं थी। इसके बजाय आशा का उसका अभिप्राय उद्देश्य से बाहरी चीज़ के अर्थ में था जिसकी उम्मीद की जाती है। वह हमारी आशा की चीज़ की बात कर रहा था, जिसे ''धार्मिकता'' कहा गया है यानी धार्मिकता साफ़-साफ़ दिखाई गई है।

आशा के आत्मगत अर्थ में हमें इसकी बाट जोहने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अब हमें आशा मिली हुई है। हम अब भी थोपी गई धार्मिकता का दावा कर सकते हैं। इसे हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में विश्वास के द्वारा स्वीकार करते हैं। रोमियों को पौलुस ने लिखा:

> क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है (रोमियों 8:29, 30)।

स्पष्टतया हमें अभी वह महिमा पाना दिखाई नहीं दे सकता; परन्तु हमारे अनादि परमेश्वर के मन में पहले से ही वास्तविकता है। यदि हम उस में भरोसा रखते हैं तो चाहे हम अपनी नंगी आंखों से इसे देख नहीं सकते पर फिर भी यह अंतिम सच्चाई है जिसकी हम ''विश्वास से'' बाट जोहते हैं। हमारी भविष्य की महिमा उतनी ही सच्ची है जितनी हमारी वर्तमान धार्मिकता की परमेश्वर की कही गई सच्चाई।

आयत 6. पौलुस ने इस आयत का आरम्भ **मसीह यीशु में** वाक्यांश के साथ किया। गलातियों के संदर्भ और पौलुस के अन्य पत्रों में ''मसीह में'' का अर्थ ''मसीह के शासन के अधीन'' था। व्यवस्था का स्थान विश्वास के द्वारा अनुग्रह के सुसमाचार ने ले लिया है जिस कारण पहली वाचा के सम्बन्धित भिन्नताएं खत्म हो गई है। परमेश्वर के सामने जातीयता और आर्थिक स्थिति में अंतर का कोई महत्व नहीं है (3:23-29)। इफिसियों 1:3-14 में ''मसीह में,'' ''उसमें,'' और ''प्रिय में'' वाक्यांश बार बार आते हैं। 1:3 कहता है कि परमेश्वर ने ''हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी'' और इफिसियों 1:10 कहता है कि परमेश्वर ने ''जो कुछ स्वर्ग में और जो कुछ पृथ्वी पर है सब कुछ *मसीह में*'' इकट्ठा कर दिया है। पौलुस के कहने का अर्थ स्पष्ट है। सब आत्मिक आशिषें ''मसीह में'' यानी उसकी देह में पाई जाती हैं, जो कि उसकी कलीसिया है (इफिसियों 1:22, 23)।

पौलुस ने समझाया कि ''मसीह यीशु में'' **न खतना और न खतना रहित कुछ काम का है।** ''कुछ काम का है'' का अनुवाद (*ischuō*, इस्खुओ) से हुआ है जो तकनीकी रूप में एक कानूनी शब्द था जिसका अर्थ है ''मान्य होना'' या ''प्रभावी होना।''[16] NIV में इस शब्द का अनुवाद है ''कोई महत्व है।'' पौलुस कह रहा था कि मसीह में जीवन के आत्मिक जहाज के सम्बन्ध में गलातियों के लिए ''खतना'' और ''खतना रहित'' किसी काम के नहीं थे।

''खतना'' और ''खतना रहित'' से पौलुस का अभिप्राय आम तौर पर ऑप्रेशन किए जाने से बढ़कर होता था। दोनों ही शब्दों का इस्तेमाल आम तौर पर लोगों के दो वर्गों के लिए जिसकी पहचान इस संस्कार को मानने या न मानने के द्वारा होती थी यानी यहूदियों और अन्यजातियों के लिए होता था। परन्तु इस संदर्भ में वह संस्कार की ही बात पर विचार कर रहा था। पौलुस इस मुद्दे को अनदेखा नहीं कर सकता था। उसने तीतुस (जो एक अन्यजाति था) के मामले में इस रीति को मानने से इनकार कर दिया था, ''इसलिए कि सुसमाचार की सच्चाई [भाइयों] में बनी रहे'' (2:5)। मसीही व्यक्ति के लिए खतना अपने आप में कोई महत्व नहीं रखता। जब पौलुस ने तीमुथियुस को (जो एक यहूदी था) अपनी संगति में लाया था तो उसे यह बात मानने योग्य लगी कि उसका खतना किया जाए, परन्तु केवल उन यहूदियों द्वारा स्वीकारे जाने के लिए जिन्हें वह मसीह के लिए जीतने की कोशिश कर रहा था (प्रेरितों 16:1-3)। इस कार्य में प्रेमपूर्वक विचार सुसमाचार का सार था। उसके बिल्कुल उलट यहूदी मत की शिक्षा देने वाले थे जो सिखा रहे थे कि खतने को उद्धार के लिए आवश्यक शर्त माना जाए। यही कारण था कि पौलुस ने गलातियों के नाम पत्र को लिखा। व्यवस्था के अधीन बेशक खतना आवश्यक था अब उद्धार की शर्त के रूप में इसे सिखाया नहीं जा सकता था (5:1-4)। यह पिछली व्यवस्था का हिस्सा था। सुसमाचार युग में यह मसीह में आत्मिक जीवन के लिए बाहरी था।[17]

खतने के बजाय परमेश्वर मसीही लोगों से **केवल विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है**। ''विश्वास'' (*pistis*) शब्द के ढेरों अर्थ हैं जो इस बात पर निर्भर करता है कि उसका इस्तेमाल किस संदर्भ में किया गया है।

यह सही या तथ्यात्मक के रूप में किसी चीज़ की बौधिक स्वीकृति हो सकती है। ऐसी स्वीकृति की वस्तु चाहे प्रिय (मसीही के आशापूर्ण विश्वास; इब्रानियों 11:1) या अप्रिय (जैसे कांपने वाले दुष्टात्माओं का डरा हुआ विश्वास; याकूब 2:19)। दोनों ही उदाहरणों का भीतरी यकीन का वर्णन करते हैं।

''विश्वास'' ऐसे विश्वास को कहा जा सकता है (या वैकल्पिक रूप में विश्वसनीयता) जैसे कि (*pistis Christou*, पिस्टिस ख्रिस्टो) जैसी यूनानी अभिव्यक्तियों में मिलती है। संदर्भ पर निर्भर है, इस वाक्यांश का अर्थ ''मसीह की विश्वासयोग्यता'' या विश्वासी के ''मसीह में विश्वास'' किसी के लिए भी हो सकता है (देखें 2:16; 3:22; रोमियों 3:26)।

इस शब्द का अर्थ कई बार ''उस विश्वास'' के लिए यानी उसके लिए होता है जो मसीही लोगों का विश्वास है। इस उपयोग में ''विश्वास'' उस सब का प्रकाशन है जो सुसमाचार के उद्धार दिलाने वाले संदेश में पाया जाता है। इसका अर्थ स्वयं सुसमाचार है, जैसा कि यहूदा की ताड़ना में है कि ''उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3)।[18]

5:6 में ''विश्वास'' विश्वासी के दृढ़ निश्चय या यकीन का वही भीतरी गुण है। चाहे इसमें आशा का तत्व शामिल है (जैसे इब्रानियों 11:1 में) पर जब तक यह व्यवहार में नहीं आता तब तक यह वर्तमानयुग या आने वाले संसार के लिए किसी काम का नहीं होगा। यह विश्वास ''प्रेम के द्वारा अपने आप को दिखाते हुए'' (NIV) ''कार्यकारी'' होना आवश्यक है। ''प्रभाव डालता है'' यूनानी शब्द (*energeō*, इनर्जियो) से लिया गया है जिसका सम्बन्ध केवल इस बात से

नहीं कि यह कहां से निकला बल्कि ''ऊर्जा'' (*energy*, इनर्जी) और ''ऊर्जा प्रदान करना'' (*energize*, इनर्जाइज़) के अंग्रेजी शब्दों की अवधारणा से भी जुड़ा है। भाषा याकूब की बात को याद दिलाती है कि ''विश्वास कर्म बिना मरा हुआ है'' (याकूब 2:26)। उसने चेतावनी दी, ''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने ही वाले नहीं जो अपने आपको धोखा देते हैं'' (याकूब 1:22)। 2 पतरस 1:5-11 वाले गुणों को आत्मिक उन्नति और विकास के सबसे बुनियादी से लेकर सबसे परिपक्व चरणों में सिलसिलेवार ढंग से दिखाया गया है।

मसीही व्यक्ति का विश्वास निरन्तर सरगर्म होना आवश्यक है। परमेश्वर के सामने जिस बात का महत्व है वह ''विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है'' है। यीशु इस तथ्य पर बिल्कुल स्पष्ट था कि प्रेम और उसकी आज्ञा मानने को अलग नहीं किया जा सकता (यूहन्ना 14:15-24; 15:10-17)। भलाई करने के कई इरादे इसके करने वाले के लिए इसके महत्व को नकारा बना सकते हैं। प्रतिस्पर्धक सोच, अपनी बड़ाई करवाने की इच्छा, अपने आपको सही ठहराने का प्रयास, या किसी दूसरे को परेशान करने की इच्छा (फिलिप्पियों 1:15-18) इसके करने वाले के लिए इसकी किसी भी भलाई को बेकार कर दे। इस सच्चाई को पौलुस द्वारा साफ़ साफ़ समझाया गया था, जिसने घोषणा की, ''और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं'' (1 कुरिन्थियों 13:3)।

''विश्वास, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव डालता है'' वाक्यांश के कहने का अर्थ था कि वह विश्वास जो व्यक्ति को प्रेमपूर्वक कार्य करने के लिए प्रेरित करता या शक्ति देता है। ऐसे कार्य विश्वास को दिखाते हैं जिस कारण यह स्पष्ट है कि प्रेरित ऐसे ही प्रेम की बात कर रहा था जिसे (*agapē*, अगापे) के रूप में जाना जाता है। यह वह प्रेरक शक्ति है, जो मसीही व्यक्ति के विश्वास से निकलती है और भक्तिपूर्ण जीवन का कारण बनती है। हम ने प्रेम करना परमेश्वर से सीखा है जिसने गुलगुता के क्रूस पर प्रेम के सर्वोच्च प्रदर्शन के द्वारा मनुष्यजाति के लिए अपने प्रेम को दिखाकर हमारे मनों को छू लिया है। उसने हमें प्रेम करना सिखाया और प्रेम करने के योग्य बनाया है। यूहन्ना ने लिखा है, ''हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए'' (1 यूहन्ना 3:16)। उसने यह शब्द भी लिखे हैं: ''प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए अपने पुत्र को भेजा'' (1 यूहन्ना 4:10); ''हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19)। यह सभी वचनों में संज्ञा शब्द *agapē* (अगापे) और। या उसके सदृश्य क्रिया शब्द (*agapaō*, अगापाओ) का इस्तेमाल हुआ है। इन दोनों शब्दों की बुनियादी अवधारणा उस व्यक्ति की ओर से जिसकी ओर इसे निर्देशित किया जाता है, उपकारी कार्य करना है।

गलातियों की गलती (5:7-9)

[7]तुम तो भली-भांति दौड़ रहे थे। अब किस ने तुम्हें रोक दिया कि सत्य को न मानो। [8]ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं। [9]थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है।

यहूदी मसीहियों को पुरानी व्यवस्था के बोझ से छुड़ाया गया था जिस कारण पौलुस ने अपने पाठकों को इसके न बंधने का आग्रह किया।

आयत 7. तुम तो भली भांति दौड़ रहे थे का कथन गलातियों की आत्मिक दौड़ के आरम्भ पर पौलुस की व्याख्या है (देखें 4:9, 15)। वह आम तौर पर वफ़ादारी और मज़बूती के प्रति मसीही लोगों को प्रेरित करने के लिए खेल कूद की उपमाओं का इस्तेमाल करता था। वह यूनानी संस्कृति की पहचान खेलों की प्रतिस्पर्धाओं के लिए उनके लगाव से भली भांति परिचित था। चार बड़ी अखिल यूनानी खेलें ओलम्पिया, डैल्फी, इस्थिमिया और नेमिया में लगातार करवाई जाती थीं। इसके अलावा एथेंस में प्रसिद्ध वार्षिक अखिल एथेंस और यूनान के आस पास के अन्य स्थानीय नगरों के यूनानी संस्कृति का मुख्य भाग थे।

ऐसी घटनाओं से पौलुस को आर्थिक रूप में अपनी सहायता जुटाने के अवसर मिल जाते होंगे। दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान कुरिन्थुस में रहने के समय उसे चमड़े का काम करने वाले का काम मिल गया था,[19] जो सम्भवतया तम्बू बनाने का काम था (*skēnopoios;* स्केनोपोइओस प्रेरितों 18:1-3)। उसका सामान उन लोगों में बेचा जाता होगा जो निकट की इस्थिमिया खेलों में भाग लेने या उन्हें देखने के लिए आते थे, जिनकी प्रधानगी कुरिन्थुस के पास थी। वहां पर अपना काम करते हुए जो सम्भवतया बाजार में होगा, पौलुस को उन प्रतिस्पर्धाओं के बारे में सुनने को मिला होगा। यह भी हो सकता है कि उसने खुद उन में भाग लिया हो। जो भी हो उसने खेलों से उपमाएं लेकर उनका इस्तेमाल किया, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 9:24-27 में मिलती हैं: ''दौड़ में दौड़ते,'' ''ईनाम,'' ''पहलवान,'' ''[विजय],'' ''मुक्कों से लड़ता,'' ''अपनी देह को मारता-कूटता,'' ''निकम्मा ठहरूं।''[20]

पत्रियों में पौलुस ने ''दौड़ता'' (*trechō,* ट्रेखो) शब्द का इस्तेमाल दस बार लाक्षणिक रूप में किया जिनमें से नौ बार मसीही व्यक्ति के खेलकूद की प्रतिस्पर्धा में भाग लेने वाले के रूप में दिखाया गया।[21] इस पत्र में यह शब्द पहले भी मिलता है जहां पौलुस यरूशलेम में अपने दौरे के सम्बन्ध में अपना संक्षिप्त आत्मकथा चित्रण दे रहा था। वहां उसने कलीसिया के कुछ अगुओं को वह सुसमाचार सौंपा था जिसका प्रचार उसने अन्यजातियों में किया था। उसने लिखा, ''उसको मैं ने उन्हें बता दिया, पर एकान्त में उनको जो बड़े समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो कि मेरी इस समय की या पिछली दौड़-धूप व्यर्थ ठहरे'' (2:2)।

5:7 में ''भली-भांति दौड़ रहे थे'' गलातिया की कलीसियाओं की हाल की अवस्था की बात है। पौलुस इस अवस्था को उनकी वर्तमान अवस्था से गलातिया के लोगों के अपनी वर्तमान अवस्था में ही बने रहने पर उसके विनाशकारी परिणामों से अंतर कर रहा था, उन्होंने ''मसीह से अलग'' हो जाना था (5:4)।

पौलुस ने गलातियों से पूछा, **अब किस ने तुम्हें रोक दिया कि सत्य को न मानो?** क्रियाकालों पर विचार करने पर इस प्रश्न का और अक्षरश: अनुवाद होगा कि ''तुम्हें सच्चाई को मानते रहने से किसने रोका है?'' NIV में खेलों में धावक की उपमा के सम्बन्ध को बनाए रखा गया है। क्रिया शब्द ''रोक'' (*enkoptō,* इनकोप्टो) के आरम्भ के विषय के अर्थ को दिखाते हुए इस प्रश्न का अनुवाद ''तुम्हें सच्चाई को मानने से रोकने के लिए किस ने *बीच में काटा?*'' के रूप में हुआ है। यह एक धावक के दूसरे धावक के इतना निकट जाने के रूपक को दिखा

देता है जिससे उसे ठोकर लगे या वह ट्रैक से उतर जाए और दौड़ना बंद कर दे।

धावक के ट्रैक से हटने या लेन में से निकल जाने का विचार प्राचीन खेल में भी उतना ही उपयुक्त था, जितना आज के समय में है। गलातिया के लोग जो कुछ अपने साथ होने दे रहे थे उसके साथ आत्मिक प्रासंगिकता बहुत ही उपयुक्त है। पौलुस का अर्थ बिल्कुल स्पष्ट है कि जिस भी किसी ने मसीह में स्वतन्त्रता का अपना नया जीवन आरम्भ करके अपने आप मूसा की व्यवस्था की विधियों के साथ रोक लिया वह अपने आपको उस दौड़ के अयोग्य बना रहा है जिसमें मसीही लोगों को दौड़ने के लिए बुलाया गया है। इस अध्याय की आरम्भिक आयतों में इस्तेमाल हुई अन्य उपमाओं की भाषा में व्यवस्था को मानने वाला ''दासत्व के जुए'' में जुत गया और ''उसे सारी व्यवस्था माननी'' पड़नी थी (5:1, 3)। असल में उसने कहा कि वह ''मसीह से अलग'' हो गया और ''अनुग्रह से गिर'' गया था (5:4)।

इस बात का कि आज्ञा मानने की उनकी दौड़ में उन्हें ''किसने'' रोक दिया था यह केवल अलंकारिक प्रश्न है। संदर्भ के प्रकाश में पौलुस यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की बात कर रहा होगा। उन्होंने गलातिया के मसीही लोगों को उकसाया था कि सुसमाचार की आज्ञा मानना काफ़ी नहीं है यानी उन्हें परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरने के लिए मूसा की व्यवस्था की कुछ शर्तों को मानना भी आवश्यक था।

''सत्य'' (*alētheia*, अलेथिया) के सम्बन्ध में पौलुस की टिप्पणियां व्यवस्था और मसीही व्यक्ति के विश्वास और व्यवहार के आधार के रूप में सुसमाचार के बीच स्पष्ट अंतर का संकेत है। इसलिए इस संदर्भ में ''सत्य'' ''सुसमाचार'' के समानार्थी शब्द का ही काम करता है। परमेश्वर के द्वारा जो कुछ भी कहा गया है वह सत्य है यानी चाहे किसी भी युग में कहा गया हो उसका वचन सत्य ही है (यूहन्ना 17:17)। परन्तु यदि हम आज व्यवस्था की सही भूमिका और उद्देश्य को समझने की इच्छा रखते हैं तो हमारे लिए नये नियम से सलाह लेना आवश्यक है (1 तीमुथियुस 1:6-11), और यहां व्यवस्था और सुसमाचार (''सत्य'') के बीच अंतर और स्पष्ट नहीं हो सकता था।

जैसा कि सुसमाचार के चौथे विवरण के लेखक यूहन्ना ने लिखा, ''इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई मसीह के द्वारा पहुंची''[22] (यूहन्ना 1:17)। यूहन्ना ने दोनों वाचाओं की बीच स्पष्ट अंतर बनाया। इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु मसीह के साथ, कोई नई बात जो पृथ्वी पर पहले नहीं थी, संसार में आई थी। यीशु ने वह लाया था जिसे यूहन्ना ने ''अनुग्रह और सच्चाई की परिपूर्णता'' (यूहन्ना 1:14) कहा। यह सीनै पर्वत पर दी गई मूसा की व्यवस्था के बिल्कुल उलट था।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने समझाया कि व्यवस्था ''आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब'' ही था (इब्रानियों 10:1)। व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में पौलुस ने भी कहा, ''ये आनेवाली वस्तुओं की छाया ही हैं, पर वास्तविकता मसीह में पाई जाती है'' (कुलुस्सियों 2:17; NIV)। यह रूपक यह विचार देता है कि एक ठोस भौतिक देह, चमकती रोशनी में, दीवार पर या भूमि पर अपनी परछाई डालती है। परछाई जिसका कोई पुंज या वास्तविक अस्तित्व नहीं है, अभौतिक, हवाई है। परन्तु क्योंकि यह इस प्रश्न वाली वस्तु के रूप को दिखाती है इसलिए इससे उस वस्तु के आकार का कुछ संकेत मिल सकता है।

इसी प्रकार से व्यवस्था परछाई थी, बेशक कई बार अस्पष्ट रूप से, आत्मिक वास्तविकताओं के कई महत्वपूर्ण पहलू थे जिनसे मसीह का सुसमाचार बनता है। उदाहरण के लिए मन्दिर कलीसिया और मसीही व्यक्ति के सम्बन्ध में जिसमें परमेश्वर का आत्मा वास करता है, वास्तविक (असल) मन्दिर की परछाई थी (1 कुरिन्थियों 3:16, 17; 6:19, 20)। मन्दिर के पत्थर उन जीवित पत्थरों की परछाई थीं जिन से परमेश्वर का आत्मिक घर बनता है (1 पतरस 2:4, 5)। व्यवस्था के समय में पीतल का सांप जंगल में घूमने के दौरान सांपों के डसने से चंगाई देने (विश्वास के द्वारा) के लिए बनाया गया था। वह वस्तु क्रूस पर दिए गए मसीह की परछाई थी जो विश्वासी व्यक्ति को (यह भी विश्वास के द्वारा) शैतान के ज़हरीले दांतों के खतरनाक घाव से चंगाई देकर उसे अनन्त जीवन देता है (यूहन्ना 3:14, 15)। बलिदान किया जाने वाला मेमना असल (वास्तविक) ''परमेश्वर का मेमना'' (यूहन्ना 1:29) की परछाई था। सुसमाचार की इतनी मूल्यवान गवाही के बावजूद व्यवस्था मनुष्य को कभी भी उद्धार का मार्ग और पापों की पूर्ण क्षमा देने के इरादे से नहीं दी गई थी (यूहन्ना 5:39, 40)।

आयत 8. पौलुस ने कहा कि **ऐसी सीख तुम्हारे बुलानेवाले की ओर से नहीं**। यहां पर ''सीख'' वह कम विश्वास लगता है कि इन भाइयों को परमेश्वर को ग्रहण योग्य होने के लिए खतने को मानकर व्यवस्था की कुछ शर्तों को मानना आवश्यक था (प्रेरितों 15:1, 5)। आखिर यह तो नहीं था कि वह मसीह को नकार रहे थे और न ही यहूदी मत की शिक्षा देने वाले ऐसा कर रहे थे। परन्तु गलातिया के लोग यह मान गए थे कि वह नया विश्वास जिसके द्वारा उन्हें उनका उद्धार प्राप्त हुआ था, उसे यहूदियों के प्राचीन धर्म की जगह नहीं दिया गया था।

शायद गलातिया के लोग अथेने के लोगों के जैसे ही थे जो हर देवता का सम्मान करके ''सुरक्षित'' रहने का प्रयास कर रहे थे। उनके मूर्तिपूजक संदर्भ में उन्होंने असंख्य देवी देवताओं की पूजा की चीज़ें और वेदियां बना ली थीं। इस डर से कि कहीं उनमें से कोई एक छूट न जाए जो पलटकर उनसे बदला ले, उन्होंने ''अनजाने ईश्वर'' के लिए भी वेदियां बनाई हुई थीं। नगर में घूमते-घूमते पौलुस ने ऐसी ही एक वेदी देखी थी (प्रेरितों 17:23)। परन्तु उसने कहा कि ''यह सीख'' कि सुसमाचार के साथ व्यवस्था को भी मानना आवश्यक है, परमेश्वर की ओर से नहीं थी। असल में यह शैतान की ओर से थी। व्यवस्था को मानने वाले मसीही अपने आपको ''सुरक्षित'' नहीं कर रहे थे बल्कि वह अपने अनन्त भविष्य को जोखिम में डाल रहे थे (देखें गलातियों 1:6-9; 3:10; 5:2-4)।

आयत 9. प्रेरित ने चेतावनी दी, **थोड़ा सा खमीर सारे गूंधे हुए आटे को खमीर कर डालता है**। ''गूंधा हुआ आटा'' को NASB के अनुवादकों ने आधुनिक पाठकों के लिए इस कथन को और अर्थपूर्ण बनाने के लिए जिसने हो सकता है कि कभी रोटी न बनाई हो या आटे में ''खमीर'' (*zumē*, ज़ूम) न मिलाया हो जोड़ दिया। ''आटा'' (*phurama*, फुरामा) के लिए यूनानी शब्द का अर्थ वास्तव में ''पानी के साथ गूंध कर मिलाई गई कोई भी चीज़'' हो सकता है।[23] रोमियों 9:21 में चाहे इसका इस्तेमाल मिट्टी के ''लौंदे'' के लिए हुआ है परन्तु नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल अन्य सब जगहों पर गूंधे हुए आटे के लिए है।[24]

1 कुरिन्थियों 5:6 में पौलुस ने इसी उपमा का इस्तेमाल कलीसिया द्वारा यौन अनैतिकता (*porneia*, पोर्निया ''व्यभिचार'') के बदनाम मामले में बुराई को सहन करने के सम्बन्ध में

है। आज हमारे समय के बहुत से बंदरगाह नगरों की तरह कुरिन्थुस एक बड़ा ही दुष्ट नगर था। 1 कुरिन्थियों 5:1, 2, 6 से स्पष्ट है कि कलीसिया को अपने बीच में पाए जाने वाले ऐसे पाप से कोई परेशानी नहीं थी और सच तो यह था कि वे इस पर गर्व करते और शेखी मारते थे। स्पष्टतया उनका तर्क यह था कि परमेश्वर इतना अनुग्रहकारी है कि वह ऐसे पापों के होते रहने को ढांपता रहेगा। प्रेरित ने उन्हें आज्ञा दी कि पापी की खातिर और मण्डली की निष्ठा को बनाए रखने की खातिर, ''शरीर के विनाश के लिए शैतान को सौंपा जाए, ताकि उस की आत्मा प्रभु यीशु के दिन में उद्धार पाए'' (1 कुरिन्थियों 5:5)। ऐसा कहने से उसका अभिप्राय ऐसे व्यक्ति को अपनी संगति में से यह सोचकर निकाल देना था कि उसके मनफिराव से असर पड़ेगा और मण्डली यह निष्कर्ष निकालने से रुक जाएगी कि ऐसे अनैतिक व्यवहार से कोई फर्क नहीं पडेगा।

नकारात्मक या विनाशकारी प्रभाव के रूप में खमीर का रूपक बाइबल में निर्गमन 12:14-20 में आरम्भ से मिलता है।[25] सांसारिक साहित्य और यहूदी रब्बियों द्वारा इसका इस्तेमाल कहावत के रूप में किया जाता था। गलातियों 5:9 में ''खमीर'' को दूषित करने वाले प्रभाव के रूप में भी दिखाया गया है। इसमें यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की भ्रमित शिक्षा की बात है जो गलातिया की कलीसियाओं पर व्यवस्था की विधियों को थोपकर मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ रहे थे (1:7)। यह केवल उनके लिए ही खतरा नहीं था बल्कि किसी भी युग में या किसी भी जगह में कलीसियाओं के लिए खतरा है जहां यह गलत शिक्षा दी जाती है।

प्रेरित का उत्तर (5:10-12)

[10]मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा; परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा। [11]परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं, तो क्यों अब तक सताया जाता हूं? फिर तो क्रूस की ठोकर जाती रही। [12]भला होता कि जो तुम्हें डांवांडोल करते हैं, वे अपना अंग ही काट डालते।

आयत 10. गलातियों के लिए अपने अड़ियल व्यवहार को नहीं छोड़ने तक, पौलुस द्वारा बताए गए खतरनाक नतीजे के बाद, आयत 10 एक ताजगी देती है। पौलुस ने यह कहते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया कि **मैं प्रभु पर तुम्हारे विषय में भरोसा रखता हूं कि तुम्हारा कोई दूसरा विचार न होगा।** उसने अभी उनके ऊपर नहीं छोड़ा था पर फिर भी उसे भरोसा था कि वे मन फिराएंगे और अपने पहले प्रेम में लौट आएंगे। फिर भी प्रेरित का भरोसा ''प्रभु पर'' था। गलातियों की प्रसिद्ध चंचलता को ध्यान में रखते हुए इसे समझा जा सकता है।

पौलुस को मालूम था कि यह इतनी बड़ी गलती केवल उनके कारण नहीं थी बल्कि यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के कारण थी। एक ओर अपनी तीव्र चिंता और दूसरी ओर अपने प्रभु पर अपने विश्वास में बंटा हुआ होने के कारण प्रभु विश्वास की विजय हुई और जिसे उसने उन में भरोसा जताने के लिए तैयार किया। उसका मानना था कि उन्हें न केवल उसके लिए अपने पहले वाले प्रेम में लौट आने को फिर से मनाया जा सकता है बल्कि सुसमाचार के सत्य के सम्बन्ध में उनके पुराने विश्वास में भी लौटाया जा सकता है।

पौलुस का यह भरोसा जताना चाहे कूटनीतिक और मनौवैज्ञानिक रूप में समझदारी भरा था, परन्तु इसमें और भी बहुत कुछ मिलता हुआ लगता है। मनचाहा लक्ष्य पाने के लिए उसका भरोसा केवल सुविचारित ही नहीं था, बल्कि इस महान प्रेरित की खूबी दिखाता हुआ गहरी आत्मिकता और निष्ठा की झलक भी देता है। यह उस विश्वास और प्रेम की विजय थी जो उसके जीवन को प्रेरित और नियंत्रण करता रहता है।

यहां पर पौलुस ने इन प्रिय भाइयों के सामने जिन्हें उसने मसीह में जन्म दिलाया था (4:18) और उनके बीच जो इन्हें गम्भीर गलती में ले गए थे, खूंटा गाड़ दिया: **परन्तु जो तुम्हें घबरा देता है, वह कोई क्यों न हो दण्ड पाएगा।** बड़ी समझदारी से पौलुस ने यहां किसी का नाम नहीं लिया। बल्कि उसने उनके साथ जो उसके अधिकार को कमज़ोर करना और उसकी आत्मिक संतान को अपनी ओर खींच लेने के लिए उससे दूर करना चाहते हैं, बिना नाम लिए डांट दिया। उसकी नाराजगी जो कि पत्र के पहले अध्यायों में भी दिखाई देती है, को पूरी तरह समझा जा सकता है। ऐसा कौन प्रेमी पिता होगा जो अपने बच्चों को हानि पहुंचाने या उन्हें उससे दूर करने की कोशिश करने वाले को देखकर क्रोध से प्रतिक्रिया देते हुए उनकी रक्षा करने की कोशिश नहीं करेगा?

आयत 11. प्रेरित ने पूछा, **परन्तु हे भाइयो, यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं, तो क्यों अब तक सताया जाता हूं?** उसने इतना रूखा सवाल क्यों किया? उसके विरोधी हो सकता है कि झूठा आरोप लगा रहे हैं कि वह अभी भी खतने का प्रचार कर रहा था जिससे यह संकेत मिले कि उसकी शिक्षा और उसका व्यवहार आपस में मेल नहीं खाते। कैनथ एल. बोल्स के अनुसार, "'यदि' (*ei*, ई) शब्द का इस्तेमाल बार बार तब होता है जब वक्ता किसी कथन को सत्य नहीं मानता परन्तु यह मानता है कि दूसरे लोग ऐसा होने का आरोप लगाते हैं (जैसे जब यीशु ने कहा, 'यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं ...')।"[26]

"यदि मैं अब तक खतना का प्रचार करता हूं" वाक्यांश के साथ पौलुस ने यह मान लिया कि वह *पहले* खतने का प्रचार किया करता था। असल में एक फरीसी और पूर्व रब्बी छात्र के नाते (प्रेरितों 22:3; 23:6; 26:5), वह किसी भी "विधर्मी" को जो उसके पूर्वजों के परम्परागत विश्वास के प्रति वफ़ादार नहीं होता था गिरफ्तार करके मार डाले जाने की सम्मति देता था (प्रेरितों 9:1, 2; 26:10)। यदि वह इस संस्कार की आवश्यकता का प्रचार अब कर रहा होता तो अविश्वासी यहूदियों के लिए उसे सताने का कोई कारण नहीं होना था। इसके अलावा विश्वासी यहूदियों के पास उसका विरोध करने का कोई आधार नहीं होना था।[27] इसी प्रकार से यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के लिए गलातिया और कहीं और उसके काम को कमज़ोर करने की कोई आवश्यक नहीं होनी थी।

पौलुस खतने का प्रचार नहीं कर रहा था। असल में खतने का प्रचार ऐसी बात थी जो उन कलीसियाओं में जिनमें उसने प्रचार किया था वह बिल्कुल नहीं चाहता था (देखें 2:3; प्रेरितों 15:1, 2)। यही वह मसला था जिसके कारण यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों की सभा बुलाई गई थी। यदि वह सचमुच अभी तक खतने का प्रचार कर रहा होता तो अभी भी सताया क्यों जाता? इस प्रश्न का कोई तर्कसंगत उत्तर नहीं हो सकता। यदि यह पत्र यरूशलेम की सभा से थोड़ा पहले लिखा गया था तो पौलुस की मिशनरी यात्राओं में से पहली ही यात्रा इससे पहले

हुई। इस दौरान उसे और बरनबास को भयंकर सताव झेलना पड़ा था (प्रेरितों 13:50; 14:5, 6); एक बार तो उसे पथराव करके मरने के लिए छोड़ दिया गया था (प्रेरितों 14:19)। और भी सताव अभी होना था।

यदि वह अब तक खतने का प्रचार कर रहा था तो पौलुस ने कहा कि वह **फिर तो क्रूस की ठोकर जाती** [रहनी थी] **रही**।[28] NRSV में इसका अनुवाद है ''फिर तो क्रूस की ठोकर हट गई।'' प्रेरित खतने के संदेश (व्यवस्था) और क्रूस के संदेश (सुसमाचार) के आपस में बिल्कुल अलग अलग होने को दिखा रहा था। NLT में कहा गया है, ''यदि मैं मसीह के क्रूस के द्वारा उद्धार का प्रचार नहीं कर रहा होता तो किसी को ठोकर न लगती।''

''ठोकर'' की अवधारणा बाइबल में बहुत गहरी है। यह यूनानी संज्ञा शब्द *skandalon* (स्कैंडालोन) से लिया गया है और इसका मेल खाता क्रिया शब्द (*skandalizō*, स्कैंडलिज़ो) है जिससे अंग्रेजी शब्द ''scandal'' (स्कैंडल) और ''scandalize'' (स्कैंडलाइज) मिले हैं। इन शब्दों में किसी को गिराने के लिए ठोकर देने का विचार मिलता है। सप्तत्ति अनुवाद (LXX) में *skandalon* (स्कैंडालोन) का इस्तेमाल कई बार इब्रानी शब्द (*mikshol*, मिक्शोल) के अनुवाद के लिए किया गया है, जिसका अर्थ ''ठोकर दिलाने वाला पत्थर'' भी है।[29] उदाहरण के लिए लैव्यव्यवस्था 19:14 में इसका इस्तेमाल हुआ है जहां परमेश्वर ने इस्राएलियों को निर्देश दिया कि ''न अंधे के आगे ठोकर रखना'' और भजन संहिता 119:165 में जो कहता है कि ''व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को कुछ ठोकर नहीं लगती।''

5:11 में विचाराधीन ''ठोकर'' मसीह का ''क्रूस'' है। कुरिन्थियों के नाम पौलुस ने बाद में लिखा:

> क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। ... यहूदी तो चिह्न चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं। परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के निकट *ठोकर का कारण*, और अन्यजातियों के निकट मूर्खता है (1 कुरिन्थियों 1:18-23)।

इस वचन से यह संकेत मिलता है कि न तो यहूदी और न ही अन्यजाति समझ पाए कि अधिकारिक रूप में दोषी ठहराया हुआ और मार डाला गया अपराधी इस प्रकार से किसी का उद्धार कैसे कर सकता है। अधिकतर लोगों को यह विचार बेतुका लगा। क्रूस के संदेश में देह के पुनरुत्थान की बात भी थी जो विशेष तौर पर यूनानियों के लिए मूर्खता की बात थी। यह एथेंस के दार्शनिकों की प्रतिक्रिया से स्पष्ट है कि जिन्होंने अरियुपगुस के बीच में पौलुस को प्रचार करते हुए सुना था (प्रेरितों 17:32)। सम्भवतया कोई भी पढ़ा लिखा यूनानी इसी निष्कर्ष पर पहुंचता। यहूदियों को व्यवस्थाविवरण 21:23 में कही मूसा की बात पता थी जिसे पौलुस ने गलातियों 3:13 में उद्धृत किया: ''जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।''[30] कितनी बड़ी ''ठोकर'' है! आश्चर्य की बात नहीं कि यहूदियों ने क्रूस के संदेश पर ठोकर खाई।

आयत 12. कठोर भाषा का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने यहूदी मत की शिक्षा देने वालों से कहा, **भला होता कि जो तुम्हें डांवांडोल करते हैं, वे अपना अंग ही काट डालते।** ''अंग काट डालते'' के लिए यूनानी शब्द (*apokoptō*, अपोकोप्टो) है जिसका शब्दश: अर्थ है

''काट डालना'' या ''काटकर निकालना।'' इस शब्द को किस प्रकार समझा जाए?

पुराने नियम में ''काट डालना'' शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर अपने लोगों से या जीवितों की भूमि से अलग किए जाने केअर्थ में हुआ है, जो कि मृत्यु दण्ड का संकेत देता है। यह किसी नगर के या सब लोगों के विनाश को दर्शा सकता है। परन्तु LXX में इसके लिए बिल्कुल अलग ही यूनानी शब्द का इस्तेमाल हुआ है (*apollumi,* अपोलुमी या *apolluō,* अपोलुओ)। 5:12 में पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द (*apokoptō,* अपोकोप्टो) LXX अपेक्षाकृत में कम मिलता है। जब यह मिलता है तो आम तौर पर यह शरीर के किसी भाग के काटे जाने का संकेत देता है, जैसे कि अंगूठा, पैर का अंगूठा या हाथ (व्यवस्थाविवरण 25:12; न्यायियों 1:6, 7)। एक बार इसका इस्तेमाल लोगों को शर्मिंदा करने के लिए उनके वस्त्र काट डाले जाने के लिए (2 शमूएल 10:4, 5), और एक बार इसे दाख तोड़ने वाले द्वारा अपनी दाख छांटने के अर्थ में किया गया है (यशायाह 18:5)। यहां पर इस अर्थ को समझने के लिए LXX में इस शब्द का सबसे उपयुक्त हवाला व्यवस्थाविवरण 23:1 है जहां इसमें उस व्यक्ति की बात की गई है जो नपुंसक है।[31]

इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट है कि पौलुस अलंकारिक रूप में बात नहीं कर रहा था परन्तु चाहता था कि यहूदी मत की शिक्षा देने वाले सचमुच ''अपना अंग ही काट'' डालें। यह भाषा वैसी ही है जो उसने फिलिप्पियों 3:2, 3 में यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के विषय में लिखी: ''कुत्तों से चौकस रहो, उन बुरे काम करने वालों से चौकस रहो, उन *काट कूट* [झूठा खतना-NASB] *करने वालों* से चौकस रहो। क्योंकि *खतना वाले* [असली खतना] तो हम ही हैं जो परमेश्वर की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते।'' मूल में चाहे ''असली'' शब्द नहीं है परन्तु यूनानी धर्मशास्त्र के श्लेष को बड़ी खूबसूरती से पकड़ते हुए यह अनुवाद सम्मानित और निरापत है।[32] अनुवादित शब्द ''काट डालना'' (*katatomē*) जिसका अक्षरश: अर्थ ''अंग भंग करना'' (''काट डालना'') है, जबकि अनुवाद हुए शब्द ''असली खतना'' (*peritomē*) का अक्षरश: अर्थ ''खतना'' (''गिर्द घूमता'') है।

आधुनिक पाठकों के लिए चाहे यह वचन अप्रिय लगे, परन्तु भाषा स्पष्ट रूप में उनके लिए जिन्होंने खतने की अपने अन्यजाति भाइयों के शरीर का अंग-भंग ही नहीं करना था बल्कि विशुद्ध सुसमाचार को काटकर इससे भी बुरा करना था, पौलुस की गहरी नाराजगी को दिखाती है (देखें 1:6, 7)। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के कामों के गम्भीर परिणामों को देखते हुए कोई संदेह नहीं कि पौलुस ने सच्चाई के पूरे प्रभाव से अपने पाठकों को अच्छा लगने वाली नहीं बल्कि चौंकाने वाली बात बताई।

''स्वतन्त्रता के लिए बुलाए गए'' (5:13-15)

[13]हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो; परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो। [14]क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, ''तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।''

[15]पर यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो।

आयत 13. पौलुस ने लिखा, **हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो।** ''के लिए'' (*gar*) समुच्चय बोधक शब्द उसका कारण बताता है जो उसने पिछली आयत में कहा था। वहां उसने यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के लिए जो गलातियों को मसीह में उनकी नई नई मिली स्वतन्त्रता से दूर करके व्यवस्था की दासता में ले जाने का प्रयास कर रहे थे, फटकार देनी चाहिए।

''स्वतन्त्रता'' का थीम अध्याय 4 में दोनों वाचाओं के दृष्टांत से मेल खाता है। उस वचन में दासी हाज़िरा सीनै पहाड़ पर दी गई वाचा (व्यवस्था) को दर्शाती है जबकि सारा स्वर्गीय वाचा (सुसमाचार) को दर्शाती है। स्वर्गीय वाचा की बात करते हुए पौलुस ने कहा, ''पर ऊपर की यरूशलेम स्वतन्त्र है, और वह हमारी माता है'' (4:26)। उसने निष्कर्ष निकाला:

> इसलिये हे भाइयो, हम दासी के नहीं परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं। मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; अत: इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो (4:31; 5:1)।

4 और 5 पूरे अध्यायों से यह स्पष्ट है कि यह स्वतन्त्रता व्यवस्था से थी। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को गलातिया की कलीसियाओं पर या परमेश्वर के लोगों की किसी अन्य मण्डली पर व्यवस्था को थोपने का कोई अधिकार नहीं था।

पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि गलातिया के लोगों को स्वतन्त्र होने के लिए ''बुलाया गया'' था। इसलिए उन्हें स्वतन्त्र रहना चाहिए। कई बार गुलामों के पास आजाद होने का विकल्प होता है (निर्गमन 21:1-6; 1 कुरिन्थियों 7:21-23)। अगस्तुस के शासनकाल में इतने गुलामों को आज़ाद किया जा रहा था कि उसे लगा कि साम्राज्य में इस प्रवृति को रोकने के लिए कानून बनाना आवश्यक है।

प्राचीन जगत के लोगों को कई प्रकार से गुलाम बनाया जाता था: (1) युद्ध में बंदी बनाकर; (2) अगवा करके या डकैती करके; (3) खरीदकर, विशेषकर विशेष गुणों या योग्यताओं के लिए; और (4) बच्चों के छोड़ दिए जाने पर और बाद में उन्हें उठाकर घर के गुलामों के रूप में उनका पालन पोषण करने से। (5) दासियों से जन्मे बच्चे स्वत: ही अपनी माताओं के स्वामियों की सम्पत्ति बन जाते थे। वे ''घर में जन्मे'' गुलाम होते थे।[33] (6) कई लोग जिन्हें अपराध किए जाने पर अदालत सजा देती थी राज्य के गुलाम बन जाते थे और उन्हें बेगार के लिए इस्तेमाल किया जाता था। (7) लोगों को कई बार अपने ही फैसले से बहुत घटिया या खतरनाक काम करने के लिए दिए जाते थे (यहां तक कि तलवारबाजी करने के लिए) कीमत सही मिल जाने पर।[34]

गुलामों को विभिन्न ढंगों से भी मुक्त किया जा सकता था, जिन्हें *Lex Aelia Sentia* (लेक्स एलिया सेंटिया) नामक रोमी कानून की एक जटिल संस्था द्वारा बताया जाता था।[35] इनमें से अधिकतर नियम दासत्व मुक्ति की विभिन्न किस्मों से मुक्त होते थे, एक ऐसी प्रक्रिया जिसका

वर्णन थौमस वीडमैन ने इन शब्दों में किया है:

> दास की दासत्व मुक्ति [मुक्त किया जाना] तब मानी जाती है जब उसका स्वामी उस दास के सिर या उसके शरीर के किसी भाग को पकड़कर कहे ''मैं इस आदमी को मुक्त करना चाहता हूं'' और उससे अपना हाथ हटा ले [शब्दश: ''उसे अपने हाथ से निकल जाने दे''] ।[36]

प्राचीन यूनानियों के बीच दासों को मुक्त करने का एक लुभावना ढंग धार्मिक दास मुक्ति की धार्मिक संस्कार, किसी दास का काफिरों के मन्दिर में काल्पनिक रूप में बेचा जाना था। डैल्फी में अपोलो के मन्दिर में आज भी आगंतुक ऐसे दासों की बिक्री के दस्तावेज मन्दिर की बहुभुजी दीवार पर उकेरे हुए देख सकते हैं। इन लोगों को आधिकारिक रूप में देवता के दास बनाया जाता था परन्तु व्यावहारिक रूप में उन्हें मुक्त माना जाता था ।[37]

कोई उम्मीद कर सकता है कि मसीहियत के फैलाव से दासों को मुक्त किया जाता होगा जो इस तथ्य के प्रति संवेदनशील हो रहे थे कि परमेश्वर की दृष्टि में वास्तव में ''न कोई दास न स्वतन्त्र'' था (3:28)। स्पष्टतया दासता के उन्मूलन के लिए आरम्भिक मसीही सदियों में अधिक काम नहीं हुआ।

बाइबल का कोई प्रमाण यह सुझाव नहीं देता कि मसीह के बाद की आरम्भिक सदियों में मसीही लोगों ने दासत्व के उन्मूलन या सरकारी सुधार को बढ़ावा देने वाले आंदोलनों में भाग लिया हो। इसके विपरीत दासों को अपने स्वामियों के अधीन रहने की आज्ञा दी जाती थी और मसीही लोगों को अपने शासकों के अधीन इस प्रकार रहने की आज्ञा दी जाती थी जैसे वे मसीह ही की सेवा कर रहे हों (इफिसियों 6:5-8; कुलुस्सियों 3:22-24)। स्वामियों को अपने दासों के साथ निष्पक्षता और व्यवहार के साथ लिहाज करने की शिक्षा दी जाती थी (इफिसियों 6:9; कुलुस्सियों 4:1)। व्यवहार बदल जाने पर सामाजिक रूप में असमान लोगों के रूप में बीच जो मसीह में हैं, संगति और प्रेम हो सकता है। परमेश्वर के आत्मा ने इसी सतह पर अपना प्रभाव डालना था (1 तीमुथियुस 6:1, 2) ।[38] इस वर्तमान संदर्भ में पौलुस गलातिया के मसीहियों से मसीह में अपनी आत्मिक स्वतन्त्रता को बनाए रखने और ''दासत्व के जुए'' में न लौटने का आग्रह कर रहा था (5:1)। उसने उन्हें चिताया, **ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर बने, वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो।** वह इस बात से पूरी तरह परिचित था कि सक्रिय स्वतन्त्रता किस प्रकार से खतरनाक हो सकती थी, विशेषकर प्राचीन यूनानी संस्कृति में। उसे सांसारिक मनुष्य के स्वतन्त्रता को पाप करने के लाइसेंस की प्रवृति का पता था। यहां पर भावनाएं वैसी ही हैं जैसी पौलुस ने रोम की कलीसिया में व्यक्त कीं। परमेश्वर के अनुग्रह की बहुतायत होने में महिमा करने के तुरन्त बाद उसने पूछा, ''तो हम क्या कहें ? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो ? कदापि नहीं!'' (रोमियों 6:1, 2क; देखें यहूदा 4)। इन अलंकारिक प्रश्नों के द्वारा वह यह स्पष्ट करना चाहता था कि मनुष्य के विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार मसीही व्यक्ति को अनैतिक जीवन जीने से रोकता है।

''केवल विश्वास'' किस्म की मसीहियत परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकती (देखें याकूब 2:19)। अपने प्रेरितों के द्वारा आज्ञा मानने, सेवा और बलिदान की दी गई यीशु की बहुत सी

आज्ञाओं को मानना आवश्यक है। ये चेतावनियां हमें अनुग्रह, विश्वास और प्रेम के वास्तविक अर्थ की सार्थक ढंग से परिभाषा बताती हैं। सुसमाचार के साथ साथ व्यवस्था का सार *agapē* (अगापे) प्रेम है।[39]

आयत 14. परमेश्वर की संतान द्वारा अपनाए जाने वाले उन सभी आत्मिक गुणों में से सबसे बड़ा गुण वह प्रेम है जिसके बारे में प्रेरित ने लिखा। उसने कहा, **क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है, ''तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।''**[40] 5:13 की तरह इस आयत में आरम्भ में ''क्योंकि'' (*gar*, गार) इसके तुरन्त पहले होने वाली बात का कारण देता है। गलातियों को अपनी स्वतन्त्रता का इस्तेमाल शरीर के लिए नहीं करना था बल्कि इसके बजाय ''प्रेम से एक दूसरे के दास'' बनने के लिए करना था (5:13)। यह सच था क्योंकि प्रेम व्यवस्था का पूरा होना है।

जब एक व्यवस्थापक ने यीशु से व्यवस्था की सबसे बड़ी आज्ञा के बारे में पूछा था तो उसने उत्तर दिया था:

> ''तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख'' (मत्ती 22:37-39)।

पौलुस ने चाहे यहां पर कहा कि पूरी व्यवस्था ही इस दूसरी आज्ञा को मानने से पूरी हो जाती है, पर निश्चय ही वह यीशु की बात के उलट नहीं कह रहा था। इसके बजाय वह उस आज्ञा को उद्धृत कर रहा था जो इस परिस्थिति के लिए अधिक उपयुक्त थी। अपने पड़ोसी से प्रेम करने की आज्ञा गलातियों की एक और बड़ी समस्या यानी आपसी सम्बन्धों की ओर ध्यान दिलाती थी (गलातियों 5:15)।

व्यवस्था किसी जीवन को सुधारने के लिए बहुत कम शक्ति देती थी। व्यवस्था में आदर्श बात वास्तव में यीशु द्वारा बताई गई प्रेम की दो बड़ी आज्ञाओं में मिलती थी (लैव्यव्यवस्था 19:18; व्यवस्थाविवरण 6:5)। परन्तु शक्ति केवल सुसमाचार (नई वाचा) ने ही वह शक्ति दी थी, क्योंकि ''पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है'' (रोमियों 5:5; देखें तीतुस 3:4-6; 1 पतरस 1:22, 23)। पौलुस ने इसी कारण यहां प्रेम की बड़ी आज्ञा पर फोकस किया क्योंकि इस मसीही गुण में गलातिया के उसके भाई कम पड़ रहे थे।

आयत 15. पौलुस ने यह चेतावनी सुनाई: **पर यदि तुम एक दूसरे को दांत से काटते और फाड़ खाते हो, तो चौकस रहो कि एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो।** यह पहला स्पष्ट संकेत है कि इन कलीसियाओं में भाइयों के बीच गम्भीर आपसी समस्याएं पाई जाती हैं। एक दूसरे के प्रति उनके व्यवहार के विनाशकारी होने के वर्णन के लिए यहां इस्तेमाल की गई भाषा से पता चलता है कि ये समस्याएं बड़ी ही गम्भीर थीं। पाठक को यह जानकर हैरानी हो सकती है कि पत्र में इतने गम्भीर विषय को इतनी देर बाद क्यों उठाया गया। भाषा चाहे अलंकारिक है फिर भी यह बहुत ही कठोर और चौंकाने वाली है।

अनुवादित शब्द ''दांत से काटते'' का यूनानी शब्द (*daknō*, डैक्नो) नये नियम में यहां

केवल एक बार मिलता है परन्तु सप्तति अनुवाद (LXX) में कई बार मिलता है। इनमें से अधिकतर बार यह सांप के काटने की बात करता है।[41] यह शब्द एक बार भोजन के सेवन के लिए (मीका 3:5) और एक बार लेनदारों के लिए भी मिलता है, लाक्षणिक रूप में कहें तो अपने देनदारों को ''दांतों से काटते'' (हबकूक्क 2:7; KJV; ASV)।

''फाड़ खाते'' (*katesthiō*, केटस्थियो) का अक्षरश: अर्थ ''खा डालना'' या ''निगल जाना'' है (मत्ती 13:4; मरकुस 4:4; लूका 8:5)। इसका इस्तेमाल लाक्षणिक रूप में उपभोग और विनाश के लिए भी होता है (मरकुस 12:40; लूका 20:47)। प्रकाशितवाक्य में यह रूपक भयंकर है, इसमें कई बार किसी को या किसी चीज़ को आग के द्वारा या अजगर के द्वारा निगल लिया जाता है (प्रकाशितवाक्य 11:5; 12:4; 20:9)।

अनुवाद हुआ ''सत्यानाश'' का यूनानी शब्द (*analiskō*, अनालिस्को) सम्पूर्ण विनाश को दिखाता है। यह केवल यहां (लाक्षणिक रूप में) लूका 9:54 में आकाश से भस्म करने वाली आग के सम्बन्ध में मिलता है। लूका की भाषा 2 राजाओं 1:1-12 को याद दिलाती है जहां एलिय्याह ने आकाश से आग बुलवाई थी और दुष्ट राजा अहज्याह की ओर से भेजे गए 102 आदमी नष्ट हो गए थे।

यहां तक पौलुस की चेतावनी की ठोकर डॉक्ट्रिन में पाई जाने वाली गलती और इसको बढ़ावा देने वाले (यहूदी मत की शिक्षा देने वाले) रहे थे। उनकी गलती और गतिविधि के लिए डांट लगाते हुए उसने गलातियों को भी ''निर्बुद्धि'' कहते हुए उन्हें इसे स्वीकार करने के लिए ताड़ना दी थी (3:1, 3)। वे उन चमत्कारी चिह्नों को जो उसके प्रचार के साथ हुए थे (3:5) और उनके जो वे कर रहे थे, उससे मन न फिराने के परिणामों को भूल गए थे उसने उन्हें मसीह में मिली अपनी नई नई स्वतन्त्रता का दुरुपयोग करने के विरुद्ध चेतावनी दी थी (5:13)। इसके अलावा वह व्यवस्था के अधीन दासत्व बनाम मसीह में स्वतन्त्रता के अपने प्रमुख विषय से कभी हटा नहीं था।

क्या यह तनाव यहूदी मत की शिक्षा देने वालों का समर्थन करने वाले और उस पर आक्रमण करने वाले दोनों पक्षों में बढ़ रहे थे? क्या उनके व्यवहार करुणा और अनुग्रह वाले मन के बजाय कर्मकाण्ड के न्याय करने वाले में बदलकर बिगड़ गए थे? क्या यह शायद युगों पुराना व्यक्तित्व की सनक का प्रलोभन था जो बाद में कुरिन्थुस में बढ़ना था, हमें शायद कभी पता न चले पर यह स्पष्ट है कि फूट का कुछ तो कारण था जो इन कलीसियाओं के बीच प्रेम को नष्ट करके संगति को बिगाड़ रहा था। जो भी हो पौलुस के लिए अब इस पत्र के डॉक्ट्रिन वाले भाग को बंद करके अपनी व्यावहारिक प्रासंगिकता को आरम्भ करने का समय था। अपने हर लेख में वह यही तरीका अपनाता था।

आत्मा के अनुसार चलना (5:16-26)

अपनी शिक्षा को लागू करने के लिए पौलुस ने महत्वपूर्ण साहित्यक उपाय बताए जिन्हें ''बुराई की सूचियां'' और ''अच्छाई की सूचियां'' नाम दिया जाता है। इन सूचियों में सांसारिक और आत्मिक व्यवहारों तथा कार्यों के बीच स्पष्ट अंतर किया गया है। पौलुस की दृष्टि में इस अंतर से बढ़कर कोई बात नहीं थी। संसार की अहंकारी, स्वार्थी और प्रेम रहित सोच तथा आत्मा

की सोच के बीच स्पष्ट अंतर किया गया है।

आत्मा बनाम शरीर (5:16-18)

[16]पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। [17]क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। [18]और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे।

आयत 16. पौलुस ने गलातियों को पहले ही चेतावनी दी थी कि यह स्वन्त्रता ''शारीरिक कामों के लिए अवसर'' न बने (5:13)। अब उसने उन्हें निर्देश दिया कि **आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।** पवित्र आत्मा की इच्छा के आगे झुककर भाइयों ने पाप की लालसाओं में फंसने से बच जाना था।

मनुष्य चाहे पतित प्राणी है परन्तु आरम्भ में उसे परमेश्वर के स्वरूप पर रचा गया था, जो आत्मा है (उत्पत्ति 1:27; यूहन्ना 4:24)। मनुष्य के भीतर आज भी अपने सृष्टिकर्त्ता का ईश्वरीय स्वभाव है (याकूब 3:9)।[42] परमेश्वर के स्वरूप में बनाया होने के कारण मनुष्य बुनियादी तौर पर आत्मिक प्राणी है। जब तक वह पृथ्वी पर रहता है तब तक वह शारीरिक और आत्मिक दोनों है। परमेश्वर ने मसीही लोगों को अपना ही आत्मा दिया है (प्रेरितों 2:38), इस कारण हम शरीर के ऊपर विजय पा सकते हैं। परमेश्वर के अनुग्रह से ही हम शरीर और आत्मा की प्रतिदिन की लड़ाई को जीत सकते हैं।

यह आंकलन पौलुस द्वारा रोम के पवित्र लोगों के नाम से लिखी गई बात से मेल खाता है:

> और जो शारीरिक दशा में हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। परन्तु जब कि परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है, तो तुम शारीरिक दशा में नहीं परन्तु आत्मिक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं (रोमियों 8:8, 9)।

इन आयतों में ''आत्मिक,'' ''परमेश्वर का आत्मा,'' और ''मसीह का आत्मा,'' तीनों एक ही हैं। मसीही लोगों के लिए यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि हमारे अंदर परमेश्वर का आत्मा है और इससे भी बढ़कर आवश्यक यह है कि हम आत्मा के अनुसार चलना सीखते हैं। मसीही व्यक्ति के लिए अपनी सोच, व्यवहार और जीने के पूरे ढंग को पवित्र आत्मा की अगुआई में चलाना आवश्यक है (देखें गलातियों 5:25)।

''आत्मा के अनुसार चलो'' वाक्यांश में ''चलो'' (*peripateō*, पेरिपेटियो) का अक्षरशः अर्थ है ''टहलना।'' नये नियम में इसका इस्तेमाल प्रतीकात्मक अर्थ में कई बार ''बर्ताव करना,'' ''आचरण'' या ''जीना'' कई बार हुआ है।[43] इसलिए ''आत्मा के अनुसार चलो'' का अर्थ उस प्रकार से ''बर्ताव करो'' है जो ''आत्मा की मनसा'' से मेल खाता हो (रोमियों 8:27)। जो लोग आत्मा के अनुसार चलते हैं उन्हें परीक्षा का सामना करने और पाप पर विजय पाने का असरदार तरीका दिया जाता है। रोमियों के नाम पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित

रहोगे'' (रोमियों 8:13)।

आयत 17. प्रेरित ने जोर पकड़ने वाले आत्मिक युद्ध को विस्तार से बताया: **क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं।** ये शब्द मसीही लोगों को लिखे गए थे जिन्हें पाप की लालसाओं के विरुद्ध लड़ते रहना आवश्यक है।

वचन यह स्पष्ट कर देता है कि शारीरिक सृष्टि अस्थाई है। पतरस ने कहा कि ''वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी इसलिए रखे गए हैं कि जलाए जाएं'' (2 पतरस 3:7)। उसने आगे कहा कि ''परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे'' (2 पतरस 3:10)। हमारे संसार के अस्थाई होने को ध्यान में रखते हुए क्या हमारी आशा पृथ्वी की वस्तुओं पर लगाना मूर्खता नहीं लगती ?

बुढ़ापे में यूहन्ना ने लगभग 2 हज़ार साल पहले इफिसुस में अपने आत्मिक बच्चों को ये शब्द लिखे थे:

> तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा (1 यूहन्ना 2:15-17; NKJV)।

यूहन्ना भौतिक वस्तुओं की नहीं बल्कि उनके प्रति मनुष्य के व्यवहार और उसके सम्बन्ध की बात कर रहा था। यदि हम संसार की किसी भी चीज़ को इतना अधिक महत्व देने लगें कि आत्मिक मामलों को पीछे छोड़ दें तो हम संसार से प्रेम कर रहे होते हैं। यदि हम आत्मिक मूल्यों की अपनी समझ और सराहना को पीछे करते हुए हमारा ध्यान हटाने और हमें लुभाने के लिए संसार की वस्तुओं और अभिलाषाओं को अनुमति देते हैं तो हम संसार से प्रेम कर रहे हैं। यदि हमारी दृष्टि में परमेश्वर के सामने हमारे खड़े होने के बजाय मनुष्यों सामने खड़े हो अधिक प्रिय है (हमारा असल स्वभाव), तो शैतान हमें धोखा देने में सफ़ल हो जाएगा।

आयत 17 के अंत में पौलुस ने यह शब्द जोड़े: **इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।** इस वाक्यखण्ड को कम से कम दो तरह से समझा गया है। पहला, ''जो तुम करना चाहते हो'' की व्याख्या उस भलाई के रूप में जो मसीही व्यक्ति करना चाहता है सकारात्मक अर्थ में की जा सकती है। परन्तु वह ''शरीर'' नहीं कर पाता। ऐसा होने पर यह भाषा रोमियों 7:14-23 में पौलुस द्वारा बताई गई भीतरी कशमकश जैसी होगी। इसके उलट ''जो तुम करना चाहते हो'' पिछली आयत की ''शरीर की लालसा'' जैसी हो सकती है। यदि ऐसा है तो यह वाक्यखण्ड इस बात पर ज़ोर देता है कि बुराई करने की लालसा पर मसीही व्यक्ति की विजय आत्मा के वास की सामर्थ के द्वारा होती है। यह इस बात को याद दिलाता है कि जो लोग आत्मा के अनुसार चलने के लिए समर्पित हैं उन्हें आत्मा के अनुसार चलने के लिए अपनी पापपूर्ण

लालसाओं के आगे झुकना नहीं बल्कि आत्मा की अगुआई के अनुसार चलना आवश्यक है।

आयत 18. आत्मा के अनुसार चलने और परमेश्वर की संतान के रूप में रहने के अपने विषय को जारी रखते हुए पौलुस ने लिखा, **और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो तो व्यवस्था के अधीन न रहे।** एक बार फिर उसने विश्वासी के दासत्व के जुए से मुक्ति की बात की (5:1)

इस्राएली लोग सीनै पर्वत के आरम्भ से ''व्यवस्था के अधीन'' रहते थे। परमेश्वर को प्रसन्न करने के उनके सभी संघर्षों और वेदी के तले बलिदानों के इतने लहू बहाए जाने के बावजूद लोग अभी भी पाप के दासत्व में थे। प्रतिज्ञा किए हुए छुटकारा दिलाने वाले के आने तक कोई स्वतन्त्रता नहीं हो सकती थी क्योंकि पाप पर पूर्ण विजय केवल उसी वाचा में पाई जा सकती थी। वे दासत्व की संतान थे (4:25) जो मसीहा के आने की केवल उम्मीद कर सकते थे। अब वह सुबह हो चुकी थी (4:4)।

व्यवस्था के अधीन होने के बजाय मसीही लोग ''आत्मा के चलाए चलते'' हैं। फिर भी हम पूर्ण आज्ञापालन करने की कोशिश करते रहते हैं क्योंकि अपने ऊपर जय पाने के लिए निजी लड़ाई आवश्यक है। परन्तु वह लड़ाई मसीह और क्रूस पर बहे उसके लहू के द्वारा जीत ली गई है। परमेश्वर की महिमा हो कि यीशु ने अपना कीमती लहू बहा दिया, मृत्यु पर जय पा ली है, स्वर्ग में उठा लिया गया और अपना पवित्र आत्मा उण्डेल दिया! *आत्मा के अनुसार चलकर, हम उसके अनुग्रह से शैतान और पाप के ऊपर उस विजय में भागीदार हो सकते हैं।*

''शरीर के काम'' (5:19-21)

[19]शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, [20]मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, [21]डाह, मतवालपन, लीलाक्रीड़ा, और इनके जैसे और-और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूं जैसा पहले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

आयत 19. इस भाग में बातें हैं जिन्हें कुछ लोगों ने ''बुरी सूची'' या ''बुरी तालिका'' नाम दिया है। वचन में ऐसी सूचियां आम मिलती हैं। इस संदर्भ में एक सूची का आरम्भ प्रस्तावना जैसी बात **शरीर के काम को प्रगट हैं** से होता है। पौलुस ने लिखा कि वह देखे जा सकने वाले कामों की चर्चा कर रहा था; जैसे ''काम'' या ''कर्म'' (KJV) ''प्रगट'' हैं। यूनानी शब्द (*phaneros*, फेनरोस) का अनुवाद ''स्पष्ट,'' ''साफ़,'' ''साफ़ देखे जा सकने वाले'' भी हो सकता है।[44] ''शरीर'' (*sarx*, सार्क्स) शब्द के चाहे पवित्र शास्त्र में कई संकेत हैं पर यहां यह उस ''स्वाभाविक'' ढंग का संकेत है जिससे पतित मनुष्यजाति सोचती या काम करती है। यह उन गुणों से बिल्कुल अलग है जो उन लोगों में पाए जाते हैं जो आत्मा से जन्मे हैं (5:22, 23)। ''शरीर के काम'' वे हैं जो शारीरिक यानी वह मनुष्य स्वाभाविक रूप में करता है जो छुड़ाया नहीं गया है। यह पाप जिन्हें आम तौर पर शारीरिक ढंग में दिखाया जाता है वास्तव में मन (या हृदय) से निकलते हैं।

पौलुस यह दिखा रहा था कि सांसारिक बुराइयां (5:19-21) और आत्मिक गुणों (5:22,

23) को अलग अलग पहचाना जा सकता है। जब यीशु ने झूठे भविष्यवक्ताओं की बात की तो उसने उनकी तुलना उन कंटीली झांड़ियों से की जिन पर दाख (अच्छा फल) नहीं लग सकता। उसने इन शब्दों के साथ समाप्त किया: ''इस प्रकार उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे'' (मत्ती 7:15-20; देखें लूका 6:43-45)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भी लोगों को मसीहा के आने वाले राज्य की तैयारी के लिए अपने जीवनों को बदलने के लिए कहते हुए यह प्रचार करता था कि वे ''मन फिराव के योग्य फल'' लाएं। उन्हें अपने व्यवहार के द्वारा यह दिखाना आवश्यक था कि वे इन बदलावों को ला रहे हैं (मत्ती 3:7, 8)। यीशु ने चेला बनने की तुलना संसार में चमकने वाली ज्योति और पहाड़ पर बसे नगर से की जो छिप नहीं सकता। उसने अपने चलों को समझाया, ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें'' (मत्ती 5:16)। पौलुस ने भी यह कहते हुए व्यवहार की बात की, ''कुछ मनुष्यों के पाप प्रगट हो जाते हैं, ... वैसे ही कितने भले काम भी प्रगट होते हैं, और जो ऐसे नहीं होते, वे भी छिप नहीं सकते'' (1 तीमुथियुस 5:24, 25)। पौलुस ने ''शरीर के कामों'' और ''आत्मा का फल'' दोनों की बसत इसी अर्थ में की।

5:19-21 में ''शरीर के कामों'' को चार भागों में बांटा गया है।[45] (1) पहले तीन कामों में शरीर के पाप हैं: ''व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन।'' (2) अगले दो पाप मूर्तिपूजा के संस्कार के हैं: ''मूर्तिपूजा, टोना।'' (3) आठ और पाप आपसी सम्बन्धों के हैं: ''बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह।''[46] (4) अंतिम दो पाप उपद्रवी जीवन से जुड़े हैं: ''मतवालापन, लीलाक्रीड़ा।''

1. शरीर के पाप (5:19ख)

इस सूची में पहले तीन पाप सेक्सुएलिटी से सम्बन्धित हैं। बुराई वाली सूची का आरम्भ **व्यभिचार** शब्द के साथ होता है जो कामुकता वाले व्यवहार या ''व्यभिचार'' की बात करने के लिए कोमल भाषा है। यूनानी शब्द *porneia* (पोर्निया) व्यभिचार, विवाह से पूर्व सैक्स, वेश्यावृति, कौटुम्बिक व्यभिचार, और पुरुष समलैंगिक और स्त्री समलैंगिक सम्बन्धों सहित विशेष लैंगिक पापों की कई श्रेणियां आ जाती हैं। परमेश्वर के इरादे और मंशा में, शारीरिक मिलन एक पुरुष और एक स्त्री यानी पति और उसकी पत्नी तक सीमित था। उन्हें यह अंतरंग सम्बन्ध की आशीष के साथ साथ मनुष्यजाति के फैलाव के लिए दिया गया था।[47]

पवित्र शास्त्र के अनुसार परमेश्वर को स्वीकार्य और पसंद एक ही यौन गतिविधि है जो पति और पत्नी के बीच होती है। यह बात उस माहौल में जिसमें आज हम रहते हैं बहुत से लोगों की स्वीकृति से मेल नहीं खाती। परन्तु हमारी चिंता यह नहीं है कि किसी भी युग में लोग किसे सही मानते हैं, बल्कि यह है कि परमेश्वर किसकी स्वीकृति देता है।

पौलुस द्वारा बताया गया दूसरा ''शरीर का काम'' **गंदे काम** (*akatharsia*, अकाथर्सिया) है। इस शब्द का मूल अर्थ ''गंदगी'' है परन्तु इस संदर्भ में स्पष्टतया इसका गंदगी या साफ सफाई से कोई सम्बन्ध नहीं है। बल्कि इसका इस्तेमाल नैतिकता भ्रष्टता, अशुद्धता या गंदे इरादों के लिए प्रतीक रूप में किया गया है। इसका इस्तेमाल विशेषकर अप्राकृतिक बुराइयों सहित (रोमियों 1:24) शरीर के पापों के लिए किया जाता है (2 कुरिन्थियों 12:21; इफिसियों 5:3;

कुलुस्सियों 3:5)।

पौलुस ने पापों के इस भाग की समाप्ति **लुचपन** (*aselgeia*, असेलजिया) शब्द के साथ की। इस यूनानी शब्द की परिभाषा ''अश्लीलता,'' ''दुराचार,'' ''अय्याशी,'' और ''बुराइ,'' के रूप में भी की जा सकती है। इसका अर्थ आम तौर पर लैंगिक ज्यादतियों के लिए होता है और *koitē* (''सम्भोग'')[48] *porneia* (पोर्निया, ''अनैतिकता'' या ''व्यभिचार'') जैसे शब्दों के सम्बन्ध में मिलता है। अंग्रेजी भाषा के शब्द ''लाइसेंस'' की तरह इसमें नैतिक संयम न होना या उसकी परवाह न करना होना लगता है, विशेषकर शरीर से सम्बन्धी बातों में। इसमें विचार पूर्ण रूप में अपने आपको वासना को सौंप देने का है। नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल कई जगह हुआ है, जिनमें हर बार यह लैंगिक अश्लीलता की ओर ही इशारा करता है।[49]

2. मूर्तिपूजा के संस्कार के पाप (5:20क, ख)

आयत 20. बुराई की सूची में आगे **मूर्तिपूजा** आता है, यह शब्द पवित्र शास्त्र में इतना आम है कि इसकी थोड़ी व्याख्या की जानी बनती है। फिर भी प्राचीन जगत में पाई जाने वाली इस प्रथा के कुछ पहलुओं की समीक्षा लाभदायक हो सकती है। काफ़िरों के बीच मूर्तिपूजा क्यों पाई जाती थी?

काफिर लोग कई देवी देवताओं की पूजा करते थे क्योंकि मनुष्य के अंदर परमेश्वर की स्वाभाविक आवश्यकता पाई जाती है। जिन संस्कृतियों में सच्चे और जीवते परमेश्वर का ज्ञान नहीं है उन्होंने सहज ज्ञान से देवता बना लिए या उनकी कल्पना कर ली। मनुष्य उपासना के लिए, जिस पर वह निर्भर रह सके कुछ न कुछ चाहता है।[50] अरियुपगुस में पौलुस ने सम्बोधन करते हुए कहा परमेश्वर की तलाश ही वह मुख्य कारण है जिसके लिए लोगों को पृथ्वी पर रखा गया है: ''कि वे परमेश्वर को ढूंढें, कदाचित उसे टटोलकर पाएं, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं'' (प्रेरितों 17:27)। प्रेरित ने यह भी कहा, ''उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं'' (रोमियों 1:20)।

परमेश्वर पूरी तरह से आत्मिक है (यूहन्ना 4:24) और मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया है (उत्पत्ति 1:27), इस कारण मनुष्य मुख्यतया आत्मिक प्राणी है। शारीरिक देह उसे केवल लिबास के रूप में दी गई है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए पौलुस और पतरस दोनों ने शारीरिक देह को ''डेरा/तम्बू'' कहा (2 कुरिन्थियों 5:1, 4; 2 पतरस 1:13; NIV)। मनुष्य का अस्तित्व परमेश्वर से हुआ है जिस कारण यह स्वाभाविक है कि वह अपने आत्मिक पिता की बुनियादी ललक रखे। अगस्टिन ने कहा है, ''तूने हमें अपने लिए बनाया और हमारे दिलों को तब तक शांति नहीं मिलती जब तक वे तुझ में विश्राम न पा लें।''[51]

आम तौर पर चाहे कमज़ोर, गुमराह, या अनजान होती है पर पिता की यह खोज आज भी जारी है। पौलुस ने कुछ यूनानी कवियों से सूत्र लेते हुए अरियुपगुस के अपने सम्बोधन में इसी विचार का संकेत दिया। उसने यूनानी देवताओं के पितामाह ज्यूस से सम्बन्धित एक शिक्षाप्रद कविता से उद्धृत किया जिससे स्पष्ट रूप में उसे सुनने वाले परिचित थे। पर उसने इस भाषा को सच्चे और जीवते परमेश्वर पर लागू किया, ''क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-

फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, हम तो उसी के वंश भी हैं'' (प्रेरितों 17:28; NIV)।[52]

स्वाभाविक मनुष्यो की देवताओं या तलाश की उनकी कल्पना करने की इस स्वाभाविक व्यवस्था का निर्विवाद प्रमाण पूरे मानवीय इतिहास में पाया जाता है। संसार भर में पुरातत्ववेता, मानवविज्ञानी, और जीवाष्म विज्ञानी धातु, लकड़ी और पृथ्वी की मूर्तियों को खोजते रहते हैं जिन्हें हम ''मूर्तियां'' कहते हैं। आवश्यक नहीं कि इन आकृतियों की पूजा होती रही हो। क्योंकि कई बार वे केवल उन देवी देवताओं को दर्शाने वाले केवल आकृतियां होती थीं जो लोगों को वास्तविक लगते थे। प्राचीन काल के यूनानी संसार में आकृतियों और वेदियों की भरमार थी (जैसे पौलुस द्वारा एथेंस में देखी गई ''पूजने की वस्तुएं''; प्रेरितों 17:23)। इनमें से मुख्यतया दो ध्यान देने योग्य हैं जिनकी निश्चित रूप में मूर्तियों की पूजा की जाती थी। (1) एथेंस में अक्रोपुलिस पर अथेना का एक बड़ा बुत था। एथेंस के समुद्र पत्तन, पिरेयुस नामक बंदरगाह के निकट पहुंचने पर नाविकों को उसका चमकता हुआ, सुनहरी टोप और भाला दूर से दिखाई दे जाता था। (2) ज्यूस की विशाल मूर्ति इससे भी भव्य थी, जिसका सिर ओलम्पिया में उसके मन्दिर में बैठी के बावजूद, छत को छूता था। समझ में आता है कि ज्यूस की मूर्ति प्राचीन जगत के सात अजूबों में से एक थी।

आकृति से बढ़कर या इससे भी आगे अधिकतर लोगों के लिए किसी देवता या नायक की बात उसके मन में होती थी जो श्रद्धेय या पूजनीय होता था। व्यंग्यात्मक बातचीत के लेखक समोसेटा के लुसियन (115-200 ई.) ने एक बार मूर्तिकार का काम सीखा और उसे अच्छी तरह से मालूम था कि ऐसी आकृतियां अस्तित्व में कैसे आती हैं। अपने एक लेख में उसने उन लोगों की मूर्खता का मज़ाक उड़ाया जो ऐसी आकृतियों के प्रति श्रद्धा रखते हैं, चाहे वह ओलम्पिया में ज्यूस की विशाल मूर्ति ही क्यों न हो। अपने सारे शानदार सोने और हाथीदांत के बनाए होने के बावजूद इसे लोहे की तारों, कबज़ों, तखतों, मेखों और खूटों से बांधकर रखा गया था।[53]

मूर्तिपूजा की मूर्खता की ऐसी ही कठोर पर हास्यास्पद स्थिति यशायाह 44:9-20 में मिलती है। यशायाह (यशायाह 44) और पौलुस (प्रेरितों 17) का व्यवहार विश्वासी यहूदियों की विशेषता था। संक्षेप में यह सीनै पहाड़ पर व्यवस्था दिए जाने (निर्गमन 20:3-6) के समय परमेश्वर ने उनसे यही चाहा था, और कनान देश पर कब्जा करने के लिए उनके यरदन नदी को पार करते हुए, इसे बार-बार दोहराया था (व्यवस्थाविवरण 5:7-10)। दोनों ही घटनाओं में मूर्तिपूजा को बर्दास्त करने के सम्बन्ध में सबसे अधिक जोर देकर आज्ञा दी परमेश्वर की इस्राएल को यही चेतावनी थी।[54] इस्राएलियों को अंतिम आदेश देने पर स्पष्टतया यहोशू को लोगों को बाहरी देवी देवताओं की सेवा करने के विरुद्ध चेतावनी देना आवश्यक लगा (यहोशू 24:20-24)। उसकी ताड़ना के बावजूद, न्यायियों से लेकर बाद के राजाओं के समय तक के इस्राएल के इतिहास के दौरान, कोई और पाप इतना आम, घातक और हानिकारक नहीं था जितना मूर्तिपूजा का पाप। मुख्य कारणों में से यही एक कारण था जिसके कारण इस्राएलियों को और यहूदा को अंत में निर्वासन में ले जाया गया जिसमें इस्राएल को अश्शूर में और यहूदा को बेबिलोन में ले जाया गया था। परमेश्वर के दण्ड से अंत में अपेक्षित परिणाम मिला; दासत्व के काल के बाद इस्राएलियों ने अंत में मूर्तिपूजा बंद कर दी।

अंतियोकुस चतुर्थ एपिफेनस के सताव के कारण, दोनों नियमों के काल के बीच, यहूदियों पर अपनी जान बचाने के लिए सिलयूसिडों के साथ समझौता करने की परीक्षा थी। इसमें व्यवस्था को छोड़ना और झूठे देवी देवताओं की पूजा करना शामिल था। परन्तु अपने अत्याचार करने वालों के विरुद्ध उठकर मक्काबी लोगों ने उससे पीछा छुड़ा लिया (167–164 ई.पू.)। पहली मसीही सदी और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यीशु के आगमन तक यहूदियों में मूर्तिपूजा पाई जाती थी या नहीं इस बात का कोई प्रमाण नहीं है।

पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के लिए मूर्तिपूजा इतना बड़ा प्रलोभन क्यों था? बाइबल के समयों में मूर्तिपूजा में ऐसी कौन सी बात थी जो इस्राएलियों को लुभाती थी कि वे परमेश्वर और उसकी व्यवस्था से मुंह मोड़ लें? जैसा कि पहले कहा गया है कि काफ़िर जगत पर मूर्तिपूजा के प्रभाव का जिसकी वह मूर्ति या आकृति होती थी उसके बाहरी रूप से कोई सम्बन्ध नहीं होता था। पुराने जमाने के अधिकतर देवी देवताओं को किसी विशेष शक्ति के साथ जोड़ा जाता था जिसे अलौकिक माना जाता था।[55] प्राचीन जगत में अधिकतर लोग ज़िंदा रहने के लिए प्रकृति की शक्तियों पर निर्भर होते थे। अकाल और युद्ध के खतरे हरदम रहते थे। इस्राएल के पड़ोसियों का मानना था कि यदि आकाश में वर्षा के साथ ज्यूस की बिजली न गिरे, यदि देमेत्र पृथ्वी से अन्न तथा अन्य फल न उगाए, और यदि एथेंस नगर की रक्षा न करे, तो परिणाम भयंकर होगा। यह माना जाता था कि उससे जुड़े देवी या देवता को प्रसन्न करना आवश्यक है नहीं तो विनाश पक्का है। इन मान्यताओं का इस्राएल पर प्रभाव था।

प्रेरित ने काफिरों के दूसरे सांस्कारिक पाप **टोना** का नाम लिया। यह शब्द (*pharmakeia*, फार्मेकिया) से लिया गया है और ''फारमेसी,'' ''फारमासिस्ट'' और ''फारमासिटिकल'' जैसे अंग्रेज़ी के शब्दों का स्मरण दिलाता है। इससे जुड़े यूनानी क्रिया शब्द *pharmakeuō* (फार्मेकियो) का अर्थ ''औषधि'' या दवाई का प्रबन्ध करना, ''टोटके इस्तेमाल करना,'' ''जादू टोना करना,'' या ''दवा से विष मिलाना, ज़हरीला या मादक नशा देना'' है।[56] नये नियम में इससे जुड़े दो और शब्द मिलते हैं। (*pharmakos*, फार्मेकोस) शब्द का अर्थ है ''जादूगर या जादू करने वाला या टोना,'' और (*pharmakon*, फार्मेकोन) ''जादू टोना'' या ''जादू'' या ''जादू की दवा'' को दिखाता है।[57] इसमें से कुछ शब्द चाहे सहायक औषधि का संकेत दे सकते हैं परन्तु जादू-टोना, भूतसिद्धि, जादू और ज़हर जैसी सम्भावनाओं सहित ये शब्द नकारात्मक संकेत ही देते हैं। लियोन मौरिस का दावा था, प्राचीन जगत में डाक्टरी ज्ञान सीमित था इस कारण ''इन शब्दों का इस्तेमाल न केवल उन दवाओं के लिए जिनका उपचारात्मक मूल्य होता था बल्कि चंगाई के जादूई तरीकों के लिए भी और फिर किसी भी प्रकार के जादू के लिए होने लगा (तुलना प्रकाशितवाक्य 9:21; 18:23)।''[58]

पुराने नियम में जादू-टोने या जादू के प्रति कोई सहिष्णुता नहीं दिखाई गई। मूसा ने व्यवस्था दी कि ''तू डाइन को जीवित रहने न देना'' (निर्गमन 22:18)। उसने यह भी कहा:

> तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे वा बेटी को आग में होम करके चढ़ानेवाला, या भावी कहनेवाला, या शुभ अशुभ मुहूर्तों का माननेवाला, या टोन्हा, वा तान्त्रिक, या बाजीगर, या ओझों से पूछनेवाला, या भूत साधनेवाला, या भूतों का जगानेवाला हो। क्योंकि जितने

ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं; और इन्हीं घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उनको तेरे सामने से निकालने पर है (व्यवस्थाविवरण 18:10-12क)।

3. आपसी सम्बन्धों में बुराई (5:20ग-21क)

इसके बाद पौलुस ने मनुष्य के आपसी सम्बन्धों में शरीर के काम के रूप में **बैर** का नाम लिया। यह बहुवचन शब्द[59] (*echthra*, इखथ्रा) से लिया गया है जो ''द्वेष'' या ''नफ़रत'' का विचार देता है। इसका सम्बन्ध ''शत्रु'' या ''जिससे घृणा की जाती है'' के अर्थ वाले शब्द (*echthros*, इखथ्रोस) से है। दोनों यूनानी शब्दों के नकारात्मक अर्थ स्पष्ट हैं।

कुछ वचनों में ये शब्द दुष्ट मन की प्रतिक्रिया को दिखाते हैं। रोमियों 8:7 कहता है कि ''शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है।'' इसी प्रकार से याकूब 4:4 कहता है कि ''संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है।'' प्रभु के ''शत्रु'' के रूप में शैतान संसार में मसीह के राज्य के बढ़ने और फल देने को विफल करने के लिए, जंगली बीज बो देता है (मत्ती 13:37-39)। खोए हुओं के उद्धार के लिए छुटकारे के मसीह के मिशन में अंतिम ''वैरी'' मृत्यु है (1 कुरिन्थियों 15:25, 26)।

यहां बताए गए वैर का सम्बन्ध भावनाओं या कार्यों के साथ है जो आपसी स्तर पर किसी भी कारण से उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसी शत्रुता होड़, डाह, रोष, बुरे या अनुचित व्यवहार होने, या दुर्भावना या चिड़ या नापसंदगी के कारण हो सकती है।

''वैर'' के साथ आरम्भ करते हुए लाइटफुट को लगा कि उसने हर शब्द के साथ तेज करते हुए ''हत्या'' के साथ करने को बढ़ते क्रम में देखा (5:21; KJV)।[60] परन्तु सभी टीकाकार इस राय से सहमत नहीं हैं। इसके विरुद्ध एक मज़बूत तर्क यह है कि ''हत्या'' के लिए एक इब्रानी शब्द (*phonoi*, फोनोइ) बेहतरीन हस्तलिपियों में नहीं मिलता है।[61]

सूची में आगे **झगड़ा** है। यूनानी शब्द (*eris*, इरीस) का अनुवाद ''अनबन'' (NIV) या ''कलह'' (NLT) भी हो सकता है। इन परिभाषाओं में बाउर के लैक्सिकन में ''होड़,'' ''तकरार,'' और ''झगड़ों'' के विचारों को भी जोड़ा गया है।[62] यूनानी विचार में ''झगड़ा'' का सम्बन्ध ऐरिस देवी से सम्बन्धित था और इसे उसी का नाम दिया गया था, जिसके ''घातक प्रभाव से युद्ध और विनाश होता [था]।''[63] पौलुस की इच्छा थी कि अनबन और झगड़े कलीसिया से बाहर रहें (देखें 1 कुरिन्थियों 1:11; 3:3); वह यीशु की इच्छा और प्रार्थना को पूरा करते हुए भाइयों के सुलह और शांति से रहने का इच्छुक था (यूहन्ना 17:20-23)।

''झगड़ा'' के बाद **ईर्ष्या** (*zēlos*, ज़ेलोस) शब्द आता है। यूनानी शब्द जो अंग्रेज़ी शब्द ''ज़ील'' का आधार है, में तेज इच्छा का विचार मिलता है। इसका इस्तेमाल, [किसी चीज़] में *उत्साह या जोश* से अत्याधिक सकारात्मक दिलचस्पी'' हो सकता है। दूसरी ओर कई बार इसमें ''किसी दूसरे की प्राप्तियों या सफलता पर ईर्ष्या या डाह की गहरी नकारात्मक भावनाओं का संकेत होता है।''[64] इस संदर्भ में डाह का इस्तेमाल जलन के अर्थ में किया गया है, जो लोगों के मनों की स्वार्थी, शारीरिक लालसाओं के कारण होती है।

बेशक परमेश्वर के वर्णन के लिए इस्तेमाल होने पर (निर्गमन 20:5; व्यवस्थाविवरण

4:24; 5:9; 6:14, 15), ''ईर्ष्या'' शब्द का सकारात्मक संकेत होता है। मूसा ने लिखा, ''क्योंकि तुम्हें किसी दूसरे को ईश्वर करके दण्डवत् करने की आज्ञा नहीं, क्योंकि यहोवा जिसका नाम जलनशील है, वह जल उठनेवाला ईश्वर है ही'' (निर्गमन 34:14)। परमेश्वर की जलन उसके प्रेम के कारण होती है। उसकी जलन मनुष्य को आशीष देने से सम्बन्धित होती है जबकि शारीरिक मनुष्य की जलन विनाशकारी हो सकती है और अक्सर विनाशकारी ही होती है।

आत्मिक मनुष्य की जलन भी प्रेम के कारण हो सकती है, जैसा कि पौलुस के मामले में हुआ। उसने अपने प्रिय भाइयों को ये शब्द लिखे:

> क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन [*zēloō*, ज़ेलू] (के साथ जलन रखता हूं, [*zēlos*, ज़ेलोस]) लगाए रहता हूं, इसलिए कि मैंने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं। परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई ओर पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएं। (2 कुरिन्थियों 11:2, 3; NASB-अनुवादक)।

जिस प्रकार से परमेश्वर की जलन हमेशा अपने लोगों की भलाई की खोज में रहती है वैसे ही पौलुस की जलन भी थी। स्पष्टतया यह परमेश्वर के आत्मा में ही से निकली थी, जो शैतान के दुष्ट उद्देश्यों को नाकाम बनाने के लिए पौलुस में काम कर रहा था।

परन्तु जब सांसारिक लोगों के मनों में जलन (या ईर्ष्या) होती है तो यह इरादे और असर दोनों में बुरी हो सकती है।[65] हो सकता है कि किसी के मन में ऐसी विशेषता, गुण या चीज़ की इच्छा हो जो कोई दूसरा व्यक्ति अपने ही भले के लिए चाह रहा हो। परिणाम नाराजगी और चिड़ हो सकता है।

सूची में अगली बुराई **क्रोध** (क्रोध के प्रकोप; NASB-अनुवादक) है जिसका अनुवाद (*thumos*, थुमोस) के बहुवचन रूप से किया गया है। अक्षरश: अनुवाद ''क्रोध'' या ''रोष'' (बहुवचन) होगा परन्तु हिन्दी में ऐसे अनुवाद उचित नहीं लगते। NASB में अंग्रेज़ी भाषा से मेल खाते शब्द के बहुवचन अर्थ को बरकरार रखते हुए बेहतरीन काम किया गया है। NIV में भी ''क्रोध के दौरे'' अनुवाद के साथ वही मानक प्राप्त कर लिया है।

नये नियम में *thumos* को आम तौर पर (*orgē*, ओरग) ''क्रोध'' या ''रोष'' के साथ जोड़ा जाता है। दोनों शब्दों में अंतर यह है कि *orgē* ''मन की टिकाऊ और स्थिर आदत'' को दिखाता है जबकि *thumos* (थुमोस) ''भावनाओं के उग्र आवेश यानी फसादी हंगामा'' है। यह ''अधिक जोशीला और साथ ही अधिक अस्थाई'' है।[66]

विरोध एक और बहुवचन शब्द का अनुवाद है जिसका एकवचन *eritheia* (एरिथिया) है। यह शब्द स्पष्ट रूप से (*erithos*, एरिथोस) से लिया गया है जो मूलतया ''दिहाड़ी मज़दूर'' को दर्शाता था। इससे मेल खाते क्रिया शब्द (*eritheuō*, एरियोस) का अर्थ है ''दिहाड़ी के लिए काम करना।'' ऐसा लगता है कि *eritheia* (एरिथिया) दिहाड़ी मज़दूर के ढंग, व्यवहार या स्वभाव को दिखाने के लिए बना था। यह स्पष्ट नहीं है कि यह शब्द सम्माननीय पेशे से निकला हो। फ्रेड्रिच बुशेल का मानना था कि यह शब्द इसलिए निकला क्योंकि घृणा करने

वाले रईस दिहाड़ी मजदूरों पर शक करते थे जिन्हें कमाई करने की अधिक ही चिंता रहती थी और केवल लाभ के लिए कुछ भी करने को तैयार होते थे। उसने और भी कहा कि *eritheia* (एरिथिया) शब्द खुदगर्ज़ों और वेश्याओं के व्यवहार को दर्शाने के लिए निकला था–''जो अपने आपको और अपने काम को गिराकर, अपने ही लाभ और फायदे के लिए अपने ही दिलचस्पियों में व्यस्त और सक्रिय थे।''[67] इस शब्द में दूसरों पर व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करने के लिए मुकाबला और कोशिश करने की बात लगती है। चौथी सदी ई.पू. में अरस्तु ने इसे ''अवैध तरीकों से राजनैतिक पद की चाह करने वालों'' के लिए इस्तेमाल किया।[68]

ऐसा व्यवहार किसी एक मसीही का, स्थानीय मण्डली के किसी समूह का, या संगठित कलीसियाओं का (जैसे गलातिया की कलीसिया का हो) इसके प्रभाव परमेश्वर के लोगों की शांति और सुलह के लिए हानिकारक ही होने थे। इन परिदृश्यों में अंतर केवल यह होना था कि उनका कितना प्रभाव पड़ता है। मसीही लोगों के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा और एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करना, दुख की बात है।

''विरोध'' का NASB का अनुवाद ''झगड़े'' संक्षिप्त नहीं लगता है। भाषा सम्बन्धी प्रमाण के अनुसार *eritheia* (एरिथिया) शब्द का जोर कार्य के बजाय असंगति और झगड़ों का कारण बनने वाले व्यवहार पर लगता है। अन्य वचनों में जहां यह शब्द एक वचन में मिलता है, NASB में इसका अनुवाद ''स्वार्थी अभिलाषा'' के रूप में हुआ है (फिलिप्पियों 1:17; याकूब 3:14, 16)। वर्तमान संदर्भ में जहां REB में इस शब्द का अनुवाद जहां ''स्वार्थी अभिलाषाएं'' हुआ है वहीं ESV में ''मुकाबले'' है। सही सही अनुवाद चाहे जो भी हो पर अपने आपको बढ़ावा देने और दूसरों के दम पर टिकने की स्वार्थी इच्छा जताने वाला मसीही व्यक्ति का कोई भी व्यवहार या कार्य नाराजगी और फूट का कारण ही बनेगा। यह मूर्खतापूर्ण ढंग से मसीह की सोच से अलग है (फिलिप्पियों 2:5-8)।

फूट शब्द (*dichostasia*, डिकोस्टेसिया) के बहुवचन को दर्शाता है और इसके अर्थ पर कोई संदेह नहीं है। अन्य संस्करणों में भी इसका अनुवाद ''कलह'' या ''झगड़े'' हुआ है (NRSV; NIV; REB; ESV)। नये नियम में यह शब्द केवल यहां और रोमियों 16:17 में मिलता है और यूनानी पुराने नियम के अपोक्रिफा (1 मकाबी 3:29) में एक बार मिलता है। इसका अनुवाद ''असहमति,'' ''विभाजन,'' ''अनबन,'' या ''विद्रोह'' तक भी हो सकता है। इस शब्द में पक्षपाती और कलहप्रिय के लिए झगड़ा करते रहने के अर्थ का बोध है। रोमियों 16:17 में इसका इस्तेमाल उन लोगों के लिए किया गया है जो ''फूट डालने'' या ''बटवारा करने'' का कारण बनते हैं (NKJV)। यह पाप इतना गम्भीर है कि इसे करने वालों से ''बचना'' आवश्यक है (NKJV), उन्हें कलीसिया के अनुशासन में लाना और पवित्र लोगों की संगति से निकाले जाना (अन्य शब्दों में ''संगति से निकाले जाना'') आवश्यक है।[69]

''फूट'' के बाद **विधर्म** शब्द आता है। यूनानी धर्मशास्त्र में (*hairesis*, हेयर्सिस) शब्द का बहुवचन रूप है जिससे अंग्रेज़ी शब्द ''heresy'' (हेयर्सी) शब्द निकला है। सम्बन्धित क्रिया (*haireomai*, हेरियोमय) है जिसका अर्थ है ''चुनना'' या ''प्राथमिकता देना।'' इसलिए *hairesis* (हेयर्सिस)शब्द ऐसी पसंद चुनने का संकेत देता है। अपने नकारात्मक अर्थ में यह शब्द कुछ हद तक पहले से पाई जाने वाली फूट को दिखाता है। 1 कुरिन्थियों 11:19 में इस शब्द

का इस्तेमाल इसी प्रकार किया गया हैं जहां हमें बताया गया है कि कलीसिया में ''दलबंदी'' पाई जाती थी। 2 पतरस 2:1 में *hairesis* (हेयर्सिस) कुछ झूठे शिक्षकों के मण्डराते खतरे को लाने के लिए बदलाव करने वाले के साथ मिलता है जिन्होंने ''नाश करने वाले पाखण्ड'' लेकर आने थे और ''उस स्वामी का जिसने उन्हें मोल लिया इनकार'' करना था। पतरस का *hairesis* (हेयर्सिस) के साथ विशेषण शब्द ''नाश करने वाले'' को जोड़ना दिखाता है कि हेरसिस शब्द हमेशा नकारात्मक अर्थ में नहीं होता था।[70]

अपने समय के यहूदी ''पंथों'' की चर्चा करते हुए पौलुस कई बार इस शब्द का इस्तेमाल तुलनात्मक रूप में तटस्थ ढंग से करता था। इनमें फरीसी, सदूकी और एसेनी लोग शामिल थे। असल में राजा अग्रिप्पा के सामने अपनी सफ़ाई में पौलुस ने खुलेआम मान लिया था कि वह पहले ''फरीसी होकर अपने धर्म के सबसे खरे पंथ पर चला'' (प्रेरितों 26:5)। परन्तु जब उस पर फेलिक्स के सामने ''*नासरियों के कुपंथ* का मुखिया'' होने का आरोप लगाया गया (प्रेरितों 24:5)। तो वह यह मानने को तैयार नहीं था कि वकील तिरतुलस द्वारा उसके लिए इस्तेमाल किया गया यह शब्द सही था। पौलुस ने सफ़ाई दी, ''जिस पन्थ को वे कुपन्थ कहते हैं, उसी की रीति पर मैं अपने बापदादों के परमेश्वर की सेवा करता हूं; और जो बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब पर विश्वास करता हूं'' (प्रेरितों 24:14)। कलीसिया के नये आत्मिक इस्राएल, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में अपने उच्च विचार के साथ वह इस विचार को (या इस प्रभाव को भी) मानने को तैयार नहीं था कि परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य का पृथ्वी का यह रूप यहूदी मत की विभाजित अवस्था में उसके साथ मुकाबला करने वाला दूसरा पक्ष था।

इन कुछ उदाहरणों से ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस के समय में यहूदियों द्वारा *hairesis* (हेयर्सिस) शब्द का इस्तेमाल विभिन्न धार्मिक दलों के लिए (धर्म की उनकी अलग अलग अवधारणाओं के साथ) उस अर्थ में लगाया होता था जो उनके लिए अहानिकारक तो था ही सामाजिक रूप में भी उन्हें स्वीकार्य था। परन्तु परमेश्वर की कलीसिया के संदर्भ में पौलुस के लिए *hairesis* (हेयर्सिस) के इस्तेमाल का संकेत नकारात्मक था। वह परमेश्वर की प्रिय प्रजा के लिए इसे अनुपयुक्त शब्द मानता था।

''विधर्म'' शरीर का एक काम हैं जो आत्मा में चलने वाले मसीही व्यक्ति की पहचान वाले व्यवहारों और कामों के बिल्कुल उलट है। बाद के समयों में यह शब्द ''डॉक्ट्रिन की गलती'' के अर्थ वाला मुख्य शब्द बन गया जो अंग्रेज़ी भाषा के शब्द ''heresy'' (हेयर्सी) से मिलता है।

आयत 21. इस सूची की और बुराइयों की तरह **डाह** शब्द बहुवचन यूनानी शब्द से निकला है। इसका एक वचन रूप *phthonos* (फथोनोस) है जो 5:20 में *zēlos* ''ईर्ष्या'' के शब्द के समान ही है। परन्तु (*phthonos*, फथोनोस) स्वार्थ के व्यवहार को इतनी बार दिखाता है कि यह दूसरे की हानि की इच्छा करता है। इसलिए कुछ शब्दकोषों में इस शब्द की परिभाषा ''द्वेष'' के रूप में हुई है। स्पष्टतया इस शब्द के साथ निश्चित रूप में द्वेषपूर्ण गुण जुड़ा हुआ है।

डाह के हानिकारक प्रभावों को अय्यूब 5:2 जैसे पुराने नियम के हवालों से समझाया जा सकता है। नया नियम डाह के दुष्ट स्वभाव और की गवाही देता है। 5:19-21 में इसके उपयोग के अलावा, ''डाह'' (*phthonos*, फथोनोस) पौलुस के पत्रों में से बुराई की तीन अन्य सूचियों

में भी मिलता है (रोमियों 1:29; 1 तीमुथियुस 6:4; तीतुस 3:3)।[71] इस शब्द की दुर्भावनापूर्ण झलक रोम में प्रचार करने के कुछ भाइयों के इरादे से स्पष्ट है, जहां पौलुस नज़रबंद था:

> कितने तो डाह [*phthonos*] और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं, ... और [वे] सीधाई से नहीं पर विरोध से मसीह की कथा सुनाते हैं, यह समझ कर कि कैद में मेरे लिए क्लेश उत्पन्न करें (फिलिप्पियों 1:15-17)।

सबसे तीखे उदाहरण में यहूदी अगुवे थे जिन्होंने अपनी "डाह" (*phthonos*) के कारण यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए पिलातुस के हाथ दे दिया था (मत्ती 27:17, 18; मरकुस 15:10)। यीशु को चाहे "परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया" था (प्रेरितों 2:23क), पर इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की सरगर्मी से चाहने वालों का अपराध कम हो जाता है। उन्होंने परमेश्वर के निर्मल और प्रिय पुत्र को क्यों सौंप दिया? डाह के कारण! और स्पष्टता से बताने का कोई और ढंग ही नहीं है कि यह बुराई कितनी बुरी हो सकती है।

4. उपद्रवी जीवन (5:21ख, ग)

वचन में **मतवालापन** का अनुवाद भी बहुवचन में लिया गया है। शब्द का शाब्दिक रूप *methē* (मेठे) है और नये नियम में और यह केवल लूका 21:34 और रोमियों 13:13 में मिलता है।

प्राचीन यूनानियों के बीच मदिरा आम तौर पर "सूखी" या "बिना पानी के" (*akratos*, अक्राटोस) नहीं पी जाती थी। यह प्रमाण है कि यूनानियों की मेज पर पीने की परम्परा में आम तौर पर एक भाग मदिरा में तीन भाग पानी के होते थे। उनके साहित्य में, मतवालेपन के खतरे को ध्यान में रखते हुए मदिरा के अधिक मात्रा में लिए जाने के इस्तेमाल के विरुद्ध कई चेतावनियां मिलती थीं। नये नियम में सूखी मदिरा पीने के एक हवाले का आनन्द करने या जश्न मनाने से कोई सम्बन्ध नहीं बल्कि परमेश्वर के क्रोध से है। यह "तो वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा [*akratos*] जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने, और [उपद्रवी] मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा" (प्रकाशितवाक्य 14:10)।

अमेरिकी संस्कृति में जो कि आरम्भिक नैतिकतावादी पूर्वजों के कैलविनवादी विश्वास से निकला लगता है, लोगों की आबादी का अधिकतर भाग अलकोहल युक्त पेय पदार्थों की बिक्री और पीने के विरोध में ही रहा है। 1919 और 1933 के बीच इस विरोध के कारण अलकोहल के पेय पदार्थों के निर्माण, ढुलाई और बिक्री पर कानूनी पाबंदी लग गई (चिकित्सकीय और धार्मिक उद्देश्यों के इस्तेमाल को छोड़)। यह कानून उस समय पास हुए थे जिन्हें अब "पाबंदी" का समय कहा जाता है। परन्तु समय बीतने के साथ यह साफ़ हो गया कि सामाजिक और व्यक्तिगत बुराइयों को केवल इस कानून जो इसके रचने वालों ने दूर करनी चाही थी, सुधारा नहीं जा सकता था, और यह कानून अपने आप रद्द हो गया।

न तो यीशु ने और न उसके प्रेरितों ने कभी मय या अन्य किसी किण्वित पेय को पीने की

मनाही की। असल में पौलुस ने तीमुथियुस को मय के चिकित्सकीय इस्तेमाल की सिफ़ारिश की: ''भविष्य में केवल जल ही का पीने वाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार बार बीमार होने के कारण थोड़ा थोड़ा दाखरस भी काम में लाया कर'' (1 तीमुथियुस 5:23)। तीमुथियुस को पौलुस की शिक्षा बहुत अच्छे कारणों से दी गई थी क्योंकि भूमध्य सागर के आस पास पानी शुद्ध नहीं था और पेट की समस्या का कारण बन सकता था।[72] थोड़ी मय (25 प्रतिशत) में इतना पानी मिलाने से पानी को शुद्ध करने और अलकोहल की मात्रा के आदी होने से बचने के रिस्क को कम करने के लिए मय को पतला करने के दो उद्देश्य पूरे होते थे। यह स्पष्ट है कि पौलुस को तीमुथियुस के पेट की समस्या के आराम की चिंता थी। प्राचीन यूनानियों के सांसारिक लेखकों की तरह नया नियम किसी भी चीज़ के अत्याधिक होने के विरुद्ध चेतावनी देता है (जैसे प्राचीनों और डीकनों के मामले में; 1 तीमुथियुस 3:3, 8; तीतुस 1:7)। परन्तु नये नियम में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और नाज़ीरी मन्नत से जुड़े वचनों को छोड़ कहीं भी कड़ाई से इससे परहेज की बात नहीं की गई।[73] शरीर के काम के रूप में मनाही मय के इस्तेमाल की नहीं बल्कि मतवालेपन से होने वाली बुराई की है।

मय पीने के सम्बन्ध में एक और विचार दूसरों के विवेक को ठोकर दिलाने से सम्बन्धित था। मसीह में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के संदर्भ में पौलुस ने निर्देश दिया:

> भोजन के लिये परमेश्वर का काम न बिगाड़। सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिये बुरा है जिसको उसके भोजन से ठोकर लगती है। भला तो यह है कि तू न मांस खाए और न दाखरस पीए, न और कुछ ऐसा करे जिससे तेरा भाई ठोकर खाए (रोमियों 14:20, 21; NIV)।

एक अन्य अवसर पर प्रेरित ने यह भी लिखा:

> सो तुम चाहे खाओ, चाहे पिओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो। तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिए ठोकर के कारण बनो। जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूं, और अपना नहीं, परन्तु बहुतों का लाभ ढूंढ़ता हूं, कि वे उद्धार पाएं (1 कुरिन्थियों 10:31-33)।

एक विश्वासी के लिए अपने किसी भी व्यवहार से दूसरे को ठोकर दिलाना, जिससे कोई पाप में गिर सकता हो, कोई छोटी बात नहीं है (1 कुरिन्थियों 8:1-13)। ऐसे व्यवहार में शामिल होना जो किसी परिस्थिति के कारण अपने आप में स्वीकार्य हो पर फिर भी किसी दूसरे व्यक्ति के लिए आत्मिक रूप में विनाशकारी हो सकता हो। ऐसी परिस्थितियों में ऐसी किसी गतिविधि में शामिल होना प्रभु के विरुद्ध भयंकर पाप करवा सकता है और संसार में उसके आने के उद्देश्य को भी बिगाड़ सकता है!

लीलाक्रीड़ा *kōmos* (कोमोस) शब्द के बहुवचन रूप से निकला है जिसका अनुवाद ''अत्याधिक दावत देना,'' ''ऐश,'' या ''भोगविलास'' भी हो सकता है। इसका बहुवचन रूप ''ऐशों'' (NKJV) और ''भोग विलासों'' (NIV) अनुवादों से स्पष्ट होता है। नये नियम में यह शब्द दो और बार रोमियों 13:13 और 1 पतरस 4:3 में मिलता है, वहां भी इसका सम्बन्ध

''पियक्कड़पन'' और ''लुचपन'' से है।

Kōmos शब्द की उत्पत्ति उत्सवी समूह के लिए हुई हो सकती है जो आवश्यक नहीं कि शराबी या उपद्रवी हो। बाउर की लैक्सिकन में कहा गया है कि इस शब्द का इस्तेमाल ''डायोनेसिस [मदिरा का देवता] के सम्मान में उत्सव के जलूस'' और ''उसके बाद आनन्दमयी भोजन या दावत'' के लिए किया जाता था।[74] परन्तु शाम होते होते ऐसी दावतें आम तौर पर शराबी होने और मद्यपान में बदल जातीं। देर रात में, मदहोश आदमी ''अपने सिरों पर हार लेकर, और अपने हाथों में मशालें लेकर, चिल्लाते और गाते हुए ... वेश्याओं के घरों के पास से गुजरते, या गलियों में इधर-उधर घूमते, जो भी उन्हें [मिलता] उसका अपमान करते या अश्लील व्यवहार करते।''[75] विलियम एम. रैमसे ने कहा है कि यूनानियों के बीच, ''कोमोस अर्थात रंगरलियां, देवता बन गया था, और उनके रीति रिवाज बड़े ही व्यवस्थित ढंग से होते थे, और फिर भी यूनानी दिमाग की चतुराई और कल्पनाशीलता के साथ, निरन्तर नवीनता और विविधता को रंगरलियों में बदल देती।'' [76]

समापन और चेतावनी (5:21घ)

इस सूची में केवल पाप के दायरे को दिखाया गया है। पौलुस ने अपनी सूची को **और इनके जैसे और-और काम हैं** वाक्यांश के साथ समाप्त कर दिया। पौलुस के पत्रों[77] और इलहाम से लिखने वाले अन्य लेखकों के लेखों में नये नियम में बताए शरीर के कई काम बताए गए हैं।[78]

ऐसी सूचियां केवल नये नियम में नहीं हैं। वे यहूदी और काफिर दोनों के नीति उपदेशकों में आम थी जो ऐसे संसार में जो नैतिक रूप में भ्रष्ट हो चुका था, सदगुण लाने का प्रयास करते थे। 5:19-21 में पौलुस की सूची गलातिया के भाइयों के विशेष आवश्यकता की बात करते हुए, मसीही लोगों के लिए थी।[79]

पौलुस ने अपनी अगली बात **इनके विषय में मैं तुम से पहले से कह देता हूं** वाक्यांश के साथ आरम्भ किया। *Prolegō* का अनुवाद ''पहले से कह देता'' यूनानी शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है ''पहले कह देना'' या ''पहले बता देना।'' दोनों ही संदर्भों में उसके संदेश में गम्भीर चेतावनी थी। वह इस समय उन्हें शरीर के बुरे कामों से बचाने के लिए (अपने पत्र के द्वारा) वैसे ही समझा रहा था जैसे वह पहले (जब उनके बीच था) सिखाता था।

पौलुस के संदेश का सार चाहे यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना था (1 कुरिन्थियों 15:3, 4) परन्तु प्रेरित ने निश्चित रूप में गलातियों को मन फिराव तक लाने के लिए बुनियादी नैतिकता भी सिखाई थी। इसके अलावा वह और बरनबास सीरिया के अंताकिया में अपनी वापसी के समय इन मण्डलियों के बीच दोबारा गए थे। हर जगह वे ''चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह कहते थे, हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा'' (प्रेरितों 14:22)। पौलुस उन्हें पहले से बताते हुए कि वे क्या उम्मीद रखें, आवश्यकता के अनुसार न केवल सताव और शिष्यता के दाम के चेने बनने के मोल के बारे में ऐसे नैतिक निर्देश देता था, बल्कि यह भी बताता है कि परमेश्वर की संतान के रूप में कैसे रहना है। ऐसा करते हुए वह उन्हें आज्ञा न मानने और अविश्वासी हो जाने के भयंकर परिणामों को भी बताता था।

पौलुस का बार बार यही संदेश होता था **कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के**

राज्य के वारिस न होंगे। अविश्वासियों पर जो परिणाम हो सकते थे उनमें से यह निश्चित रूप में सबसे बुरा था। अपश्चात्तापी पापी स्वर्ग की महिमा और प्रभु और उसके छुड़ाए हुओं की उपस्थिति में अनन्त जीवन से वंचित हो रहे हैं।

''आत्मा का फल'' (5:22, 23)

[22]पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, [23]नम्रता, और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

गलातियों के पत्र का इस भाग का विषय मसीही व्यक्ति का आत्मा में चलना है इस कारण अध्याय 5 का उपयुक्त निष्कर्ष आत्मा के फल का विस्तृत विवरण है।

आयतें 22, 23. पर (*de*) विरोधवाची का काम करता है और बाद में आने वाले को पहले आने वाले से अलग करता है। कुछ उदाहरणों में *de* थोड़ा या बिल्कुल अंतर नहीं दिखाता और इसका अनुवाद समुच्चय बोधक ''और'' के साथ होता है। यहां पर एक महत्वपूर्ण अंतर होता है, इसलिए उपयुक्त अनुवाद ''परन्तु'' है। **आत्मा का फल** (*ho karpos tou pneumatos*) को बढ़ावा देने के लिए पौलुस ''शरीर के काम'' (5:19) की चेतावनी की ओर मुड़ गया। बुराइयों के बजाय वह गुणों की बात करने लगा।

पेड़ को उसकी किसम के अनुसार फल लगता है।[80] आदम और हव्वा के पाप में गिरने के बाद से मनुष्य ''शरीर के काम'' ही करता जा रहा है जो शारीरिक और सांसारिक हैं। बाइबल के इतिहास के आरम्भ के निकट परमेश्वर ने मनुष्य की सारी बुराई को देखा और पाया कि ''उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है सो निरन्तर बुरा ही होता है।'' उसे पछतावा भी हुआ कि उसने मनुष्य को पृथ्वी पर बनाया है और ''वह मन में अति खेदित हुआ'' (उत्पत्ति 6:5, 6)। परमेश्वर ने कहा, ''मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों विवाद करता न रहेगा, क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है'' (उत्पत्ति 6:3)।

परमेश्वर का पवित्र आत्मा उसकी सृष्टि की सर्वोच्च महिमा को देख नहीं पाया जिसे उसने अपने स्वरूप पर बनाया गया था, वह पाप के अथाह गड्हे में इतना नीचे नीचे धंसता जा रहा था। उसे मनुष्य को दुष्टता की अपनी ही लालसाओं में लगातार फंसने को और उसके लिए परमेश्वर द्वारा चाही गई स्थिति यानी उस महिमा को त्यागने को देखकर जिसके लिए उसे आरम्भ में बनाया गया था, दुख हुआ।[81] उत्पत्ति 6:3 में हमें ''शरीर'' (*baśar, sarx*) और ''आत्मा'' (*ruach, pneuma*) के बीच पाई जाने वाली शत्रुता के सम्बन्ध में पवित्र शास्त्र में पहला विवरण है।

गलातियों 5 में इस तनाव को देखा जा सकता है। यह ''शरीर के कामों'' से ''आत्मा का फल'' की पौलुस की तुलना में ही नहीं (5:19–23), बल्कि 5:17 में उसके विवरण में भी मिलता है: ''क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।''

''आत्मा का फल'' परमेश्वर द्वारा उन लोगों को दी गई योग्यताओं को कहा गया है जो सुसमाचार के आज्ञाकार हैं। जब लोग यीशु के सुसमाचार को सुनते हैं तो अपने पापी होने की

गम्भीरता और परमेश्वर के प्रेम के परिमाण को मान लेते हैं। उसने अपने प्रेम को पाप की अभिव्यक्ति बनाने के लिए क्रूस पर बलिदान होने के लिए अपने पुत्र को भेजकर दिखाया, ताकि जो लोग यीशु मसीह में विश्वास लाएं वे ''उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)। यह समझ आने पर कि उस दिन क्या घटित हुआ था, जब पूरा मानवीय इतिहास चरम को पहुंच गया था, सुसमाचार सुनने वाले विश्वास करने के लिए मजबूर होते हैं। फिर वे उसी आज्ञा के आगे समर्पण करते हैं जो पतरस ने उन यहूदियों को दी थी जिन्होंने पिन्तेकुस्त के दिन उन पर विश्वास किया था: ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। ''मन फिराने'' का अर्थ ''अपने जीवन की दिशा को बदल लेना'' है यानी अपने जीवन के प्रभु के रूप में यीशु को स्वीकार करते हुए परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करना आवश्यक है। ''बपतिस्मा ले'' के लिए शब्द *baptizō* (बैपटिज़ो) का अक्षरश: अर्थ है ''डुबकी लेना।'' बपतिस्मा पानी में दफ़न होना है जिसमें पश्चात्तापी विश्वासी ने मसीह के उद्धार दिलाने वाले लहू के द्वारा अपने पापों को धो दिया है।[82]

पापों की क्षमा के अलावा, सुसमाचार की आज्ञा मानने वालों को आत्मा के वास के दान का वायदा भी दिया जाता है। प्रेरितों 2:39 के अनुसार यह दान केवल पिन्तेकुस्त के दिन वहां ''भक्त यहूदी'' लोगों (प्रेरितों 2:5) तक ही सीमित नहीं था बल्कि इसमें उनकी ''संतानों'' और ''सब दूर दूर के लोगों'' ने भी शामिल होना था। आत्मा का वास हर किसी को जो सुसमाचार की आज्ञा मानता है चाहे वह यहूदी हो या अन्यजाति, दिया जाता है।[83]

हम तो केवल मिट्टी के बर्तन हैं जो परमेश्वर के आत्मा के भेदों को और वह कैसे काम करता है, नहीं समझ सकते। जो कुछ वचन सिखाता है (हम उसे समझ सकें या नहीं) वह सच है कि हमारे परमेश्वर का पवित्र आत्मा परमेश्वर के दिए हुए दान के रूप में मसीही व्यक्ति के शरीर में वास करता है। इससे इनकार नहीं किया जा सकता। इसके अलावा इस पर कोई संदेह नहीं है कि जो भी व्यक्ति अपने स्वयं की इच्छा को परमेश्वर पिता की इच्छा के आगे समर्पित करते हुए विश्वास करके परमेश्वर की आज्ञा को मान लेता है उसमें वह बदलाव आता है जो परमेश्वर की संतान बनने से मिलता है (3:26-29)। वह परमेश्वर के पुत्र यीशु के स्वरूप में दिन-ब-दिन ढलता जाएगा। इस प्रकार वह प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम जिन्हें पौलुस ने ''आत्मा का फल'' कहा इन गुणों को दिखाता है।

1. **प्रेम** (*agapē*) सदगुणों की इस शानदार सूची के आरम्भ में आता है।[84] यह यूनानी भाषा में बताए गए प्रेम की चार किसमों में से एक है। असल में *agapē* प्रेम का उच्चतम रूप है जो स्वयं परमेश्वर से निकलता है। यूहन्ना ने यह लिखते समय कि ''जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उसको हम जान गए, और हमें उसकी प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम है: और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर उसमें बना रहता है। ... हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हमसे प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:16-19)। कई बार सम्बन्धित क्रिया शब्द *agapaō* के साथ इस संज्ञा का इस्तेमाल किया।

Agapē केवल प्रियजनों के लिए लगाव से आगे होगा। यह दूसरों के चाहे वह शत्रु ही क्यों न हों, कल्याण करने के लिए कार्य करता है। यीशु ने अपने चेलों को सिखाया:

> तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, ''अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर।'' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो, जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है। क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा? क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते? यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते? इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है (मत्ती 5:43-48)।

परमेश्वर हर किसी की भलाई के लिए काम करता है, चाहे वह उसके शत्रु (''अधर्मी लोग'') ही क्यों न हो। उसकी संतान को भी भलाई करने को कहा गया है।

विभाजित कलीसिया के बीच एकता को बढ़ावा देने के लिए पौलुस ने कुरिन्थियों के लिए *agapē* प्रेम के नि:स्वार्थ होने का वर्णन किया:

> प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं (कुरिन्थियों 13:4-8क)।

इसके अलावा *agapē* परोपकारी और करूणामय है। प्रेम की यह विशेषताएं यीशु के स्वभाव में थी जो दूसरों की सेवा करते हुए करुणा से भर जाता था (मत्ती 9:36; 14:14; 15:32; 20:34)। इसके अलावा जैसा कि पतरस ने अपने पाठकों को समझाया, *agapē* का सर्वदा पवित्र होना आवश्यक है:

> अत: जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट [कपट रहित] प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुम ने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है (1 पतरस 1:22, 23)।

यह प्रेम नये जन्म का फल है, या पौलुस की भाषा में कहें तो यह ''आत्मा का फल'' है। असल में यह परमेश्वर द्वारा अपनी संतान के लिए उपलब्ध करवाए गए आत्मिक गुणों में से सबसे बड़ा और सबसे ऊंचा है। यह अतुलनीय रूप में उन अस्थाई करिश्माई दानों से बड़ा है जिनकी बात पौलुस ने कुरिन्थियों के पत्र में की। यह विश्वास और आशा से भी बड़ा है (1 कुरिन्थियों 13:13)।

2. आत्मा का अगला फल **आनन्द** (*chara*) है। यह हो सकता है कि आनन्द की अवधारणा मसीही परिपक्वता की विशेषता के रूप में कई बार नज़रअंदाज़ कर दी जाए। पुराने

नियम में भी, आनन्द परमेश्वर के लोगों की प्रमुख विशेषता थी। तो फिर मसीह में मिलने वाले छुटकारे को पाने के बाद नई वाचा के लोगों को और कितना अधिक आनन्द मिलना चाहिए।

Chara (चारा), प्रसन्नता, खुशी, या सुख के विचार को व्यक्त करती एक संज्ञा है। इसका मेल खाता क्रिया रूप *chairō* है, जिसका अर्थ है ''आनन्द करना'' या ''प्रसन्न होना।'' सप्तति (LXX) तथा नये नियम दोनों में आनन्द की भावनाओं को व्यक्त करने वाले तीन अन्य प्रमुख यूनानी शब्द हैं *agalliasis*, जिसका अर्थ ''अत्याधिक आनन्द या खुशी,'' *makarismos*, जो ''खुशी'' या ''आशीष'' को दर्शाता है; और *euphrosunē*, जिसका अर्थ ''आनन्द'' या ''प्रसन्नता'' है। शब्दों की यहूदी शब्द सूची जो इन विचारों या भावनाओं को व्यक्त करती है बहुत बड़ी है। असल में सप्तति अनुवाद (LXX) में कई इब्रानी शब्दों को इसी यूनानी शब्द के द्वारा अनुवाद किया जा सकता है।

आनन्द मसीही व्यक्ति की आंतरिक विशेषता होनी चाहिए जो परमेश्वर के राज्य का नागरिक है। जब रोम में पौलुस के भाइयों के बीच शुद्ध/अशुद्ध भोजनों और विशेष दिनों के पर्वों पर झगड़े हो रहे थे तो उसने उन्हें समझाया, ''परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, परन्तु धार्मिकता और मेल-मिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है'' (रोमियों 14:17; NIV)। बाद में उसने ''आनन्द'' पर ज़ोर देते हुए अपने प्रिय फिलिप्पियों को लिखा। उसने उन्हें बार-बार समझाया कि ''प्रभु में आनन्दित'' रहो। और प्रेम से उन्हें अपने ''आनन्द और मुकुट'' कहा (फिलिप्पियों 3:1; 4:1, 4)। पौलुस ने चाहे ''आनन्द'' के लिए किसी विशेष शब्द का इस्तेमाल नहीं किया पर उसके लेख कई बार उमंग में फूट पड़ते हैं। उदाहरण के लिए परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव और उसके उद्धार दिलाने वाले सुसमाचार पर विचार करते हुए प्रेरित पुकार उठा, ''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!'' (रोमियों 11:33)।

प्रभु में ऐसा आनन्द करना परमेश्वर की संतान के लिए जिसने दिल से यीशु को अपने छुड़ाने वाले के रूप में माना है और परमेश्वर के दान की आशीष पाई है, स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। मसीही व्यक्ति इस आनन्द को बुरी से बुरी परिस्थिति में भी बरकरार रख सकता है। पौलुस और सीलास द्वारा दूसरी मिशनरी यात्रा के समय इसी नियम को समझाया गया। बेंतों से पिटाई होने के बाद, मसीह के इन दोनों दूतों ने अपने आपको फिलिप्पे की जेल में पाया। उनके पांव चाहे काठ में ठोके गए थे और उनकी पीठें कुछ घण्टे पहले हुई उनकी पिटाई के कारण दर्द कर रही थीं, पर ये दोनों आधी रात को ''परमेश्वर के भजन गा रहे थे'' (प्रेरितों 16:22-25)। उनकी शारीरिक पीड़ा बहुत अधिक थी पर उनके मनों से आनन्द को निकाला नहीं जा सकता था। वे यीशु मसीह के उपदेश को ले जाने के लिए पूरी वफ़ादारी से लगे हुए थे, जिसके उद्देश्य के लिए उन्हें इल्हाम के द्वारा बुलाया गया था।

पौलुस और सीलास हम सब के लिए सराहनीय नमूनों का काम करते हैं। निष्ठा ने मसीह के लिए इन दूतों के मनों को भर दिया था। इतनी पीड़ा और कष्ट के बीच में भी उन्हें बिना किसी शक के ऐसा आनन्द मिला था। जैसा कि बहुत से सुसमाचार प्रचारकों ने अनुभवों के द्वारा सीखा है कि मसीह के द्वारा उद्धार को जानने के लिए एक कीमती आत्मा को लाने के लिए मसीह के दीन सेवक के रूप में काम करने में मिलने वाले आनन्द से बड़ा आनन्द कोई नहीं है। असल

में यह आनन्द यीशु का है, ''जिसने उस आनन्द [*chara*] के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस पर दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने ओर जा बैठा'' (इब्रानियों 12:2; NRSV)।

3. ''प्रेम'' और ''आनन्द'' के बाद **शांति** (*eirēnē*) आता है। जैसा कि पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई थी, परमेश्वर के राज्य की विशेष बात ''शांति'' का होना था। यशायाह 52:7 में सुसमाचार, शांति और उद्धार आपस में गुथे हुए हैं:

> पहाड़ों पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं जो शुभ समाचार लाता है, जो शान्ति की बातें सुनाता है और कल्याण का शुभ समाचार और उद्धार का सन्देश देता है, जो सिय्योन से कहता है, ''तेरा परमेश्वर राज्य करता है।''

यशायाह ने आने वाले मसीहा को ''शांति का राजकुमार'' कहा (यशायाह 9:6)।

उद्धारकर्त्ता के जन्म के समय परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने कुछ चरवाहों को जो रात के समय अपने झुण्डों की रखवाली कर रहे थे, आनन्द भरा समाचार दिया। एक स्वर्गीय दल प्रगट हुआ, ''आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है, शान्ति हो'' (लूका 2:13, 14)। यूनानी धर्मशास्त्र में मूलतया ''अच्छी भावनाओं वाले मनुष्यों के बीच'' (*en anthrōpois eudokias*) है। नेकनीयत लोगों के लिए इससे बड़ा आनन्द और शांति नहीं हो सकती थी। अपनी मृत्यु और जी उठने के द्वारा यीशु ने परमेश्वर के साथ मिलाप की पेशकश करनी थी। परन्तु दुष्ट लोग इस बड़े दान का जवाब नाराज़गी, ठुकराने और घृणा से ही दे सकते थे। मसीह के प्रति यह अलग अलग प्रतिक्रियाएं मत्ती 10:34-36 में उसकी बात के आधार का काम करती हैं:

> यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप [*eirēnē*] कराने आया हूं; मैं मिलाप कराने नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं। मैं तो आया हूं कि: मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं; मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे।

विश्वासी मसीहियों के लिए, मसीह भीतरी शांति लेकर आता है। जब यीशु इस तथ्य के लिए, अपने चेलों को तैयार कर रहा था कि वह उन्हें छोड़कर पिता के पास वापस जाने वाला है, तो उसने उन्हें आश्वस्त किया कि उन्हें अकेले नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने उनके लिए एक और सहायक या शांति दिलाने वाला देना था। उसने उस शांति के बारे में भी बताया जो उन्हें दी जाने वाली थी: ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे'' (यूहन्ना 14:27)। जो शांति यीशु देता है वह उसमें और उसके वचन में भरोसा करने के आधार पर होती है। यह मन की शांति है (मत्ती 11:28-30)।

कुरनेलियुस के परिवार को पतरस ने बताया कि परमेश्वर ने किस प्रकार से अपना वचन ''इस्राएलियों के पास भेजा, जब उसने यीशु मसीह के द्वारा शान्ति का सुसमाचार सुनाया'' (प्रेरितों 10:36)। फिर उसने इन अन्यजातियों को सुसमाचार दिया ताकि उन्हें भी परमेश्वर के

साथ इस मिलाप का आनन्द पाने का अवसर मिल सके (प्रेरितों 10:37-48)। जिन लोगों ने मसीह पर विश्वास कर लिया है और बपतिस्मे में उसके साथ एक हो गए हैं, वे चाहे यहूदी हों या अन्यजाति, उनकी परमेश्वर के साथ या एक दूसरे के साथ सुलह यानी शांति हो गई है (गलातियों 3:26-29)। इफिसियों 2:14-19 में पौलुस ने भी यही बताया। ''शांति'' की मसीही अवधारणा इतनी महत्वपूर्ण है कि इसने पौलुस के पत्रों की अभिव्यक्तियों को प्रभावित किया (देखें गलातियों 1:3)। ''शांति या सलाम'' उन बड़े से बड़े नमस्कारों में से एक है जो हम एक दूसरे को दे सकते हैं।

शारीरिक कामों के विरुद्ध बात करने के बाद (5:16-21), पौलुस तुरन्त उन सकारात्मक गुणों की ओर मुड़ गया जो मसीही लोगों को पवित्र आत्मा की अगुआई के द्वारा अपने जीवनों में बढ़ाने चाहिए। प्रेम, आनन्द, शांति के सदगुणों की बात करने के बाद उसने सूची को आगे बढ़ाया।

4. आत्मा के फल में **धीरज** (*makrothumia*) भी शामिल है। इस मिश्रित शब्द का पहला भाग *makros* है जिसका अर्थ ''अपेक्षाकृत लम्बा समय'' या ''अपेक्षाकृत दूर, *बहुत* दूर'' होना है।[85] दूसरा भाग संज्ञा शब्द *thumos* से निकला है जिसका अर्थ ''धुन'' या ''आवेशपूर्ण बेकरारी'' से ''क्रोध,'' ''रोष,'' और यहां तक कि ''प्रकोप'' तक भी है।[86] यह मन या स्वभाव की व्यवस्था को दिखाता है। मूल में दोनों शब्दों को मिलाए जाने पर शायद वह ''क्रोध करने में धीमा'' होने का अर्थ देते हैं (देखें निर्गमन 34:6; नीतिवचन 19:11; LXX)। समय के साथ इन शब्दों का अर्थ अलग-अलग हो गया। बाउर के लैक्सिकन में *makrothumia* की परिभाषा ''धैर्य, दृढ़ता, धीरज'' हो सकती है।[87] यह शब्द लम्बे समय तक जब प्रतीक्षा करना कठिन हो और धीरज की परीक्षा हो रही हो, तब डटे रहने का संकेत देता है। KJV में ''धैर्यवंत'' है जिसमें यूनानी शब्द में समाया समय का तत्व है। धीरज एक आत्मिक फल है जिससे परमेश्वर तो प्रसन्न होता ही है, दूसरों को आशीष भी मिलती है।[88] यह पवित्र आत्मा की यानी स्वयं परमेश्वर की और पुत्र यीशु मसीह की खूबी है।[89]

सम्बन्धित क्रिया शब्द *makrothumeō* ''लम्बी सोच'' या ''लम्बे संयम'' होने का विचार देता है। यह किसी चीज़ के लिए जिसमें दबाव या तनाव हो प्रतीक्षा करते हुए भी शांत रहकर संयम रखने वाले मन की स्थिति को दिखाता है। तनाव, चाहे वह धमकी हो, खतरा या गहरी चिंता, इस योग्यता को परीक्षा में डालता है। जिस व्यक्ति में *makrothumia* है उसमें सामान्य स्तर से बढ़कर सहने के लिए भावनात्मक शक्ति और स्थिरता है (देखें इब्रानियों 6:13-15; याकूब 5:7, 8)।

नये नियम में ''धीरज'' के लिए दो और शब्द समूह मिलते हैं। एक ''सहनशीलता,'' ''रहम'' या ''सहिष्णुता'' की अवधारणा के साथ *anochē* है। नये नियम में यह केवल दो बार रोमियों 2:4 और 3:25 में मिलता है। दोनों जगह यह शब्द परमेश्वर के स्वभाव को दिखाते हैं। परन्तु इसका क्रिया रूप *anechō* नये नियम में पंद्रह बार मिलता है जिसमें अधिकतर बार यह मसीही लोगों से सम्बन्धित है। इसका अर्थ ''सहना,'' ''के साथ सहनशील होना,'' ''साथ देना,'' ''सहारना'' या ''बर्दाश्त करना'' है।[90]

दूसरे शब्द समूह में संज्ञा शब्द *hupomonē* शामिल है। यह दो यूनानी शब्दों से बना

है जिसमें पूर्वसर्ग *hupo* (''के अंदर,'' ''के नीचे,'' या ''से नीचे'') और क्रिया *menō,* (''टिकना'' या ''ठहराना'') हैं। इससे मिलने वाला विचार कठिन परिस्थितियों ''में दृढ़ बने रहना'' है। प्राचीन काल्पनिक व्यक्ति ऐटलस के अपने कंधों पर संसार का विशाल बोझ उठाए हुए होने की तरह यह शब्द भारी बोझ सहते हुए दबाव के अधीन खड़े रहने, हठ या हठी होने की उपमा को दिखाता है। इससे मेल खाते क्रिया शब्द *hupomenō* का अर्थ है, ''टिके रहना,'' ''फैलाना,'' ''टिकना।''[91]

मसीही धीरज की प्रेरणा प्रेम (1 कुरिन्थियों 13:4) और मसीह के द्वितीय आगमन की आशा से (1 थिस्सलुनीकियों 1:2, 3) मिलती है। यह यीशु के नमूने पर आधारित है जिसने ''परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर'' ऊंचा किए जाने से पहले धीरज से ''क्रूस का दुख सहा'' और इसकी ''लज्जा'' को सहा (इब्रानियों 12:2)। इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को चेताया कि ''उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों का इतना वाद-विवाद सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो'' (इब्रानियों 12:3)। पौलुस ने यह पुन: आश्वासन दिया: ''यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे'' (2 तीमुथियुस 2:12क)।

5. सदगुणों की इस सूची में **कृपा** (*chrēstotēs*) है जिसकी परिभाषा ''ईमानदारी,'' ''दयालता,'' और ''उदारता'' के रूप में भी दी जा सकती है।[92] यह संज्ञा शब्द नये नियम में केवल आठ बार मिलता है और यह आठों बार पौलुस के पत्रों में ही है। इनमें से चार परमेश्वर की ''कृपा'' के सम्बन्ध में है जिससे मनुष्यजाति के लिए मन फिराव और उद्धार का द्वार खुला है।[93] अन्य चार में उस खूबी को बताया गया है जो परमेश्वर की नकल करते हुए हर मसीही में होनी चाहिए।[94]

Chrēstotēs (ख्रेस्टोटस) और इसके सजातीय शब्द उस कोमल स्वभाव का संकेत देते हैं जो दूसरों के प्रति कृपालु है। मन से अच्छे होने के कारण मसीही लोग जरूरतमंदों के प्रति और उदार और उनकी सहायता करने वाले होने चाहिए। कैसलस स्पिक ने लिखा है, ''मसीही व्यक्ति हमेशा मन भावन तरीके से, वह भी मुस्कुराते हुए उपयोगी, महत्वपूर्ण, सहायक, उपकार करने वाला बनने की चाह में, भाईचारे के सम्बन्धों में नाजुक और उदार दोनों है।''[95]

1 कुरिन्थियों 13:4 में ''प्रेम'' की पौलुस की परिभाषा में धीरज के साथ कृपालु होना शामिल है। एक और जगह उसने लिखा, ''इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो'' (कुलुस्सियों 3:12)।

6. ''कृपा'' (*chrēstotēs*) के बाद **भलाई** (*agathōsunē*) आता है। इन दोनों शब्दों के बीच क्या अंतर है? इस प्रश्न का उत्तर कठिन है क्योंकि यूनानी के प्राचीन साहित्य में *agathōsunē* नहीं मिलता जिसका इस्तेमाल आम तौर पर शब्दों के अर्थ तय करने के लिए किया जाता है।[96]

Agathōsunē नये नियम में केवल चार बार मिलता है और चारों बार पौलुस के लेखों में है। पहले यह यहां आत्मा के फल के भाग में मिलता है। प्रेरित ने देखा कि रोम के भाई ''भलाई से भरे और ईश्वरीय ज्ञान से भरपूर [थे], और एक दूसरे को चिता सकते'' थे (रोमियों 15:14)।

इफिसियों 5:9 में ''भलाई'' को ''ज्योति का फल'' की सूची में रखा गया है। 2 थिस्सलुनीकियों 1:11 में पौलुस की प्रार्थना थी कि परमेश्वर भाइयों को उनकी बुलाहट के योग्य समझे और ''हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ सहित पूरा करे।''

Agathōsunē शब्द नये नियम में चाहे बहुत कम मिलता है पर सप्तति (LXX) में इसका इस्तेमाल कई बार हुआ है जहां यह इब्रानी शब्द *tob* और अपने सजातीय शब्द का अनुवाद है। इन शब्दों का सम्बन्ध उससे है जो ''मनोहर'' या ''मनपसंद'' है।[97] सम्बन्धित *agathos* (''अच्छा'') नये नियम में और सप्तति (LXX) दोनों में मिलता है।

भलाई के विलक्षण गुण को समझाने के प्रयास में लाइटफुट ने कहा कि *chrēstotēs* ''एक दयालु स्वभाव'' है जबकि *agathōsunē* ''क्रियाशील नियम'' है।[98] अन्य शब्दों में ''कृपा'' *भीतरी, परोपकारी गुण* है जो अपने पड़ोसी की भलाई चाहता है, जबकि ''भलाई'' अपने पड़ोसी की बेहतरी के लिए अंत में की जाने वाली *बाहरी अभिव्यक्ति* (चाहे यह कृपालु लगे या न) है। कोई इस अंतर पर बेशक सवाल कर सकता है परन्तु टरेंच द्वारा इसे बखूबी समझाया गया था, जिसने लिखा, ''एक व्यक्ति डांटने, सुधारने, ताड़ना करने में भलाई और सच्चाई के लिए अपनी धुन अर्थात अपने [*agathōsunē*] को दिखा सकता है।'' उसने मसीह के मन्दिर में से कारोबारियों को निकालने (मत्ती 21:12, 13) और बाद में शास्त्रियों और फरीसियों को डांटने की बात की (मत्ती 23)। परन्तु इस धर्मी नाराज़गी के कार्यों को *chrēstotēs* के रूप में वर्णित नहीं किया जाएगा। इसके बजाय वह सदगुण यीशु के पश्चात्तापी स्त्री को करुणापूर्ण स्वीकार करने में दिखाया गया था (लूका 7:37-50)।[99] ट्रेंच ने किसी भी प्रकार ''भलाई को जिसका कोई सिरा नहीं है, जिसमें कोई तीखापन नहीं है, जिसमें पाप के विरुद्ध कोई धर्मी नाराज़गी नहीं है, इसे दण्ड देने की कोई इच्छा नहीं है'' कोई अनुमति नहीं दी।[100] ''भलाई'' अंत में और केवल उसी के द्वारा तय होती है जिसे परमेश्वर अच्छा मानता है।

7. आत्मा के फल में आगे **विश्वास** (*pistis*, पिस्टिस) आता है। नये नियम में सामान्य उपयोग में इस शब्द का अर्थ ''विश्वास,'' ''प्रतीति'' या ''भरोसा'' है। परन्तु कई जगह यह उस अर्थ में मिलता है जो भरोसे को उत्पन्न करता है यानी ''विश्वसनीयता'' और ''विश्वासपात्रता।'' यह अर्थ LXX से प्रभावित है जिसमें इब्रानी शब्द (*'emunah*) का अनुवाद करने के लिए *pistis* का इस्तेमाल किया गया है। भजन 36:5ख में यही बात है जो परमेश्वर के लिए कहता है ''तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची।'' इसी प्रकार से नीतिवचन 12:22 कहता है ''झूठे होठों से यहोवा को घृणा आती है परन्तु जो वफ़ादारी से काम करते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है'' (NRSV)।

अन्य बहुत से वचनों के साथ साथ भजन भजन 36:5 जोर देता है कि हम परमेश्वर पर सदा निर्भर हो सकते हैं। वह ''झूठ बोल नहीं सकता'' (तीतुस 1:2)। उसका वचन पूरी तरह से भरोसे के योग्य है; हम उसकी किसी भी कही बात को सच मान सकते हैं। परमेश्वर झूठ बोलने से नफ़रत करता है, परन्तु सच्चाई के प्रति समर्पित लोगों से उनसे और जिनकी बातें भरोसे के योग्य होती हैं, आनन्दित होता है। नीतिवचन 12:22 में सब झूठों को चेतावनी दी गई है कि जब तक वे मन नहीं फिराते तब तक उन पर दण्ड और न्याय का होना पक्का है, जबकि ईमानदार और विश्वासयोग्य लोग इस तथ्य में शांति पा सकते हैं कि परमेश्वर उन पर खुशी से मुस्कुराता है।

Pistis के कई अर्थ हैं जैसा कि ग्रीक लैक्सिकनों और पवित्र शास्त्र के अंग्रेज़ी संस्करणों में मिलता है। इन परिभाषाओं में ''विश्वास,'' ''यकीन,'' ''भरोसा,'' ''निष्ठा,'' ''विश्वास या प्रतीत की (सुसमाचार),'' ''डॉक्ट्रिन,'' ''भरोसा,'' ''प्रमाण'' ''आश्वासन,'' ''वफ़ादारी,'' और ''ईमानदारी का वायदा'' शामिल है। कई सम्भावित अर्थों के बावजूद 5:22 में सदगुणों की पौलुस की सूची के संदर्भ में केवल एक ही शब्द ''विश्वास'' मेल खाता है।

Pistis को मसीही व्यवहार, नैतिक या नीतिफरक पहलू के रूप में समझा जाना चाहिए। यह उसके स्वभाव का भाग है क्योंकि वह, वह व्यक्ति है जिसने विश्वास और परमेश्वर की आज्ञापालन में अपने आपको देने पर पवित्रता के आत्मा के वास से आशीष पाई है, जिसका वचन परमेश्वर ने विश्वासी को दिया है (प्रेरितों 2:38, 39; 5:30-32)। आत्मा के फल के अन्य सब शब्दों की तरह ''विश्वास'' परमेश्वर द्वारा दिया गया आत्मा का ही गुण है। सदगुण के रूप में *pistis* को आम तौर पर ऐसे ही स्वभाव वाले अन्य शब्दों[101] विशेषकर *agapē* के साथ जोड़ा जाता है।[102]

8. ''विश्वास'' के बाद अगला सदगुण **नम्रता** (5:23; *prautēs*) है। अधिकतर अंग्रेज़ी संस्करणों में जहां ''gentleness'' (भद्रता) है वहीं अन्य सम्भावित अनुवादों में ''humility'' (दीनता) (GNT) और ''meekness'' (विनम्रता) (KJV; ASV) शामिल हैं। इन अनुवादों में चाहे *prautēs* शब्द का कुछ पहलू मिलता है पर सबसे बेहतर शब्द अपने पुराने, और अधिक पसंदीदा संकेत के साथ ''विनम्रता'' ही है।

समय के साथ भाषा विकसित होती है और शब्द बदल जाते हैं और उनके पहले वाले अर्थ के कुछ पहलू नहीं रहते। अफ़सोस की बात है कि विनम्रता के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''meekness'' धीरे धीरे ''weakness'' अर्थात कमज़ोरी की अवधाणा से जुड़ गया है, यानी ऐसा विचार जो *prautēs* से बिल्कुल अलग है। आज संसारिक लोग जब किसी को ''विनम्र'' कहते हैं तो वे किसी कायर, शर्मीले, डरपोक व्यक्ति के बारे में सोच रहे होते हैं। इसलिए हम इस बात को समझ सकते हैं कि बाइबल के आधुनिक अनुवादकों ने इस शब्द को टालने का निर्णय क्यों लिया। KJV को पढ़ते पढ़ते बड़े होने वाले लोग meekness (विनम्रता) शब्द से परिचित हैं जो मूल यूनानी शब्द *prautēs* में पाए जाने वाले मुख्य विचार को बिल्कुल स्पष्ट दिखाता है। इस शब्द का खास महत्व केवल दीनता नहीं बल्कि विरोध या दबाव का सामना करते हुए दीनता है।

इस सदगुण का श्रेष्ठ उदाहरण मूसा है क्योंकि उसे ''पृथ्वी भर के रहने वाले मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र ['दीन'; KJV; ASV] स्वभाव का दिखाया गया है'' (गिनती 12:3)। इस विवरण के अर्थ को पूरी तरह समझने के लिए हमें संदर्भ पर ध्यान देना होगा। ''कूशी स्त्री'' जिसका साथ उसने कई साल पहले विवाह किया था, के कारण मूसा की बहन मरियम और उसका भाई हारून उसके विरोध में खड़े होकर उसकी आलोचना करने लगे। इसके अलावा मरियम और हारून यह दावा कर रहे थे कि परमेश्वर ने उनके द्वारा भी बात की थी, इसलिए वे भी उसके बराबर हैं और मूसा अपने आपको उन से ऊंचा बनाने का दोषी है (देखें गिनती 12:1, 2)। वचन में अपने बचाव में मूसा के जवाब के बारे में कुछ नहीं कहा गया है, परन्तु परमेश्वर बादल के उस भयानक खम्भे के रूप में नीचे उतरा (उसकी उपस्थिति की ''शिकायना महिमा'') और निजी तौर पर मरियम को कोढ़ के साथ दण्ड देकर, मूसा का बचाव किया (गिनती 12:4-10)। इसके बाद

अपनी दीनता के और प्रमाण के रूप में मूसा ने अपनी बहन की ओर से हारून की मिन्नत और यहोवा से उसे क्षमा कर देने और चंगा कर देने की विनती की। परमेश्वर ने मरियम को सरेआम शर्मिंदा करने के बाद मूसा की विनतियों का अनुग्रह पूर्ण उत्तर दिया (गिनती 12:11-15)।

दीनता के सदगुण को मूसा के द्वारा कई अवसरों पर दिखाया गया। उदाहरण के लिए जब परमेश्वर इस्राएलियों के आज्ञा न मानने और अविश्वास के कारण क्रोधित हुआ, तो उसने उन सब को नष्ट कर देने और मूसा से एक बड़ी जाति बनाने का प्रस्ताव रखा। मूसा चाहे उसके ऊपर एक बार फिर से हमला हुआ था, परमेश्वर से दया की याचना करने लगा। उसने हठी लोगों की ओर से परमेश्वर के सामने अपना प्राण देने की पेशकश कर डाली। शायद यहीं मूसा को अपनी भाइयों के लिए अपने प्राण देने को तैयार उद्धारकर्त्ता के रूप में सबसे निराले ढंग से यीशु की झलक माना जाता है (निर्गमन 32:6-14, 31, 32; देखें व्यवस्थाविवरण 18:15-19)।

नये नियम में इससे सम्बन्धित शब्द ''नम्र'' (*praus*) यीशु के सम्बन्ध में इस्तेमाल हुआ है। पहाड़ी उपदेश देते हुए, उसने कहा, ''धन्य हैं वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे'' (मत्ती 5:5; KJV; NKJV; ASV)। अपने बड़े निमन्त्रण में यीशु ने अपने आपको ''नम्र और मन में दीन'' बताया (मत्ती 11:29; KJV; ASV)। नम्रता के अलावा यह शब्द वश में शक्ति के होने का विचार देता है। जकर्याह 9:9 से मुख्य रूप में उद्धृत करते हुए मत्ती ने विजयी प्रवेश का वर्णन इन शब्दों में किया है:

> ''सिय्योन की बेटी से कहो, 'देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है ['दीन''; KJV; ASV], और गदहे पर बैठा है; वरन् लादू के बच्चे पर' '' (मत्ती 21:5)।

शक्तिशाली मसीहा यानी यीशु दुख सहने वाले सेवक के रूप में क्रूस पर मरने के लिए तैयार होकर गदहे पर गया।

तनाव या दबाव की बात जिस में ''नम्रता'' (*prautēs*) विरोध या मुखालिफत को सहती है वह स्पष्ट नहीं होता, परन्तु कई बार स्पष्ट होता है। पतरस ने मसीही पत्नियों से अपने पतियों से ''अधीन और कोमल मन'' वाली बनने को कहा तब भी जब ''इनमें से [कुछ] ऐसे हों जो वचन को न मानते हों'' (1 पतरस 3:1, 4; KJV; ASV)। इसके अलावा पौलुस को कुरिन्थुस में कुछ ऐसे हठी लोगों का सामना करना पड़ा, जिन्हें उसने पूछा कि ''तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊं, या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?'' (1 कुरिन्थियों 4:21; KJV)। मन में विरोध की बात के साथ प्रेरित ने तीमुथियुस से भी आग्रह किया कि वह ''सब के साथ कोमल और शिक्षा में निपुण, और सहनशील हो'' (2 तीमुथियुस 2:24, 25; ASV)।

9. आत्मा का अंतिम फल **संयम** (*enkrateia*) है। यह शब्द ''सामर्थ,'' ''शक्ति'' या ''प्रभुता'' के अर्थ वाले यूनानी मूल के (*kratos*) से बना है। यह ''democracy'' (डेमोक्रेसी, लोकतंत्र), ''*autocracy*'' (ऑटोक्रेसी, एकतंत्र) और ''theocracy,'' (थियोक्रेसी, धर्मतंत्र) जैसे अंग्रेज़ी शब्दों में दिखाया जाता है। उपसर्ग जुड़ने से *enkrateia* का अर्थ ''संयम'' या ''आत्मनियन्त्रण'' हो जाता है। संयम वास्तव में अंदरूनी (*en*) शक्ति (*kratos*) है।

नये नियम में *enkrateia* (एनक्रेटिया) शब्द शायद ही इस्तेमाल हुआ हो। 5:23 में

इस्तेमाल होने के अलावा संज्ञा रूप दो अन्य वचनों में मिलता है। प्रेरितों 24:25 में पौलुस ने फेलिक्स से ''धर्म और संयम और आने वाले न्याय'' की बात की, जिससे यहूदिया का वह हाकिम ''भयभीत'' हो गया। पौलुस ने केवल इन बातों का उल्लेख ही नहीं किया बल्कि वह उनकी ''चर्चा कर रहा था।'' कैसर के इतने शक्तिशाली प्रतिनिधि की जीवन शैली को ध्यान में रखते हुए, याद रखें कि यहां कैसर बदनाम नीरो है, पौलुस को इन विषयों पर बहुत बातें करनी थी। उसने इस पतित काफिर के विवेक को साबुत नहीं छोड़ा होगा। संयम आम तौर पर ऊंचे पद वाले रोमी अधिकारियों के प्रमुख गुणों में शामिल नहीं होता था। ''फेलिक्स'' नाम का अर्थ चाहे ''प्रसन्न'' है पर यह इस हाकिम के जीवन के सबसे अभागे दिनों में से एक था।

2 पतरस 1:5-7 में, पतरस ने भी मसीही लोगों को ''विश्वास'' के आधार में सदगुणों को जोड़ते हुए आत्मिक उन्नति में बढ़ते रहने का आग्रह किया। इन में ''सदगुण,'' ''समझ,'' ''संयम,'' ''धीरज,'' ''भाईचारे की भक्ति,'' और ''प्रेम'' शामिल हैं। पतरस ने चाहे बुराइयों की विस्तृत सूची नहीं दी पर उसने इस सूची से पहले उस अद्‌भुत बदलाव का संकेत दिया जिसकी मनुष्यजाति को पेशकश की गई है। परमेश्वर की ''बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं'' पाकर ''तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ'' (2 पतरस 1:4)। यह बचाव केवल दो क्रूसों के द्वारा ही हो सकता है: (1) यीशु का क्रूस, जो मनुष्य को छुड़ाता है और उसकी इच्छा को इस प्रकार बदल देता है कि वह (2) अपना स्वयं का क्रूस उठाकर, उन सब बातों के लिए ''शरीर की कामों'' के लिए मरकर जिनमें वह यीशु को जानने से पहले रह रहा था, इसे स्वीकार करता है।[103]

Enkrateia शब्द कामुकता के दायरे में संयम से सम्बद्ध लगता है। नये नियम में संज्ञा के कुछ हवाले चाहे हमने पूरे कर लिए हैं पर पौलुस ने इससे जुड़ी क्रिया और विशेषण शब्द का इस्तेमाल भी किया। क्रिया शब्द *enkrateuomai* (''संयोग बरतना'') दो बार मिलता है। 1 कुरिन्थियों 7:8, 9 में पौलुस ने जहां विवाह और तलाक की चर्चा की, उसने लिखा, ''परन्तु मैं अविवाहितों और विधवाओं के विषय में कहता हूं, कि उन के लिए ऐसा ही रहना अच्छा है, जैसा मैं हूं। परन्तु यदि वे संयम [*enkrateuomai*] न कर सकें, तो विवाह करें; क्योंकि विवाह करना कामातुर रहने से भला है।''[104] पौलुस यहां पर ''संयम'' का इस्तेमाल कामुक इच्छा के सम्बन्ध में कर रहा था।

क्रिया शब्द और 1 कुरिन्थियों 9:25 में मिलता है जहां पौलुस ने इसे खेलकूद की प्रतिस्पर्धा के प्रशिक्षण में स्व:अनुशासन के लिए इस्तेमाल किया। उसने लिखा, ''और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम [*enkrateuomai*] करता है, वे तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिए यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिए करते हैं, जो मुरझाने का नहीं।'' यह उदाहरण विशेष महत्व का बन जाता है जब हमें यह समझ आता है कि कुरिन्थुस इस्थमियन खेलों का मेजबान और प्रायोजक नगर था। यह ओलम्पिया, डैल्फी और नेमिया जैसी उन जगहों की तरह ही जिन्हें आज भी लोग देखने जा सकते हैं, अखिल यूनानी प्रतिस्पर्धाओं का बड़ा केन्द्र था। पौलुस केवल प्रतिस्पर्धा की ही बात नहीं कर रहा था। और स्पष्ट कहें तो वह उस प्रशिक्षण की बात कर रहा था जिसमें से उन खेलों के लिए खिलाड़ी अपने आपको तैयार करने के लिए गुजरते थे। ओलम्पिक खेलों के मामले में, खिलाड़ी एलिस (पिलोपोनेसस के उत्तर पश्चिम में

उनके राज्य की राजधानी का नगर) में प्रतिस्पर्धा के लिए नियमों के लिए विशेष प्रशिक्षण और निर्देशों के लिए इकट्ठा होते थे, ताकि उनका प्रशिक्षण और शानदार हो सके।

यह खेलें केवल खेलकूद की प्रतिस्पर्धाओं से कहीं बढ़कर होती थीं। इन्हें खिलाड़ियों के उन देवताओं के नाम प्रस्तुत किया जाता था जिनके सम्मान में वे खेले करवाई जाती थीं। ओलम्पिया में, एक ऊंची, लकड़ी की पहाड़ी, क्रोनोनियम पहाड़ स्टेडियम के उत्तर में है जिस पर उनका मानना था कि पिता देवता ज्यूस बैठा है जिसके सम्मान में वे प्रतिस्पर्धाएं होती थीं, और उसे पूजा स्वरूप अर्पित की जाती थीं। पौलुस ने मसीही व्यक्ति के जीवन के लिए इसी अवधारण को लागू किया, जिसके लिए एकमात्र सच्चे परमेश्वर को अपना सब कुछ देते हुए संयम और अनुशासन आवश्यक है।

शेष विशेषण *enkratēs* जिसका अर्थ ''संयमी'' है, तीतुस 1:8 में मिलता है।[105] निगरान (ऐल्डर) का ''पहुनाई करने वाला, भलाई का चाहने वाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय'' (*enkratēs*) होना आवश्यक है। उसे अपनी ''भावनाओं और आवेगों, [और] इच्छाओं को वश में रखना'' आना आवश्यक है।[106] स्थानीय मण्डली के अंदर उठने वाली असहमतियों के साथ निपटने के साथ-साथ दूसरों के लिए मानने के लिए नमूना ठहराने के लिए ऐसी भीतरी शक्ति का होना आवश्यक है।

पौलुस ने जब कहा कि **ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं**, वह ''आत्मा का फल'' के सदगुणों की पूरी सूची की बात कर रहा था। इस संक्षिप्त कथन का क्या अर्थ है? एफ. एफ. ब्रूस का मानना था कि यह सदगुण उस दायरे में हैं जिसके साथ व्यवस्था का कोई सम्बन्ध नहीं है। व्यवस्था आचरण के कुछ रूपों की सिफारिश कर सकती है और अन्य बातों की मनाही कर सकती है परन्तु प्रेम, आनन्द, शांति और बाकी गुणों को कानून से लागू नहीं किया जा सकता,[107] उसने एस. एच. हुक को उद्धृत किया जिसने लिखा है:

> बेल को संसद के कानून से अंगूर नहीं लगते; वे बेल के अपने जीवन का फल है; सो राज्य के मानक से मेल खाने वाला आचरण किसी की मांग से नहीं, परमेश्वर की मांग से भी नहीं बनता बल्कि यह तो उस ईश्वरीय स्वभाव का फल है जो परमेश्वर देता है उसका परिणाम है, जो उसने मसीह में और उसके द्वारा किया है।[108]

बेल का उसका उदाहरण पौलुस की उसी बात से मेल खाता है जो वह कह रहा है। आत्मा के फल को कानून से नहीं चलाया जा सकता, जैसा कि उसने कहा, ''किसी की मांग से नहीं, परमेश्वर की मांग से भी नहीं।'' पहली नज़र में यह परमेश्वर की निंदा लगेगा परन्तु यह किसी लाग लपेट के सच है। गलातियों के पत्र से यह साबित हो चुका है जो मसीह के सुसमाचार से मूसा की व्यवस्था को अलग करता है। पिन्तेकुस्त के दिन एक नये युग का सवेरा हुआ था और आत्मा का प्रदर्शन बिल्कुल ही अलग तरीके से हुआ था। जिन लोगों ने सुसमाचार पर विश्वास करके पाप से मन फिराया था और मसीह में डुबकी ली उन्हें पवित्र आत्मा का व्यक्तिगत वास मिला था (प्रेरितों 2:37, 38)। उन्हें पाप पर काबू पाने के लिए इस प्रकार से सामर्थ दी गई थी जिस प्रकार से व्यवस्था के अधीन रहने वालों को कभी नहीं मिली थी (रोमियों 8:1-4, 12, 13; देखें यूहन्ना 7:37-39)।[109]

इसी शैली में आर. एल. कोल का मानना था कि ''फल'' शब्द का इस्तेमाल सुझाव देता है कि ये तथ्य तथा अन्य बहुत से आत्मिक गुण, मसीही व्यक्ति के मन के अंदर मसीह के आत्मा की उपस्थिति का सहज परिणाम है।[110] फल देने के उपमा पुरानी है जो इस्राएलियों जैसे खेती बाड़ी करने वाले लोगों के लिए उपयुक्त है। ''फल'' के लिए यूनानी शब्द (*karpos*) चाहे किसी भी प्रकार के फल को दर्शाता हो पर पवित्र शास्त्र में इसका सबसे आम इस्तेमाल अंगूर की बेल और फल वाले वृक्ष के उपज के लिए हुआ है। यीशु ने स्वयं कहा कि बेल या पेड़ (व्यक्ति) अपने फल (कामों) से पहचाना जा सकता है (मत्ती 7:16-18)।[111]

गलातिया के लोगों के जीवनों में आत्मा का फल के होना उनके आत्मिक जीवन का प्रमाण होना था। यह महत्वपूर्ण है कि पौलुस ने गलातिया की कलीसियाओं में आत्मा के चमत्कारी दान होने के बावजूद उनकी मसीही परिपक्वता का संकेत नहीं माना।[112]

शरीर पर आत्मा की विजय (5:24, 25)

[24]और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। [25]यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

आयत 24. उन सदगुणों की सूची को पूरा कर लेने के बाद जो मसीही व्यक्ति के जीवन में दिखाई देने चाहिए, पौलुस ने समझाया कि पाप को पीछे छोड़ उस प्रकार से कैसे चला (जिया) जा सकता है जो परमेश्वर को भाता हो। उसने कहा, **जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।** बेशक यह मनुष्य की सामर्थ से नहीं हुआ है।

अनुवादित यूनानी शब्द ''शरीर'' (*sarx*) ऐसा शब्द है जिसके बहुत से अर्थ हैं,[113] परन्तु यहां पर यह बुनियादी तौर पर मनुष्य के पाप में गिरने की स्थिति का संकेत देता है। *Sarx* अपनी ''लालसाओं और अभिलाषाओं'' वाला मनुष्य है। मनुष्य ही है जिसे परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया और अभी भी उसके अंदर ईश्वरीय ''किरण'' है, परन्तु इस वर्तमान बुरे संसार में वह उलझन में पड़ा, अंधा और परेशान है। लोगों को अंधे व्यक्ति की तरह समर्थन या ठोकरों के पास आकर ''टटोलने'' की चुनौती दी जाती है; परन्तु हमें परमेश्वर की ओर बढ़ना आवश्यक है। एथेंस के लोगों को अपने प्रवचन में पौलुस ने परमेश्वर की इच्छा को जताया था कि लोग ''परमेश्वर को ढूंढें, कदाचित उसे टटोलकर पाएं, तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं। क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों 17:27, 28क)।[114]

5:24 में ''शरीर'' की बात करते हुए पौलुस 5:19-21 में बताए गए ''शरीर के कामों'' की पूरी सूची की बात कर रहा था। इस अध्याय में शरीर के पहले हवाले कई बार मिलते हैं:

> तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो; परन्तु ऐसा न हो कि यह स्वतंत्रता *शारीरिक* कामों के लिये अवसर बने, वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो (5:13)।
>
> पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम *शरीर* की लालसा किसी रीति से पूरी न

करोगे। क्योंकि *शरीर* आत्मा के विरोध में और आत्मा *शरीर* के विरोध में लालसा करता है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ (5:16, 17)।

उसने गलातियों को कई बार चेतावनी दी थी कि शरीर की लालसाओं के आगे हार मान लेना उन्हें परमेश्वर के राज्य में उनकी विरासत से वंचित कर देगा (5:21)।

इसका अर्थ यह हुआ कि आयत 24 पौलुस द्वारा इन कलीसियाओं में पहले किए गए प्रचार को याद दिलाने के लिए है। हर जगह उसके संदेश का सार क्रूस पर केन्द्रित होता था (1 कुरिन्थियों 1:18, 22, 23; 2:2)। ''क्रूस की बात'' कालांतर में हमारे लिए यीशु द्वारा सहे गए भयंकर दुख और शर्म के दायरे में न रहे। बल्कि विश्वासी के लिए क्रूस के परिणाम न केवल शुरू में बल्कि उसके जीवन भर के भी हैं। असल में हर मसीही के लिए एक क्रूस है, यानी ''शरीर के कामों'' को जिनकी बात पौलुस ने 5:19-21 में की, क्रूस पर चढ़ाना। प्रभु ने स्वयं कहा, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इनकार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले'' (लूका 9:23)।[115]

आयत 25. गलातिया के मसीही मसीह को बपतिस्मे में पहनने के द्वारा उसके साथ एक होने पर पाप के लिए मर गए थे (3:26, 27; देखें रोमियों 6:3-7)। उन्हें कभी अपने पापों की क्षमा और आत्मा के वास का दान मिला था (देखें प्रेरितों 2:38, 39; तीतुस 3:5, 6)। इसलिए पौलुस ने उन्हें निर्देश दिया कि **यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।** ''यदि'' (*ei*) संकेत देता है कि पहले वाक्यखण्ड की बात सही है।[116] NIV में इस आयत का अनुवाद इस प्रकार किया गया है: ''*क्योंकि* हम आत्मा के द्वारा जीते हैं, आओ आत्मा के साथ कदम रखें।''

क्रिया शब्द ''चलें'' या ''कदम रखें'' (NIV) का अनुवाद (*stoicheō*) से किया गया है जो 5:16 में इस्तेमाल किए गए ''चलो'' (*peripateō*) शब्द से अलग है, चाहे मोटे तौर पर दोनों समानार्थी शब्द हैं। *Peripateō* का लोगों के लिए अकेले चलने के लिए इस्तेमाल अधिक होता है, वहीं *stoicheo* (स्टोइखियो)दूसरों के साथ चलने का संकेत देता है। *Stoichos* (''कतार'') से सम्बद्ध शब्द, *stoicheō* का अर्थ मूल में ''लाइन में चलना'' या ''रैंक में होना'' था। इस शब्द का अर्थ प्रतीकात्मक संकेत ''सहमत होना'' हो गया। पौलुस चाहता था कि गलातिया के लोग अपने जीवनों की जांच करके यह सुनिश्चित करें कि आत्मा का फल देते हुए, वे आत्मा से मेल खाते हों (देखें रोमियों 8:5, 6)। उनके लिए उसकी इच्छा यह थी कि वे अपने सब कार्यों के निर्देश के लिए आत्मा का अनुमति दें।

भाइयों को प्रेरित की ताड़ना (5:26)

[26]हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।

आयत 26. अध्याय 5 इस ताड़ना के साथ खत्म होता है: **हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें।** बहुत से अंग्रेज़ी संस्करणों में NASB की तरह ''न बनें'' अनुवाद किया गया है (देखें ASV; NKJV; NRSV; NIV; ESV; NLT; CJB)।

यहां पर मूल क्रिया शब्द *ginomai* है जो एक बेहद आम शब्द है जो कई अलग अलग संकेत दे सकता है। शायद सबसे आम अर्थ ''बनना,'' ''गुज़रना,'' या ''घटना'' है। परन्तु यह शब्द ''होना'' या ''अस्तित्व होना'' जैसे, होने की दोहरी क्रिया हो सकती है। कुछ संस्करणों में क्रिया शब्द इसी अर्थ में दिया गया है (देखें KJV; NEB; REB; NJB; NCV; CEV; GNT)।

यह महत्वपूर्ण है कि यूनानी धर्मशास्त्र में वास्तविक शब्द *ginōmetha* जो क्रिया शब्द *ginomai* का वर्तमान क्रिया रूप है। यह अनिश्चित भूतकाल नहीं है जो निश्चितकार्य यानी समय में किसी कार्य को दिखाता हो (।)। इसके बजाय वर्तमान के रूप में यह रेखाकार या निरन्तर कार्य (→) को दिखाता है। इस कारण नकारात्मक आज्ञा को ऐसा नहीं समझना चाहिए कि जिससे भाइयों ने *आरम्भ* नहीं करना था बल्कि व्यवहार के रूप में दिखाता है जिसे उन्हें करना *छोड़ना* है (5:15 पर टिप्पणी देखें)। आयत 26 का पहला भाग कहता है कि ''हम घमण्डी होना छोड़ दें।''

''छेड़ें'' यूनानी शब्द *prokaleō* से लिया गया है जो नये नियम में केवल इसी आयत में मिलता है। इस शब्द का अक्षरश: अर्थ है ''किसी को आगे आने के लिए कहना।'' यूनानी साहित्य में ''ललकारना'' के विपरीत संकेत के साथ इसका आम इस्तेमाल होता था।[118] कुछ संस्करणों में यहां ''उकसाते हुए'' है जो स्पष्ट रूप में शत्रुता का संकेत देता है (देखें KJV; NKJV; ASV; RSV; NIV; ESV; CJB)। *Prokaleō* ''विरोध या झगड़े'' का सुझाव देता है।[119]

जैसा कि पहले कहा गया था कि पौलुस द्वारा 5:19-21 में दी गई बुराई की सूची पूरी नहीं थी बल्कि नमूने के तौर पर थी। 5:21 में ''ऐसे ऐसे काम'' वाक्यांश में इस तरह के और कई बुरे काम आ जाते हैं। प्रेरित द्वारा 5:26 में जोड़े गए व्यवहार के तीनों नमूने ''घमण्डी होना,'' ''एक दूसरे को छेड़ना,'' और ''एक दूसरे से डाह करना'' शरीर के कामों में शुमार होते हैं। असल में ''डाह करना'' क्रिया शब्द *phthoneō* (फथोनियो) से लिया गया है जिसका सम्बन्धित संज्ञा शब्द *phthonos* (फथोनोस) 5:21 में ''डाह'' के लिए मिलता है। यह इस बात को दिखाता है कि पौलुस द्वारा दिए गए शरीर के काम केवल कल्पना नहीं थे बल्कि वे असल समस्या थे जो गलातिया की कलीसियाओं के लिए शांति का खतरा था।

अपने बुरे व्यवहार को छोड़ने की गलातियों को दी यह ताड़ना सवाल खड़ा करती है कि उनके बीच में यहूदी मत की शिक्षा देने वाले थे या नहीं। टीकाकारों के अपने अलग अलग विचार हैं। वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे ने माना कि यहूदी मत की शिक्षा देने वाले लोग अभी भी उनके बीच में थे: ''यहूदी मत की शिक्षा देने वाले लोग प्रशंसा और 'झूठी महिमा' पाने को बेकरार रहते थे और इससे प्रतिस्पर्धा और फूट को बढ़ावा मिलता था। ऐसे माहौल में फल कभी नहीं बढ़ सकता।''[120] कोल और विकल्पों को मानता था। एक सम्भावना यह है कि ''जो लोग यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की गलती में नहीं फंसे थे वे अब अपनी श्रेष्ठ आत्मिक शक्ति का घमण्ड कर रहे थे।'' यदि ऐसा है तो वे यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के आगे झुक जाने वालों को जलाते होंगे या उनसे डाह करते होंगे। एक और विचार यह है कि ''कलीसिया के भीतर ही सत्ता संघर्ष'' था। यदि ऐसा है तो यहूदी मत की शिक्षा देने वालों के विवाद की किसी और बात को देखने की आवश्यकता नहीं।[121]

मसीही लोगों को ''अभिमानी, एक दूसरे को उकसाने वाले, एक दूसरे से डाह करने वाले'' होने की प्रेरणा कौन दे सकता है (NKJV)? ब्रूस ने यह सुझाव दिया कि गलातिया की कलीसियाओं की समस्या ''धर्मशास्त्रीय बहस'' के कारण थी।[122] यह हो सकता है परन्तु इसके पक्का होने की पूरी जानकारी हमारे पास नहीं है।

वाल्टर शमिथल्स का अनुमान था कि 5:26 की भाषा में स्पष्ट रूप में ''रहस्यवादी न्यूमैटिक'' थे।[123] व्यर्थ घमण्ड करना (*kenodoxos,* केनोडोक्सोस) का विवरण चाहे रहस्यवादियों के लिए किया जा सकता है पर यहां उनके साथ जोड़े जाने का कोई कारण नहीं है। ब्रूस ने लिखा है:

> कलीसियाई जीवन से परिचित कोई भी व्यक्ति ... जानता है कि यह प्रवृतियां जिनके विरुद्ध पौलुस ने चेतावनी दी, आत्मिक घमण्ड, एक दूसरे को उकसाना, डाह, साधारण से साधारण मसीहियों के बीच हो सकते हैं जो रहस्यवाद या परमानंद जैसी बातों से बिल्कुल परिचित नहीं हैं।[124]

कुछ विद्वान नये नियम के लेखों में रहस्यवाद की प्रवृतियों को ढूंढ़ने में उत्सुक लगते हैं। परन्तु ब्रूस जैसे लोग जिन्होंने इस क्षेत्र में काफ़ी अध्ययन किया है, जल्दी से ऐसे निष्कर्षों को मानने में हिचकिचाते हैं। आम तौर पर यह मान लिया जाता है कि इल्हाम प्राप्त लेखकों के सामान्य वातावरण में रहस्यवाद के अंश अवश्य मौजूद थे पर वे अपनी अलग-अलग प्रणालियों में जुड़ने के लिए अभी आरम्भ नहीं हुए थे। इसलिए ''आरम्भिक रहस्यवाद'' की बात कहना समझदारी है। मसीह के बाद दूसरी और तीसरी सदियों में रहस्यवाद पूरी तरह से विकसित होकर कलीसिया के अस्तित्व के लिए ही खतरा बन गया।[125]

प्रासंगिकता

व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहराया जाना? (5:2-4)

गलातियों की पुस्तक को कथित ''कर्मकाण्डवाद'' पर सामान्य पुस्तक नहीं बल्कि खतने और मूसा की व्यवस्था की अन्य शर्तों के आगे हार मानकर धार्मिकता प्राप्त करने की इच्छा की गम्भीर, निंदात्मक गलती के जोशीले जवाब के रूप में माना जा सकता है। यहूदी मत की शिक्षा देने वाले गलातियों से ये बातें करवाना चाहते थे। पौलुस ने कहा कि उनका संदेश कि इसी भी प्रकार से सुसमाचार था ही नहीं। इसके बजाय यह मसीह के सुसमाचार का बिगाड़ था (1:6-9)।

पत्र का भीतरी प्रमाण इस बात का संकेत देता है कि पौलुस मूसा की व्यवस्था के ठोस नियमों में विशेषकर खतने की बात कर रहा था (5:2; 6:13)। पत्र में पहले उसने तीतुस का जो उसका विश्वासयोग्य सहकर्मी था, उदाहरण इस्तेमाल किया। इस भाई को चाहे वह ''यूनानी'' था ''खतना कराने के लिए विवश नहीं किया गया'' था (2:3)। पौलुस ने उस घटना को भी दोहराया जब पतरस सीरिया के अंताकिया में गया था। दूसरे यहूदी मसीहियों के आ जाने पर उसने अन्यजाति मसीहियों के साथ खाना पीना छोड़ दिया था (2:12)। पौलुस ने उसके इस कपट के लिए उसे डांटा था: ''जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है और

यहूदियों के समान नहीं तो *तू अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को क्यों कहता है?*'' (2:14)। इसके अलावा पौलुस ने ''दिनों और महिनों और नियत समयों और वर्षों को'' मनाए जाने की बात की जो कि व्यवस्था को मानने जैसा ही है (4:10)।

परन्तु यह सुझाव देने के लिए कि व्यवस्था को मानने के सामान्य नियम की गलातियों को कोई परवाह थी, कोई प्रमाण नहीं मिलता। बाइबल के अशिक्षित अन्यजातियों के रूप में लगता नहीं है कि वे ऐसे गूढ़ मामलों के बारे में परेशान होते होंगे। यह अपने तरीके से स्वर्ग को कमाने की मानसिकता कर्मकांड (अपने स्वयं के प्रयासों के द्वारा धार्मिकता को पाने की कोशिश करना) के विचार से बहुत आधुनिक व्याख्याकारों की सनक से अलग है।

इस पत्र की रचना में व्यवस्था, पवित्र शास्त्र और वाचाओं के हवाले आपस में गुथे हुए हैं। जिस ऐतिहासिक परिस्थिति में पौलुस गलातिया की कलीसियाओं से बात की, उसका सम्बन्ध सुसमाचार से बाहरी तत्वों के भीतर डाले जाने से था जिन्होंने इसमें मिलावट कर दी थी और इसे ऐसा बना दिया था जैसा इसके बनने का कभी सोचा भी नहीं गया था। सुसमाचार और व्यवस्था को आपस में एक दूसरे के साथ वैसे ही नहीं मिलाया जा सकता जैसे तेल और पानी को नहीं। परमेश्वर की सनातन मंशा में दोनों की अपनी-अपनी अलग-अलग भूमिका है और यह आवश्यक है कि हम दोनों के बीच अंतर को समझे। व्यवस्था चाहे जीवनदायक मसीहा की गवाही देती है पर यह अपने आप जीवन नहीं दे सकती (यूहन्ना 5:39)। इसके बिल्कुल उलट यह ''मृत्यु की वाचा'' और ''दोषी ठहराने वाली'' थी (2 कुरिन्थियों 3:7, 9)। दूसरी ओर सुसमाचार ''आत्मा की वाचा'' और ''धर्मी ठहराने वाली वाचा'' है (2 कुरिन्थियों 3:8, 9)। इसने न केवल आत्मा के दान और शक्तियां दिलाई बल्कि स्वयं आत्मा का वास भी दिलवाया। व्यवस्था चाहे जितनी तेजोमय और अच्छी थी, पर यह इस स्वर्गीय दान की बात कभी नहीं कर पाई, जिसके बिना मनुष्य का मन परमेश्वर के जीवन से सदा वंचित, निष्फल और दीवाना रहता है (गलातियों 3:2, 3; देखें इफिसियों 4:18)।

परमेश्वर के वचन की बात मानना (5:2-4)

कुरिन्थुस की मण्डलियों को चलाने के लिए दिए गए बहुत अधिक नियमों की सूची देने के बाद, पौलुस ने यह महत्वपूर्ण बात कही: ''यदि कोई मनुष्य अपने आप को भविष्यवक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, वे प्रभु की आज्ञाएं हैं'' (1 कुरिन्थियों 14:37)। ऐसे वचनों को लागू करते समय हमें इनमें शामिल गहरे नियमों को समझने के लिए मानवीय समझ का इस्तेमाल करना आवश्यक है। तौभी ऐसे पेचीदा वाक्यांशों और नारों से जो परमेश्वर के वचन को मानने के दायित्व के किसी भी अर्थ से छुटकारा दिलाते हुए लगते हों, हमें बहुत ही सावधान रहना आवश्यक है। जब हम पवित्र शास्त्र को बेपरवाही से लेते हैं तो हम अधिकार विरोध (*anomia,* ''अधर्म'') के कगार पर खड़े हुए होते हैं।

नई वाचा के स्वभाव में ही है कि ''मन से मानने वाले'' हो जाने के बाद (रोमियों 6:17) मसीही व्यक्ति में ऐसा बदलाव आता है कि आज्ञा मानना उसकी इच्छा बन जाती है। यीशु ने उस दहशत से जो परमेश्वर की इच्छा से उस के सहने के लिए ठहराई गई थी, गतसमनी में संघर्ष किया। अंत में उसने यह शब्द कहते हुए कि ''तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी

हो'' (लूका 22:42) पिता की इच्छा के आगे समर्पण कर दिया। इसी प्रकार से मसीही के लिए अपनी इच्छा से मरकर, ''उपदेश के उस सांचे'' यानी आत्मिक मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में से जो कि सुसमाचार का सार है, जिसके लिए वह अपने आपको सौंप रहा है, गुज़रना आवश्यक है (रोमियों 6:1-6, 17)।

बपतिस्मे में यह बाहरी यानी दिखाई देने वाला आज्ञापालन एक बार होने वाली घटना है जो पश्चात्तापी विश्वासी को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कराती है (3:26, 27; यूहन्ना 3:5) परन्तु यह उससे भी बढ़कर है। परन्तु स्वेच्छा से आज्ञा मानकर अपना जीवन मसीह को देने वाला व्यक्ति ''नए जीवन की सी चाल'' चलने के लिए मसीह के साथ इस डुबकी (या दफ़नाए जाने) से जी उठता है (रोमियों 6:4)। अब वह किसी बाहरी व्यवस्था की पाबंदियों पर ध्यान नहीं देगा कि उन्हें माने। बल्कि वह अपने प्रभु को स्वेच्छा से मानकर जीने के लिए नया जन्म पा चुका है। अब वह आज्ञा मानकर अंदर से विरोध नहीं करता है। उसे उसके अनुग्रह से जिसे उसके दण्ड को अपनी ही देह में क्रूस पर सह लिया उसकी पैदायशी घमण्ड को साफ़ कर दिया गया है। वह जिस भी सेवा को कर सकता है उसे करने के लिए तैयार होकर परमेश्वर के उदार प्रेम को मानने लगता है। जिसने इस अद्‌भुत प्रेम को समझ लिया उसके लिए मसीह की सेवा करना नियमों को मानने का कोई झंझट नहीं है बल्कि यह तो जीवते परमेश्वर के पुत्र सर्वशक्तिमान मसीहा के सामने स्वेच्छा से घुटने टेकना है। वह अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता की हर आज्ञा को स्वेच्छा से करना चाहता है।[126] जिसने प्रभु यीशु को जान लिया उसके लिए इस अनुग्रहकारी प्रभु की इच्छा अब उसकी (स्वैच्छिक दास की) आज्ञा बन जाएगी। उस किस्म का बदलाव जो भीतरी और बाहरी रूप में इस ''जीवन का नयापन'' की गवाही देता है, जिसकी बात पौलुस ने की और जिसके प्रति वह स्वयं इतना दिल से समर्पित था।

''कर्मकाण्डवाद'' की बात करने वाले को यह पक्का होना चाहिए कि उसे पता है कि ''कर्मकाण्डवाद'' क्या है। पवित्र शास्त्र में चाहे इसकी अवधारणा पाई जाती है पर यह बाइबल का शब्द नहीं है। बाइबल के छात्र को उसी भाषा का इस्तेमाल करने में सावधानी बरतनी चाहिए, जिससे सही-सही ढंग से पता चलता हो कि परमेश्वर का वचन क्या कहता है।

एवरट फग्र्यूसन ने ''मसीही स्वतन्त्रता'' की परिभाषा ''कर्मकाण्डवाद (वह थोपना जिसे परमेश्वर ने नहीं थोपा) और लाइसेंस (उसे खोलना जिसे परमेश्वर ने बांधा)'' के रूप में दी है।[127] इस अंतर का बेहद महत्व है। कोई भी इंतहा केवल मनुष्य की शिक्षा ही है और कुछ नहीं। अतिवाद परमेश्वर के वचन को सम्मान देने के मनुष्य के गम्भीर दायित्व की उपेक्षा करती है।

मसीह ... और उसकी कलीसिया में (5:6)

हर प्रकार की आत्मिक आशीष ''मसीह में'' यानी उसकी देह में मिलती है जो कि कलीसिया है (इफिसियों 1:3, 22, 23)। यह दुख की बात है कि हमारे समय के बहुत से ''विश्वासी'' इस कथन के पहले भाग को फुर्ती से स्वीकार कर लेंगे, स्वेच्छा से यह मानते हुए कि हर प्रकार की आत्मिक आशीष मसीह में पाई जाती है, पर दूसरे भाग को या तो मानेंगे नहीं या केवल इसे थ्यौरी में मानेंगे। लोगों की बड़ी संख्या जो यीशु में प्रभु के रूप में विश्वास करते और उस में अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं, ''कलीसिया'' को केवल विश्वासियों की

उस बड़ी, आकारहीन, आत्मिक देह के अर्थ में ही मानेंगे। उनकी अपने आपको किसी ठोस, दिखाई देने वाली देह या विश्वासियों की स्थानीय मण्डली से जोड़ने की कोई इच्छा नहीं है। उन्हें संगति, एक दूसरे के सुधार, निर्देश, अनुशासन, आराधना या सेवा में भाग लेने की कोई आवश्यकता नहीं लगती।

हो सकता है कि अनजाने में ही हो, पर ऐसे लोग जो केवल नाम के ''मसीही'' हैं, प्रभु की कलीसिया को नकार रहे हैं। अपने आपको सही ठहराने के प्रयास में कुछ लोगों का कहना होता है कि वह ''संगठित धर्म'' को नकार रहे हैं जबकि सच्चाई यह है कि वे मसीह की उस देह को नकार रहे हैं जिसे यीशु ने स्थापित करना चाहा था। जो लोग परमेश्वर की इच्छा को सचमुच में समझते हैं, उनके लिए अपने प्रेरितों को दी गई प्रभु की आज्ञा से यह स्पष्ट है कि उन्हें लोगों को ''चेले बनाना,'' ''उन्हें बपतिस्मा देना,'' और ''वे सब बातें मानना सिखाना'' जिनकी उसने उन्हें आज्ञा दी थी, आवश्यक था (मत्ती 28:19, 20)। यह कठिन बात है! जब पतरस और अन्य प्रेरितों ने पिन्तेकुस्त के दिन यानी कलीसिया के ''जन्मदिन'' पर पहला सुसमाचार संदेश सुनाया था तो ''जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए'' जो ''प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे'' (प्रेरितों 2:41, 42)।

जहां जहां सुसमाचार सुनाया गया और उसे माना गया था वहां से विश्वासियों के समुदाय बनने का यह आरम्भ था। इसके बाद उन्हें ''कलीसियाएं'' (*ekklēsiai*) कहा जाने लगा जिसका अर्थ मुख्यत: ''सभाएं'' या ''मण्डलियां'' है। ये लोगों के स्थानीय समूह होते थे जो आराधना के लिए इकट्ठा होते और जो कुछ उन्होंने सीखा होता था, उसे विश्वास के सामान्य जीवन में व्यवहार में लाते थे। आपस में मिलते रहकर वे सब बातें सीखते रहे जो ''प्रेरितों की शिक्षा'' से मेल खाती थीं (प्रेरितों 2:42; देखें मत्ती 28:20)।

मसीह और उसकी शिक्षा को इन मानने वालों के लिए सबसे प्रचलित पद ''चेले'' था। ''चेला'' (*mathētēs*) का अर्थ है ''शिष्य'' या ''शिक्षार्थी।'' इसका इस्तेमाल उसके लिए किया जाता है जो यीशु की शिक्षा और जीने के उसके ढंग को सीखने के लिए उसके पीछे चला हो। यीशु का हर चेला मसीही के जीवन को जीना सीख रहा था और अपने स्वामी और प्रभु के प्रति समर्पित था। उसकी कक्षा और उसकी प्रयोगशाला कलीसिया ही थी।

यदि पहली सदी के मसीही इस नमूने को न मानते होते और स्थानीय मण्डलियों यानी वास्तविकता से न जुड़े होते, तो हमारे पास नये नियम के पत्र नहीं होने थे। पौलुस और इल्हाम प्राप्त लेखकों के लिए वो पत्र जो आज हमारे पास है, जो उनके प्राप्तकर्त्ताओं के नाम से सम्बोधित किए गए हैं, लिखना सचमुच में असम्भव होता। इसमें हमारा वर्तमान पाठ यानी गलातिया के रोमी इलाके की कलीसियाओं के नाम पत्र शामिल है। पौलुस के लिखे कई पत्रों की तरह इस पत्र में भी मसीह के सुसमाचार के बुनियादी तथ्य हैं। इसमें ताड़नाएं, चेतावनियों और उपदेश भी हैं। यह सब निजी और सार्वजनिक रूप में उनके जीवनों के हर पहलू को निर्देशित करने और यथार्थ में चलाने के लिए बनाया गया था।

आज बहुत से प्रचारक और उपदेशक यह ज़ोर देते हुए कि नया नियम हर युग के सब मसीही लोगों के लिए आज्ञाओं और शिक्षाओं की पुस्तक बनाने के लिए नहीं था, परमेश्वर

के वचन को कम महत्व देते हैं। वह इस बात से संतुष्ट हो जाते हैं कि यह तो केवल निजी कलीसियाओं के नाम ''प्रेम पत्र'' थे जो उस समय के विशेष परिस्थितियों से निपट रही थीं। इन उपदेशकों के अनुसार इल्हाम प्राप्त लेखकों को कुछ पता नहीं था कि वे प्रामाणिक ''पवित्र शास्त्र'' को लिख रहे हैं जो हर युग के मसीही लोगों के आचरण को चलाने के लिए था।

नये नियम के पत्र चाहे आम तौर पर खास परिस्थितियों की बात करने के लिए विशेष मण्डलियों के पास भेजे जाते थे, पर यह भी सच है कि उन्हें प्रामाणिक माना जाता था और एक दूसरे के साझा करने के लिए दिया जाता था। कुलुस्सियों को पौलुस ने लिखा, ''जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना'' (कुलुस्सियों 4:16)। इसके अलावा पतरस ने लिखा कि:

> ... जैसा हमारे प्रिय भाई पौलुस ने भी [द्वितीय आगमन के सम्बन्ध में] उस ज्ञान के अनुसार जो उसे मिला, तुम्हें लिखा है। ... जिनमें कितनी बातें ऐसी हैं, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाईं खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं (2 पतरस 3:15, 16)।

इस वचन में कई मुख्य सच्चाइयां मिलती हैं। (1) पतरस ने पौलुस के पत्रों को परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए यानी ईश्वरीय ''बुद्धि'' का परिणाम माना। (2) उसने भी इन लेखों को ''पवित्र शास्त्र की और बातों'' के साथ रखा। (3) पतरस ने मसीही लोगों के नाम लिखते हुए पौलुस के पत्रों को पाठकों की बड़ी संख्या के लिए प्रामाणिक माना, ''उन परदेशियों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया में तितर-बितर होकर रहते हैं'' (1 पतरस 1:1; देखें 2 पतरस 3:1, 2)। (4) पतरस केवल यही नहीं जानता था कि उसके पत्र एशिया माइनर के बड़े भाग में वितरित किए जा रहे थे बल्कि उसने यह भी संकेत दिया कि पौलुस के पत्र उस इलाके में जगह जगह वितरित किए गए थे। अन्य शब्दों में, नये नियम के लेखों का प्रसार और संग्रह शुरू में ही हो चुका था। (5) पतरस ने उन्हें जिन्होंने पवित्र शास्त्र को ''खींचना'' या ''घुमाना'' (NKJV) था, कड़ी चेतावनी दी क्योंकि ऐसा करना ''विनाश'' की ओर ले जाता है।

वाचाओं में अंतर करना (5:7)

गलातियां 5:7 में पौलुस ने मसीही लोगों को बताया कि वे मसीह के सुसमाचार में अपनी आत्मिक दौड़ ''भली भांति दौड़ रहे'' थे परन्तु यहूदी मत की शिक्षा देने वालों द्वारा उन्हें ''रोक दिया'' गया था। उसने इन नये मसीहियों को समझाना जारी रखा कि व्यवस्था और सुसमाचार का आपस में मेल नहीं है। दोनों की कोई तुलना नहीं है। मसीही व्यक्ति के लिए दोनों में एक चुनना आवश्यक है चाहे वह मूसा को चुने या मसीह को, सीनै को चुने या गुलगुता को। धर्मी ठहराए जाने के माध्यम के रूप में दोनों में से किसी एक को दूसरे के साथ मिलाने का कोई भी प्रयास असम्भव काम को करना है। हमारे अपने समय में भी परमेश्वर की खोज करने वाले अच्छे भले लोगों को दोनों वाचाओं के बीच इस निर्णायक अंतर को करना कभी नहीं सिखाया गया है। दास

बनाने वाली व्यवस्था की वाचा मूसा के द्वारा सीनै पहाड़ पर इस्राएलियों को दी गई थी। इसके बिल्कुल उलट, अनुग्रह की स्वतन्त्र करने वाली वाचा यीशु के घावों से बही थी जब वह गुलगुता के क्रूस पर दुख सहकर मर गया।

भली मंशा वाले परन्तु भूल में पड़े धार्मिक समूह अपने अनुयायियों पर मूसा की व्यवस्था की शिक्षाएं थोपते जा रहे हैं। उदाहरण के लिए वे अपने सदस्यों की आमदनी का दसवां भाग (दसमांश) ही मांगते हैं, कुछ खास भोजनों को खाने से मना करते हैं, या सब्त के दिन को मानने पर ज़ोर देते हैं। परन्तु नई वाचा में ऐसी शर्तों के लिए कोई जगह नहीं है, क्योंकि उन्हें मिटा दिया गया है।[128]

जब कोई दूसरों को मूसा की व्यवस्था और मसीह के सुसमाचार के बीच अंतर समझाने की कोशिश करता है तो उसे कई प्रकार के जवाब सुनने को मिल सकते हैं। कुछ लोग कहते हैं, ''मैं परमेश्वर का वफ़ादार हूं। मैं दस आज्ञाओं को मानता हूं।'' इस सोच में दोष है क्योंकि व्यवस्था को पूर्ण रूप में मानने और अपने स्वयं की खूबी के द्वारा धर्मी होने के योग्य कोई भी नहीं है। और लोग यह उत्तर दे सकते हैं, ''पुराना नियम भी तो परमेश्वर का वचन ही है।'' यह बात बिल्कुल सच है। परन्तु पुराना नियम परमेश्वर की पुरानी वाचा के लोगों यानी इस्राएलियों के लिए परमेश्वर का वचन था, जिन्हें उसने मिस्र की दासता से छुड़ाया था (निर्गमन 19:1-6)। सब जातियों के लिए वाचा के रूप में इसे कभी नहीं दिया गया था और यह पाप उठाने के योग्य भी नहीं था। नई वाचा परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा सब लोगों को उद्धार के उसके शुभ समाचार को बताते हुए हर जाति के लोगों में बताई जानी आवश्यक है।[129] यह शुभ समाचार यानी ''सुसमाचार'' आज हमारे समय के लिए परमेश्वर का वचन है। यह ''अविनाशी सुसमाचार'' है और इसके बाद कोई और सुसमाचार कभी नहीं होगा।[130]

गलातियों के नाम पत्र हर पीड़ी के मसीही लोगों को छुटकारा दिलाने वाली यीशु की मृत्यु पर भरोसा करने के पर्याप्त होने को स्वीकार करने की चुनौती देता है। हमें प्रभु के रूप में उसके आगे समर्पण ऐसी वफ़ादार आज्ञापालन में करना आवश्यक है जिसका संकेत ''हे प्रभु'' में (मत्ती 7:21) है। इस सुसमाचार के अलावा किसी भी अन्य बात पर निर्भर रहने का अर्थ आज्ञा न मानना और उन सभी आशिषों से वंचित होना है जो ''मसीह में'' होने में पाई जाती हैं।

''सत्य'' (5:7)

कोई सत्य के बारे में अलग-अलग क्षेत्रों में बोल सकता है। एक उदाहरण कानून का दायरा है। कचहरी में उद्देश्य तथ्यों को सुनिश्चित करने का होता है। गवाह को मामले से जुड़ी जानकारी देने को कहा जाता है। अमरीकी अदालत में वह ''सच, पूरा सच, और सच के सिवाय और कुछ नहीं बोलने'' का वचन देता है। वह झूठ के विरोध में दी जाने वाली गवाही की सत्यता की पुष्टि करता है।

पिलातुस ने, जिस पर यीशु का न्याय करने का कठिन काम आ पड़ा था खीझकर पूछा, ''सत्य क्या है?'' (यूहन्ना 18:38)। वह समझ गया था कि यीशु को यहूदियों ने उसके सुपुर्द अपनी ईर्ष्या के कारण किया था। उसे विश्वास था कि प्रभु निर्दोष है परन्तु यीशु उसके साथ अभी अभी किए गए अंगीकार को नज़रअन्दाज नहीं कर सकता था। पिलातुस ने यीशु से पूछा

था, ''तो क्या तू राजा है ?'' प्रभु का उत्तर तुरन्त और ज़ोरदार था, ''तू कहता है कि मैं राजा हूं मैंने इसलिए जन्म लिया और इसलिए संसार में आया हूं कि सत्य की गवाही दूं ...'' (यूहन्ना 18:37)। यहां सत्य यह था कि यीशु ख्रिस्त मसीहा है।

पिलातुस से कही यीशु की यह बात 1 तीमुथियुस 6:13 में पौलुस के ''मसीह यीशु जिसने पिलातुस के सामने अच्छा अंगीकार किया'' के हवाले की पृष्ठभूमि लगता है। ''सत्य'' वह ''अच्छा अंगीकार'' है जो हर उस व्यक्ति से करने को कहा जाता है जो मसीह के पास आता है यानी यह कि यीशु सचमुच में राजा, प्रतिज्ञा किया हुआ मसीहा और जीवते परमेश्वर का पुत्र है (देखें मत्ती 16:16; यूहन्ना 11:27; प्रेरितों 8:37)।

सत्य को खोजें (5:11)

गलातियों की पुस्तक पढ़ने वाले आज के बहुत से पाठकों के लिए हो सकता है कि लगे कि खतने के शारीरिक कार्य का कोई परिणाम नहीं है। पाप में गिरी मनुष्यजाति को छुड़ाने की परमेश्वर की सनातन मंशा में यह शारीरिक, सांसारिक आप्रेशन एक छोटी सी बात है। यह कैसे हुआ कि परमेश्वर के चुने हुए लोग जो अपने प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा की राह देखते हुए तरस रहे थे (लूका 2:25) हमें अनावश्यक लगने वाले शारीरिक कार्य को न करके इतनी बुरी तरह से इस कारण ठोकर खा गए ?

उन्होंने अपने विलक्षण दृष्टिकोण के कारण ठोकर खाई। खतना व्यवस्था के अधीन डेढ़ हज़ार वर्ष तक परमेश्वर की आज्ञा रहा था (लैव्यव्यवस्था 12:1-3)। यह उस समय से कम से कम 430 वर्ष पूर्व उनके आदरणीय पूर्वज अब्राहम से की गई उसकी वाचा का चिह्न था (3:17 पर टिप्पणी देखें)। स्पष्टता इस्राएली लोग मिस्र में अपनी दासता के दौरान खतना करवाते थे परन्तु जंगल में घूमने के दौरान नहीं। इस कारण यरदन नदी पार करने के बाद गिलगाल में पुरुषों और जंगल में जन्मे लड़कों का खतना किया गया था। कनान पर विजय पाने से पूर्व उनका खतना हुआ था (यहोशू 5:2-9)। यहूदियों के लिए खतने का ऐतिहासिक महत्व हमें कम से कम कुछ समझने में सहायता कर सकता है कि कुछ यहूदी मसीही चाहे गलत ही कर रहे थे पर वे अन्यजातियों पर इस संस्कार को थोप रहे थे।

उन्हें ठोकर लगी थी क्योंकि यीशु वैसा मसीहा नहीं था जैसे मसीहा की वे उम्मीद कर रहे थे। उसके दुख सहने की, की गई भविष्यवाणियों के बावजूद (भजन 22; यशायाह 53), यहूदी लोग एक राजनैतिक राजा की उम्मीद कर रहे थे। वे एक बदला लेने वाले को चाह रहे थे जो सेना बनाकर रोमी सरकार के जुए को उतार फैंके और देशों के बीच इस्राएल को सही ठहराए। जब यीशु उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा तो उन्होंने परमेश्वर के पहले से ठहराए हुए छुटकारे के कार्य के माध्यम और छुटकारे के साधन बनकर, उसे क्रूस पर दे दिया (प्रेरितों 2:22-24)। इससे वह वचन पूरा हुआ जिसमें कहा गया था कि यीशु ''तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी पहचान थी'' (यशायाह 53:3क)। पहले से मालूम ''बचे हुए'' लोगों को छोड़ (रोमियों 11:1-5), इस्राएल के लिए क्रूस पर दिया मसीह ''ठोकर की चट्टान'' था।

उन्हें ठोकर लगी क्योंकि वे सत्य को मानने को तैयार नहीं थे। हमें किसी डॉक्ट्रिन या

परम्परा को केवल इसलिए नहीं मान लेना चाहिए क्योंकि ''यह पुराने समय से चलती आ रही है।'' इसके बजाय हमें सच्चाई की खोज करते रहना आवश्यक है। परमेश्वर के प्रति हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी यही है।

उन्होंने ठोकर खाई क्योंकि आदतें व्यक्ति को सुरक्षा का झूठा अहसास करवा सकती हैं। प्राचीनकाल के इस्राएलियों की तरह हम उन सब लोगों की अज्ञानता और धोखे के शिकार हो सकते हैं जिन्होंने ''सत्य से प्रेम नहीं किया जिससे उनका उद्धार होता'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:10)। यह वचन चाहे मुख्यतः उन लोगों के सम्बन्ध में है जो ''अधर्म से प्रसन्न होते'' हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:12), परन्तु इसमें सच्चाई के प्रति उदासीनता की बात भी है।

सेवा करने के लिए स्वतन्त्र किए गए (5:13)

मसीही व्यक्ति की रोशनी सबसे अधिक प्रेमपूर्वक दास के रूप में विनम्र रहने के द्वारा चमक सकती है। केवल परमेश्वर के अनुग्रह की अद्‌भुत बातें करना ही काफ़ी नहीं है। हमें अपने आत्मा के वास का दान देने में परमेश्वर की मंशा यह थी कि यह अनुग्रह ''आत्मा के फल'' में हमारे जीवनों में दिखाई दे। यह फल उस बदलाव से आता है जो हमारे परमेश्वर के आत्मिक स्वभाव को अपना लेने पर आत्मा हमारे व्यवहारों और हमारे कामों में लाता है।

पतरस ने परमेश्वर की उन बड़ी प्रतिज्ञाओं की बात की जो उसने हमें दीं ''ताकि इन के द्वारा तुम [हम] उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, *ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी* हो'' जाएं (2 पतरस 1:4)। किसी और जगह इस आत्मिक प्रक्रिया को इन शब्दों में व्यक्त किया गया है कि हम ''प्रभु यीशु मसीह को पहिन'' लें ''और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न'' करें (रोमियों 13:14)। कोई भी व्यक्ति जो मसीही बन चुका है उसे चाहिए कि ''पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार'' डालें ''और नए मनुष्यत्व को पहिन [ले] जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है'' (कुलुस्सियों 3:9, 10)।

पौलुस इस अनोखी बात को बिल्कुल साफ-साफ समझता था जो परमेश्वर का इरादा था, और अपने पुत्र को भेजकर उसने अपने अनुग्रह को पूरा किया था। यीशु ने हमारे लिए वह किया जो हम अपने लिए नहीं कर सकने के अयोग्य थे। उसके बलिदान के द्वारा ''व्यवस्था की विधि हममें जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी'' की गई है (रोमियों 8:4)। अब उसके आत्मा के दान के द्वारा हमारे लिए आत्मिक चलन को सम्भव किया गया, इस कारण हमारे लिए इसे गम्भीरतापूर्वक लेना आवश्यक है।

जैसा कि 5:16-26 में पौलुस ने साफ़ किया, आत्मा में चलना हमेशा संघर्षपूर्ण ही रहेगा। हमारे अंदर परमेश्वर के आत्मा के काम करने से हम ''आत्मा से देह की क्रियाओं को मारने'' को देख सकते हैं (रोमियों 8:13)। परमेश्वर की महिमा हो कि उसने हमें अपने साथ चलने के योग्य बनाकर और पवित्र आत्मा के दान के द्वारा विजय दिला दी है।

आत्मा का आना (5:16)

नई वाचा के समय में रहने की बड़ी आशिषों में एक यह कि हम पीछे को मुड़कर देख

सकते हैं कि परमेश्वर पुरानी वाचा में किस प्रकार से प्रतिज्ञाएं कीं और फिर उन्हें पूरा करते हुए अपना वचन निभाया। इनमें से सबसे बड़ी प्रतिज्ञा मसीहा (अपने पुत्र यीशु नासरी) को भेजना था, जिसका मिशन खोए हुओं को छुड़ाना था। इस देह में भी ''शारीरिक और पाप के साथ बिका हुआ'' (रोमियों 7:14), जीवित रहने के व्यावहारिक साधन के साथ साथ हमें स्वर्ग की आशा देने के लिए आया।

रोमियों 7:24 में पौलुस ने छुटकारा न पाए हुए व्यक्ति का मायूसी भरा सवाल उठाया: ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?'' पौलुस के लिए खुद यह सवाल अलंकारिक था क्योंकि उसे इसका उत्तर अच्छी तरह मालूम था। अगली आयत में उसने पुकारकर कहा, ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो!'' (रोमियों 7:25क)। परमेश्वर ने अपने पुत्र की मृत्यु और जी उठने के द्वारा तथा उसके बाद अपने आत्मा के बहाए जाने के द्वारा पाप पर विजय दिलाई। उसने भविष्यवक्ताओं के द्वारा आत्मा की प्रतिज्ञा की थी[131] और समय के पूरा होने पर अपना वचन पूरा किया।[132]

यूहन्ना ने घोषणा की कि मसीह इस संसार में ''इसलिए प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे'' (1 यूहन्ना 3:8ख)। यीशु का मिशन पाप और उसके भयानक परिणामों पर विजय पाना था। पौलुस ने समझाया कि परमेश्वर की अद्‌भुत प्रतिज्ञाओं के द्वारा हम ''उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो'' सकते हैं (2 पतरस 1:4)। मसीह के क्रूस और पवित्र आत्मा के वास के द्वारा, हम शैतान के दुष्ट शासन से होने वाले विनाश से बच सकते हैं। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि मैं समझता हूं कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं'' (रोमियों 8:18)।

बड़े युद्ध (5:17)

आइए देखते हैं कि पौलुस गलातियों 5:17 में किसकी बात कर रहा था। शरीर और आत्मा के बीच विरोध पृथ्वी पर लड़े जाने वाले सबसे बड़े, सबसे खतरनाक युद्ध से कम नहीं है। इसका सबसे घातक पहलू यह है कि अधिकतर लोगों को तो पता भी नहीं है कि यह युद्ध लगा हुआ है!

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका और सोवियत संघ युद्ध के भयानक कगार पर थे (जिसे आज हम ''शीत युद्ध'' कहते हैं)। ये दोनों परमाणु महाशक्तियां महासागर के पार एक दूसरे पर घूरती रहती थीं। वे इस बात को छोड़ कि युद्ध के परिणाम से दोनों में से कोई भी विनाशक परमाणु बटन दबा देगा, ''एक दूसरे का पक्का विनाश'' होगा, सहमत थे। उस परमाणु सर्वनाश का खतरा तो अब टल गया है, परन्तु अब नये खतरे पैदा हो गए हैं।

''मसीही'' का ठप्पा लगी की किसी भी चीज़ को आज संसार में खतरा है। मसीही जगत अनेकतावाद, सांसारिकवाद, तेजी से फैलते अनैतिकता और अनास्तिकता की सब को निगलने वाली धारा के सामने सिकुड़ रहा है। तौभी यह बात सच है कि ''जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है'' (नीतिवचन 14:34)।

जिस भयानक युद्ध में हम सब लगे हुए हैं उसके अनन्तकालिक परिणाम हैं। यह मनुष्य के शरीर में उसके प्रवास दौरान और इस युद्ध में बच जाने की उसकी एक सम्भावना की अस्थाई

स्थिति के बीच कभी न खत्म होने वाला युद्ध है। केवल आत्मा उसे उन अनन्त क्षेत्रों में उकाब के पंखों पर ले जा सकता है जो मूल में परमेश्वर के इरादे में रचा गया था (2 कुरिन्थियों 5:4, 5)। यह युद्ध सचमुच में महत्वपूर्ण है। हमारा अनन्त भविष्य पूरी तरह से इसी के परिणाम पर निर्भर है।

आत्मिक बदलाव (5:17)

यदि हम आदम और हव्वा की जगह होते तो हम में से किसने अलग ढंग से काम करना था? यह समझना कठिन नहीं है कि वे इतनी आसानी से क्यों और कैसे छले गए थे, विशेषकर तब जब उन्हें अभी पाप का कोई अनुभव नहीं था। फिर भी अपने कामों के लिए जवाबदेह उन्हीं को ठहराया गया था और अदन से निकाल दिया गया था।

बेशक परमेश्वर हम से जिन्हें न केवल पवित्र आत्मा के दान की आशीष मिली है बल्कि परमेश्वर की प्रेरणा से दिए पवित्र शास्त्र में उपलब्ध कराई जानकारी भी है, अधिक की उम्मीद करता है। क्या हमारा न्याय और भी कठोरता से नहीं होगा यदि हम सांसारिकता के विरुद्ध दी गई आत्मा की चेतावनियों को अनदेखा करते हैं? संस्कृति की ओर से और सांसारिक होने पर हमें उसके जैसे बनने की परीक्षा का सामना करना आवश्यक है (रोमियों 12:1, 2)। हमें यह याद रखना आवश्यक है कि यह संसार अस्थाई है परन्तु स्वर्ग अनन्तकाल तक रहने वाला है (2 कुरिन्थियों 4:16-18)।

हमारी इच्छाएं (5:17)

हमारे असली मन का पता उससे उतना नहीं चलता जो *हम करते हैं* बल्कि उससे चलता है जो *हम वास्तव में करना चाहते हैं*, हमारे अंदर उस इच्छा को पूरा करने के लिए मन या शरीर के अंदर सामर्थ न हो। हो सकता है कि कोई व्यक्ति आज्ञापालन के काम करता रहे परन्तु हर बार वह उसे नापसंद हो। इसी प्रकार से हो सकता है कि कोई व्यक्ति (चाहे रो-रो कर) अपने प्रभु की भली, प्रेमपूर्वक सेवा करे, जिसके लिए वह असमर्थ है।

''तुम व्यवस्था के अधीन नहीं हो'' (5:18)

मसीही व्यक्ति के शारीरिक पुनरुत्थान की अंतिम विजय की ओर देखते हुए पौलुस ने कुरिन्थुस के लोगों को लिखा:

> ... तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है; और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है (1 कुरिन्थियों 15:54-57)।

पाप और मृत्यु पर अंतिम विजय पूरी तरह से परमेश्वर के उदार अनुग्रह का दान है।

साधारण तौर पर पक्के इरादे के द्वारा कि मनुष्य उस तक कैसे पहुंच सकता है, परमेश्वर ने अपने अनुग्रह को उपलब्ध करवाया है। परमेश्वर के सामने व्यवस्था की उसकी पुरानी वाचा

के दोषरहित आज्ञापालन के द्वारा ''धार्मिकता'' को कमाने की कोशिश का नियम बदल गया है। इसके बजाय अब हम परमेश्वर के उत्तम निर्णय को हमारी जगह उसके प्रिय और पाप रहित पुत्र के मरने को मानकर विश्वास से स्वीकार करते हैं। उसकी धार्मिकता के द्वारा अब हमें परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी गिना जा सकता है। यह धार्मिकता अनुग्रह की उसकी नई वाचा के अनुसार है, जिसकी प्रतिज्ञा इसके सैकड़ों वर्ष पहले की गई थी (यिर्मयाह 31:31-34) और क्रूस पर यीशु के लहू बहाए जाने में पूरी की गई (लूका 22:20; इब्रानियों 9:11-15)।

प्रकृति के नियम के अनुसार, जब कोई मनुष्य परमेश्वर के एक नियम को तोड़ता है तो वह अपराधी बन जाता है चाहे उसने बाकी हर नियम को माना हो। नियम तोड़ने वाला होने के कारण उसे उस कानूनी सिस्टम के द्वारा उपयुक्त दण्ड दिया जाना आवश्यक है। जैसा कि याकूब ने इसे लिखा है, ''जो कोई [मूसा की] सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरे'' (याकूब 2:10)।[133]

अदालत में निर्दोष या दोषी होने का कोई समझौता नहीं होता, जुर्म चाहे छोटा हो या बड़ा। सारी सुनवाई हो जाने के बाद ज्यूरी के सामने यह प्रश्न होता है कि ''आप प्रतिवादी को क्या पाते हैं?'' उत्तर या तो ''निर्दोष'' में होता है या ''दोषी।''

व्यवस्था की शर्तों को पूरा करते हुए ''जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं वे सब शाप के अधीन हैं।'' व्यवस्था स्वयं भी सम्पूर्ण आज्ञापालन की मांग करती थी: ''जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है'' (3:10; देखें व्यवस्थाविवरण 27:26)। एक भी व्यक्ति (यीशु मसीह को छोड़) व्यवस्था को पूरी तरह से मानने के योग्य नहीं था।

किसी भी व्यक्ति के लिए जो पवित्र शास्त्र की दोनों वाचाओं से परिचित है, व्यवस्था का सबक स्पष्ट होना चाहिए। पुरानी वाचा के द्वारा उद्धार प्राप्त करने की कोशिश करना अपने आप कर लेने की पूरी तरह से निराशा वाली बात होगी। क्योंकि किसी भी व्यक्ति का व्यवस्था को पूरी तरह से मानने से उद्धार नहीं हो सका। यीशु में विश्वास के द्वारा अनुग्रह की वाचा अलग है। कोई भी सच्चा विश्वासी परमेश्वर की ओर से मुफ्त वरदान के रूप में उद्धार, धर्मी ठहराए जाने और छुटकारे को प्राप्त कर सकता है। जब यह युग अपने अंतिम सिरे पर पहुंचेगा ''और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:16, 17) तब परमेश्वर की महिमा में प्रवेश करने का एकमात्र तरीका, कर्म (पूर्ण आज्ञापालन) नहीं बल्कि विश्वास होगा।

कोई किसी वाचा के उन नियमों से क्यों जुड़ा रहेगा जो केवल मसीह तक लोगों को पहुंचाने की तैयारी और अस्थाई माध्यम होने के लिए बनाई गई थी, परन्तु उद्धार का मार्ग होने के लिए कभी नहीं? शिक्षक का युग खत्म हो गया है (3:23-25)। मसीहा के शासन की चमकीली सुबह हो चुकी है यानी वह दिन चढ़ गया है, जब ''मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है'' (रोमियों 3:28)।[134]

''गन्दे काम'' (5:19)

गलातियों 5:19 में ''गन्दे काम'' शब्द में आज के मीडिया द्वारा ''मनोरंजन'' के रूप में

फैलाए जा रहे हर प्रकार के कामुक इशारे और अश्लीलता आ जाती है। यीशु ने कहा, ''परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उससे व्यभिचार कर चुका'' (मत्ती 5:28)। आत्मा के चलाए चलने के इच्छुक लोगों के ध्यान से यीशु के शब्द ऐसे ''मनोरंजन'' को निकाल देते हैं।

कुछ मनोवैज्ञानिक तथा अन्य ''अधिकारी'' हो सकता है कि पोर्नोग्राफी[135] तथा सेक्स से सम्बन्ध अपराधों के बीच के सम्बन्धों को नकार दें परन्तु प्रमाण इनके बीच सम्बन्ध स्थापित करना जारी रखता है। पोर्नोग्राफी को एक बुरी लत के रूप में दिखाया गया है। ऐसा दिमाग खराब करने वाला काम उन बेशर्म व्यापारियों द्वारा दिया जाता है जिनका कारोबार हर साल करोड़ों डॉलर तक पहुंचकर एक बड़ा उद्योग बन गया है। मनुष्य के नीच स्वभाव को आकर्षित करके यह जवानों और बूढ़े सबका एक समान नैतिक तंत्र को भ्रष्ट करता है, उन्हें हर प्रकार के पतन और बिगाड़ की ओर गुमराह करता है। यदि ये आनन्द लेने वाले कामुक तस्वीरें देखना से बंद भी कर दें, जो कि आम तौर पर होता नहीं है तो लगता नहीं है कि कोई गम्भीर मसीही इस बात का इनकार करे कि ''गन्दे काम'' शब्द साफ़ साफ़ इस वर्तमान महामारी को गलत ठहराता है।

ये तस्वीरें चाहे सिनेमा घर में दिखाई जाएं, टैलिविज़न पर, कम्पयूटर पर या किताबों में, ये दिमाग को खराब करने वाली, लोगों को नाजायज़ काम करने के लिए उकसाते वाली और मनुष्य की परमेश्वर द्वारा दी गई उन स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं को जो विवाह के बिस्तर के लिए सुरक्षित हैं, गहरी आघात पहुंचाती हैं।

मूर्तिपूजा (5:20)

बहुत से लोग जो इस प्रगतिशील, आधुनिक संसार में रहते हैं, यूनानी-रोमी काल के काफिर मूर्तिपूजा को आदिकालीन और मूर्खतापूर्ण कहेंगे। परन्तु क्या ऐसा हो सकता है कि हमें अपने समय की मूर्तों का सामना करना पड़े और वे हमें लुभाएं? क्या आज की परिस्थितियों को प्राचीन मूर्तिपूजा से मिलाया जा सकता है?

पौलुस ने इफिसुस के भाइयों को समझाया ''प्रिय, बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश्य बनो'' (इफिसियों 5:1) और एक चौंकाने वाली विरोधसूचक बात जोड़ दी:

> और जैसा पवित्र लोगों के योग्य है, वैसा तुम में व्यभिचार, और किसी प्रकार अशुद्ध काम, या लोभ की चर्चा तक न हो। ... क्योंकि तुम यह जानते हो, कि किसी व्यभिचारी, या अशुद्ध जन, या *लोभी* मनुष्य की, जो *मूरत पूजने वाले* के बराबर है, मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं (इफिसियों 5:3-5)।

इसी प्रकार से पौलुस ने कुलुस्सियों को मसीह के साथ आत्मिक मृत्यु और जी उठने के द्वारा उसमें से निकल जाने की बात लिखी। उसने उन्हें पवित्र किए जाने के अपने मार्ग में आगे बढ़ने का आग्रह किया। उन्हें ऐसा उसे मारकर जो अभी भी उनके शरीर में पाप वाली चीज़ बनी हुई थी, करना था: ''इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हों, अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता ... और *लोभी* को जो *मूर्तिपूजा* के बराबर'' (कुलुस्सियों 3:5; NKJV)।

क्या लोभ सचमुच में इतना बुरा हो सकता है कि यह लोगों को, यहां तक कि इसने मसीही

लोगों को भी स्वर्ग से निकाल देना था? ''जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डूबा देती हैं'' (1 तीमुथियुस 6:9)। धन का जहां परमेश्वर की ओर से मिली आशीष के रूप में आनन्द लिया जाना चाहिए वहीं इसमें परमेश्वर को छोड़ धन में गर्व और भरोसा करने की परीक्षाओं में पड़ना शामिल है (1 तीमुथियुस 6:17)। इस सम्बन्ध में लोभ को मूर्तिपूजा के बराबर बताया गया है। कोई भी चीज़ जो हमारे लगाव और समर्पण में परमेश्वर की जगह ले ले, या कोई भी चीज़ जिसे हम अपने भरोसे का आधार बनने दे, हमारे लिए मूर्ति बन चुकी है।

उस धनवान, जवान हाकिम को जो यीशु का चेला बनने के लिए आया था, उसके शब्द कठोर लगे होंगे: ''तुझमें एक बात की घटी है। जा, जो कुछ तेरा है उसे बेच कर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले'' (मरकुस 10:21ख)। अगली आयत भयंकर परिणाम को दिखाती है: ''इस बात से उसके चेहरे पर उदासी छा गई, और वह शोक करता हुआ चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था'' (मरकुस 10:22)। इस अच्छे निश्चय वाले खोजी के रास्ते में प्रभु ने इतनी बड़ी रुकावट क्यों रख दी?

यीशु ने जिसने ''उस पर दृष्टि करके उससे प्रेम किया'' (मरकुस 10:21क), उस रुकावट को देख लिया था जो उस में पहले से थी। उसे मालूम था कि उस जवान का लगाव अपनी दौलत में था। बेशक उस व्यक्ति का मन साफ़ और निष्कपट था। प्रभु के साथ अपनी मुलाकात से पहले उसका इस तथ्य से कोई सम्बन्ध नहीं था कि वह एक मूर्तिपूजक था। तौभी अपने धन में उसका भरोसा और यह चोट पहुंचाने वाली खोज उसके लिए बहुत बड़ी बात थी। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा था, ''कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते'' (मत्ती 6:24)।

हमें अपनी समीक्षा इस भावुक लड़ाई के प्रकाश में करनी चाहिए। बेशक यीशु हम से अपने खुद के प्राण से भी अधिक प्रेम करता है परन्तु वह इस संसार की चीज़ों और परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों की इतनी महत्वपूर्ण सच्चाई से समझौता नहीं कर सकता। मूर्तिपूजा परमेश्वर और मनुष्य के बीच रूकावट है। जब जायदाद व्यक्ति की मालिक हो जाए और वह उसका गुलाम हो जाए तो वह परमेश्वर का सेवक नहीं रह सकता।

इस कहानी का एक सकारात्मक पहलू है। स्पष्ट है कि यीशु के शब्दों से परेशान चेलों ने पूछा, ''तो फिर किस का उद्धार हो सकता है?'' (मरकुस 10:26)। उसने उत्तर दिया, ''मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है'' (मरकुस 10:27)। इसलिए उम्मीद सब को दी गई है।

पौलुस द्वारा लिखे गए दो वचन नये नियम में मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में विशेष ध्यान देने योग्य हैं:

> क्योंकि बहुतेरे ऐसी चाल चलते हैं, जिसकी चर्चा मैंने तुम से बार-बार की है, और अब भी रो रोकर कहता हूं, कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उन का

> अन्त विनाश है, उन का ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं (फिलिप्पियों 3:18, 19; NKJV)।
>
> अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे-सादे मन के लोगों को बहका देते हैं (रोमियों 16:17, 18; NKJV)।

बेशक इन वचनों में बताए गए लोगों का कलीसिया में प्रभाव था परन्तु फिर भी पौलुस उन्हें मूर्तिपूजक मानता था। उनका लक्ष्य मसीह के कार्य के लिए सेवा के बजाय सांसारिक लाभ पाना था। वे अपनी शारीरिक भूख (''अपने पेट'') मिटाना चाहते थे। 2 तीमुथियुस 3:4 की भाषा का इस्तेमाल करें तो वे ''परमेश्वर के नहीं वरन सुख विलास के चाहने वाले'' थे। वे सुख को वह स्थान देने को तैयार थे जो केवल और केवल परमेश्वर का था।

कोई देश परमेश्वर के प्रबन्ध को भुलाकर अपनी ही शक्ति पर भरोसा करके मूर्तिपूजक बन सकता है। हम यह कभी न सोचे कि मूर्तिपूजा गुजरे जमाने की बात हो गई है। शैतान आज सक्रिय है पर उस प्राचीन विरोधी ने मूर्तिपूजा के उन रूपों को बदल दिया है जिनका हमें सामना करना होता है। हो सकता है कि हमें वह मूर्तियां न लगे पर हैं, पर हैं वे मूर्तें हीं। मूर्तिपूजा आज भी वैसे ही खत्म नहीं हुई है जैसे शैतान खत्म नहीं हुआ।

बैर की परीक्षा (5:20)

''दुर्भावना'' शब्द में ''के विरुद्ध भावना'' का संकेत मिलता है। कई बार किसी दूसरे के प्रति ऐसा नकारात्मक व्यवहार किसी और प्रकार की व्याख्या को नकार सकता है। हम उस व्यक्ति को ना पसंद कर होते हैं और हमारा मानना होता है कि हम उस भावना को बदल नहीं सकते हैं। व्यक्तिगत आकर्षण के प्रति मानवीय प्रवृति को हमारा प्रभु समझता था। उदाहरण के लिए उसका मरियम, मार्था, और लाज़र के साथ एक विशेष सम्बन्ध था (यूहन्ना 11:3, 5)। इसके अलावा उसका यूहन्ना के साथ निकट सम्बन्ध था, ''उस चेले को जिससे वह प्रेम रखता था'' (यूहन्ना 19:26; देखें 20:2)। हम जानते हैं कि यीशु हर किसी के प्रति परोपकारी *अगापे* प्रेम को दिखाता था परन्तु उस में कुछ खास लोगों के प्रति जो उसे खास तौर पर प्रिय थे भावनात्मक लगाव के कारण मैत्री प्रेम रखता था, इसलिए ऐसा लगता है कि कुछ लोगों के प्रति उसमें भी दुर्भावना थी। आखिर हमें यह याद रखना आवश्यक है कि वह, जिस कारण वह था जो ''सब बातों में हमारे समान परखा तो गया तो भी निष्पाप निकला'' (इब्रानियों 4:15)।

परीक्षा में पड़ना, चाहे यह हमें जकड़ भी ले, पाप नहीं है। हमें अपने साथी मनुष्य के प्रति परवाह करने वाले होना अपने प्रभु से सीखना आवश्यक है। हमें अच्छा लगे या ना लगे पर हमें प्रेम (*agapaō*, अगापाओ) करने की आज्ञा है। जिस प्रकार दूसरे व्यक्ति से हम प्रेम करना यानी भलाई के लिए इच्छा करना और उसके लिए काम करना सीख सकते हैं, हम शत्रुता या घृणा में प्रेम न करने की भावनाओं को न आने देना भी चुन सकते हैं। यूहन्ना ने चेतावनी दी,

''जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है; और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता'' (1 यूहन्ना 3:15)। प्रिय चेले ने आगे कहा:

> यदि कोई कहे, कि मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूं; और अपने भाई से बैर रखे; तो झूठा है: क्योंकि जो अपने भाई से, जिसे उसने देखा है, प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा, प्रेम नहीं रख सकता। उससे हमें यह आज्ञा मिली है, कि जो कोई परमेश्वर से प्रेम रखता है, वह अपने भाई से भी प्रेम रखे (1 यूहन्ना 4:20, 21)।

सेवक बनकर अगुआई के द्वारा झगड़े को निपटाना (5:20)

मिनिस्टरों (सेवकों), ऐल्डरों और डीकनों के लिए खास तौर पर बुलाई गई एक सभा में यह सवाल किया गया: ''इक्कीसवीं सदी में लीडरशिप के आदर्शों के सम्बन्ध में कौन सी ऐसी प्रमुख समस्याएं हैं जिन्हें सुलझाया जाना आवश्यक है?'' एक उत्तर जो आम सहमति के साथ-साथ चौंकाने वाला भी था, यह था कि ''कलीसिया के अगुओं की ओर से अपनी सेवा कराने की कोशिश।'' ऐसा व्यवहार उस व्यवहार से बिल्कुल उलट है जो हमारे प्रभु ने चाहा और जिसका उसने नमूना दिया। यीशु ''इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुडौती के लिये अपने प्राण दे'' (मत्ती 20:28)। जब्दी के अत्याधिक या अधिक महत्वाकांक्षी पुत्रों से यह बात कही गई जो इस चर्चा वाली समस्या का उदाहरण लगते हैं (3 यूहन्ना 9, 10 में दियुत्रिफेस के मामले को भी देखें)।

एक बार एक ऐल्डर ने एक मण्डली से कहा, ''कलीसिया में फूट का एक मुख्य कारण वे सदस्य हैं जो ऐल्डरों के अधिकार को मानने से इनकार करते हैं।'' उसके कहने का अर्थ पूरी तरह समझ में आता है परन्तु ऐसी बात किसी और समस्या का संकेत हो सकती है। ''अधिकार'' (*exousia*, एक्सोसिया) शब्द, चाहे प्रेरितों के सम्बन्ध में इस्तेमाल हुआ है परन्तु नये नियम में इसका इस्तेमाल प्राचीनों या सुसमाचार के प्रचारकों के सम्बन्ध में कहीं नहीं मिलता।[136] क्यों? कारण शायद मत्ती 20:25, 26 में दिया गया है, जहां यीशु ने चेलों को बताया, ''तुम जानते हो कि अन्य जातियों के *हाकिम* उन पर *प्रभुता करते हैं*; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा नहीं होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने।'' अन्यजातियों का नमूना अपने चेलों के लिए लीडरशिप के यीशु के नमूने से बिल्कुल उलट था (देखें 1 पतरस 5:1-4)।

हर कोई जो परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करता है उसे चाहिए कि अधिकार के साथ इसका प्रचार करे। परन्तु यह अधिकार उसका अपना नहीं बल्कि परमेश्वर का अधिकार होना चाहिए। कलीसिया के कई झगड़े उन प्रचारकों और/या ऐल्डरों के अहंकारी व्यवहार के कारण होते हैं जो सेवक बनकर लीडरशिप के मॉडल को समझ नहीं पाए। सारा अधिकार प्रभु यीशु को दिया गया था (मत्ती 28:18-20), और उसने इसे सारे संसार में जाकर उसके उस प्रकाशन को पूरा करने के लिए अपने प्रेरितों को दे दिया जिसे उसने अभी उन पर प्रकट करना आरम्भ किया था।[137] प्रेरितों ने भी अहंकार भरे अधिकार के साथ जैसे कि वे हाकिम और मालिक हों, अपनी सेवा नहीं करनी थी। इसके बजाय उन्होंने अपने प्रभु यीशु के विनम्र, दीन मन से जो संसार के

उद्धार के लिए सेवा करने और अपना प्राण देने के लिए आया था, काम करना था।

एकता को बढ़ावा देना (5:20)

हमारे प्रभु के मन में सबसे महत्वपूर्ण बात एकता की है। यूहन्ना 17 में उसने उन बारह चेलों की एकता के लिए, और उनकी एकता के लिए जिन्होंने उनके संदेश के द्वारा उस पर विश्वास लाना था, प्रार्थना की। आखिर यीशु लोगों को उद्धार पाए हुए एक समाज में इकट्ठा करने के प्रमुख उद्देश्य को लेकर धरती पर आया था। पौलुस ने समझाया:

> क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया। और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों [यहूदियों और अन्यजातियों] से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए (इफिसियों 2:14-16)।

इसे पूरा करने के लिए उसे क्रूस पर दुख सहकर अपने लहू की कीमत चुकानी पड़ी। उस भयानक घटना में वह सारी मनुष्यजाति के पापों का प्रतीक बन गया (2 कुरिन्थियों 5:21)। परमेश्वर के मन की बात को और अधिक स्पष्टता से वह कैसे दिखा सकता था? जैसा कि अंत में पतरस को यह समझ आ गया कि "परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म केकाम करता है, वह उसे भाता है" (प्रेरितों 10:34, 35)।

इसी प्रकार से अपने परमेश्वर के बारे में इस बुनियादी सबक को समझना और व्यवहार में लाना हमारे लिए आज भी कठिन है। कई बार लोगों के मन में रहता है कि वे ऊंची जाति के हैं चाहे हम कभी अपने आपको उन से मिलाना नहीं चाहेंगे जो "उत्तम जाति" जैसे रूतबे का दावा करते हैं। पौलुस के शब्द ऐसे सब विचारों में रुकावट डालते हैं:

> क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि *तुम सब मसीह यीशु में एक हो*। और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो (3:26-29)।

कोई भी बात जो परमेश्वर की संतान की एकता को भंग करती है और उसमें फूट डालती है, वह शैतान की ओर से है और हमारे बीच में उसे सहन नहीं किया जा सकता। पक्षपात या "व्यक्तियों का सम्मान" परमेश्वर के मन से बिल्कुल बाहरी बात है। जब झगड़ों से शांति भंग होती है तो कलीसिया के लिए सभा में इकट्ठे होकर उन से निपटना आवश्यक है। जब ऐसे व्यवहारों से देह की शांति भंग होती है, जब कुछ लोग सम्बन्धों के टूट जाने के बाद मिलाप के लिए तैयार नहीं होते, जब अपमानपूर्ण व्यवहार हो जाए जो परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम को अपमानित करता हो तो ऐसी परिस्थितियों पर ध्यान देना आवश्यक है।

कुरिन्थुस में ''ऐसा व्यभिचार जो अन्यजातियों में भी नहीं होता कि एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है'' (1 कुरिन्थियों 5:1)। विश्वासी लोग काफ़िरों की अदालतों में अपने मुकदमों के फैसलों के लिए एक दूसरे पर मुकदमा कर रहे थे (1 कुरिन्थियों 6:6)। पहले केस में पौलुस ने इन भाइयों को आज्ञा दी, ''उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो'' (1 कुरिन्थियों 5:13)। दूसरे मामले में उसने कहा, ''तुम अपने साथ हुई ज्यादती को बर्दास्त क्यों नहीं कर लेते? यीशु की देह को दो फाड़ करने वाली फूट का प्रदर्शन करके तुम ने मसीह के नाम को पहले ही बदनाम कर दिया है!'' (देखें 1 कुरिन्थियों 6:7.)

पौलुस इस बात से पूरी तरह परिचित था कि कुछ मतभेद ऐसे हैं जिन्हें रोका नहीं जा सकता। उसके कहने का अर्थ था कि इन्हें भी परमेश्वर के काम को करने के लिए और यह दिखाने के लिए कि असल चेले कौन हैं, किया जा सकता है (1 कुरिन्थियों 11:18, 19)। फिर भी जब मसीह की देह के किसी एक अंग के द्वारा इस ऐसी हानि पहुंचाई जाती है तो उस व्यक्ति का व्यवहार इतना निंदनीय है कि उसका पाप सामने लाया जाना ही चाहिए। इसके अलावा, उस व्यक्ति को देह की संगति से निकालकर दण्डित भी किया जाए (1 कुरिन्थियों 5:11; 2 कुरिन्थियों 2:6)। रोमियों 16:17 में पौलुस देह में बिगाड़ डालने वालों के लिए बिल्कुल यही बात कह रहा था।

सिवाय इसके कि ऐसे लोग ''उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है'' (रोमियों 16:17), पौलुस ने उन कारणों या माध्यमों को विस्तार से नहीं बताया जिसके द्वारा व्यक्ति ''फूट'' और ''रुकावट'' (ठोकर के अवसर) बनता है। ये सब कार्य ''शरीर के काम'' हैं जिन से मसीही व्यक्ति को बचना आवश्यक है (गलातियों 5:19-21)। वे आत्मा के अनुसार चलने के उलट हैं। परमेश्वर की कलीसिया जिसमें मसीही व्यक्ति को नागरिकता मिली है (फिलिप्पियों 3:20), परमेश्वर की संतान की एक बस्ती है जिन्हें इस वर्तमान के बुरे संसार में भी जिसमें हम रहते हैं, उस उच्च आत्मिक क्षेत्र यानी परमेश्वर के राज्य'' के रूप में ही रहने के लिए बुलाया गया है (गलातियों 5:21)। उन्हें ''संतों'' या ''पवित्र लोगों'' के रूप में रहना है क्योंकि वे यही हैं। स्थानीय मण्डली की बात करें या सारे संसार की सब कलीसियाओं की, कलीसिया मसीह की देह है और परमेश्वर के सनातन राज्य का शारीरिक प्रदर्शन है। परमेश्वर का यह लक्ष्य है कि यह इसके लोगों के पवित्र जीवनों के द्वारा दिखाई दे ताकि पापी संसार इसके अंतर को देख सके। हमें अंधकार में ज्योति की तरह यानी उस रौशनी की तरह चमकना आवश्यक है जो न केवल मसीह के जीवन की सुन्दरता को चमकाती हो बल्कि संसार की बुराई, क्रूरता और दुष्टता को भी सामने लाती हो (मत्ती 5:14-16; 2 कुरिन्थियों 4:6; इफिसियों 5:8-11)।

हमें सच्चे मन से उस एकता में रहने की कोशिश करनी चाहिए जिसके लिए यूहन्ना 17:21 में यीशु ने प्रार्थना की, ''कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।'' इस प्रार्थना का उद्देश्य यह है कि उसके चेले, इस बचे हुए संसार के युग की सदियों के दौरान ऐसी ही एकता में सिद्ध किए जाएं जो पिता के साथ यीशु की है। मसीह के उद्धार दिलाने वाले सुसमाचार को दूसरों तक पहुंचाने में हमारी सफलता ऐसी ही एकता पर निर्भर है।

यीशु की प्रार्थना से हमें यह अहसास होना चाहिए कि फूट सचमुच में कितनी बुरी और

विनाशकारी है। कोई कह सकता है, ''हर कलीसिया में कोई उपद्रवी होता ही है।'' पौलुस ने ऐसी अनुमति नहीं दी है। एक अर्थ में उसने बिल्कुल इसके उलट कहा, ''घर को साफ़ करो! कैंसर के फैलकर पूरी आत्मिक देह को जिसके तुम अंग हो संक्रमित करने और संसार में इसके ईश्वरीय उद्देश्य को नाकाम करने से पहले ऐसे व्यक्ति से पीछा छुड़ा लो।'' हमारे प्रभु की आत्मिक देह में फूट को सहन नहीं किया जा सकता। यह स्वर्गीय देश छोटा वह रूप है जिसे इस खोए हुए और अंधकार के निराश संसार में उसकी महिमा को दिखाने के लिए बनाया गया है।

नशे के साथ निपटना (5:21)

आदतन शराबी और शराब के आदी होने में शारीरिक और मनोवैज्ञानिक पहलू पाए जाते हैं। शराबी व्यक्ति के केवल बाहरी व्यवहार को देखने वाले बहुतों को यह अनोखा लगता है। परन्तु इस प्रकार से काम करने के लिए अपना आपा खोने वाले व्यक्ति के बारे में इसमें कुछ भी हंसने वाली बात नहीं है। इस विषय पर नीतिवचन 23:29-35 में सुलैमान की बात को कुछ लोगों ने मनोरंजन तक कह दिया है (NIV):

> कौन कहता है, हाय? कौन कहता है, हाय हाय? कौन झगड़े रगड़े में फंसता है? कौन बक बक करता है? किसके अकारण घाव होते हैं? किसकी आंखें लाल हो जाती हैं? उनकी जो दाखमधु देर तक पीते हैं, और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूंढ़ने को जाते हैं। जब दाखमधु लाल दिखाई देता है, और कटोरे में उसका सुन्दर रंग होता है, और जब वह धार के साथ उण्डेला जाता है, तब उसको न देखना। क्योंकि अन्त में वह सर्प की नाईं डसता है, और करैत के समान काटता है। तू विचित्र वस्तुएं देखेगा, और उल्टी-सीधी बातें बकता रहेगा। और तू समुद्र के बीच लेटने वाले वा मस्तूल के सिरे पर सोने वाले के समान रहेगा। तू कहेगा कि मैं ने मार तो खाई, परन्तु दुःखित न हुआ; मैं पिट तो गया, परन्तु मुझे कुछ सुधि न थी। मैं होश में कब आऊं? मैं तो फिर मदिरा ढूंढूंगा।

इन पंक्तियों को पढ़ने वाला व्यक्ति जिसे इन में छुपी त्रासदी दिखाई नहीं देती हो सकता है कि उसने किसी प्रियजन के लिए जिसे शराब की लत लग गई हो अफ़सोस न किया हो। ऐसा व्यक्ति लगभग दुष्टात्मा से ग्रस्त होने जैसा लगता है क्योंकि उसने अपने शरीर को इतना खराब कर लिया है कि उसका सामान्य रसायण में संतुलन बिगड़ गया है। वह शारीरिक और मानसिक रूप में इसी पर निर्भर है। शायद उसने केवल थोड़ी देर के आनन्द के लिए इसके साथ प्रयोग करना चुना था, परन्तु अब वह पूरी तरह से इसका गुलाम बन गया है। पसंद के परिणामों का वर्णन करते हुए सुलैमान ने उसकी मार्मिक तस्वीर बनाई है! उसने शारीरिक दुर्गति, सामाजिक अनमेल और मदहोशी की हालत को दिखाया है। इसके अलावा उसने कीमती समय, साफ दृष्टि, मानसिक संतुलन, पीड़ा सहने की स्वाभाविक प्रतिक्रिया पर बात की (परमेश्वर द्वारा दिया गया संकेत कि शारीरिक रूप में कुछ गलत हो रहा है और उस पर तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है)। फिर दयनीय लत की त्रासदी आती है जिसमें सबसे बेकाबू हाय, जिसकी ''सहायता होती'' है वह केवल एक और पैग पीने की ओर जाने ही से है।

किसी शराबी के लिए प्रेम और समझ को बनाए रखने के प्रयास में हम परिस्थिति को

पवित्र शास्त्र की स्पष्ट शिक्षा को बदलने या बिगाड़ने के उकसावे में न आएं। हमें उस संदर्भ में लौटना आवश्यक है जिसमें मतवालेपन की यह चर्चा है, जिसे पौलुस ने ''शरीर के काम'' कहा (5:19-21)। शराबी व्यक्ति से चाहे वह परिवार का सदस्य हो या मित्र, प्रेम करने की आवश्यकता के बावजूद हम पौलुस की चेतावनी को अनदेखा करने का साहस न करें। बुराइयों की इस सूचि के अंत में उसने कहा कि ''ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे'' (5:21)।

अंतिम न्याय का काम बेशक परमेश्वर और उसके मसीह का है, जिसे उसने संसार का न्याय करने का अंतिम काम सौंप दिया है।[138] इसके अलावा ये शब्द (5:19-21) हमारे पास परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त उस व्यक्ति की कलम के द्वारा पहुंचे हैं जिसे परमेश्वर द्वारा ''प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहराया'' गया (2 तीमुथियुस 1:11)। पौलुस ने मनुष्यजाति को ''परमेश्वर के साथ मेल मिलाप'' कर लेने को कहते हुए मसीह के राजदूत की भूमिका निभाई (2 कुरिन्थियों 5:20; देखें इफिसियों 6:20)। परमेश्वर उसके द्वारा बोल रहा था, इस कारण हम उसके शब्दों के अर्थ को बदलने के प्रलोभन में कभी न पड़ें।

परिवार का सदस्य हो या कोई मित्र हम किसी शराबी से चाहे कितना भी प्रेम क्यों न करते हों, मतवालापन शरीर का एक काम है यानी एक ऐसा पाप जो व्यक्ति को स्वर्ग से बाहर रख सकता है! हम किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहते और ना ही परमेश्वर की यह इच्छा है (2 पतरस 3:9)। तौभी यहां दी गई बुराइयों में से कोई बुराई करने वालों की तरह शराबी व्यक्ति अपने ही पाप के लिए ज़िम्मेदार है। उसे परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने की आवश्यकता है। बहुत बार माता पिता अपने प्रियजन को परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध बगावत करते हुए देखकर, अपनी थियोलॉजी को ही बदल लेते हैं, क्योंकि वे अपने बच्चे को विश्वास त्यागने वाले के रूप में देखकर सहन नहीं कर सकते जिसके अनन्त दण्ड पाने का खतरा है। मत्ती 10:37 में इस मामले पर प्रभु ने कुछ यूं कहा है: ''जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।'' किसी भी मसीही के लगाव की प्राथमिकताओं में परमेश्वर दूसरा स्थान कभी स्वीकार नहीं करेगा। हम अपने खोए हुए प्रियजन से चाहे कितना भी प्रेम क्यों न करते हों, प्रभु से बढ़कर उससे कभी प्रेम न करें। इल्हाम से दिए गए वचन में परमेश्वर द्वारा प्रगट की गई बातों को बिना समझौता किए या उन्हें बदले हमें उसे बचाने और सुधारने के लिए जो कुछ भी अपने वश में हो, वह करना चाहिए। हम इस संदेश के आधार पर यह समझते हैं कि मसीह अंत के दिन अंतिम न्याय की घोषणा करेगा (यूहन्ना 12:48)।

लीलाक्रीड़ा का पाप (5:21)

आज चाहे यदि कोई हो तो बहुत कम होगा जो डायनोसिस के सम्मान में शराबियों के उपद्रवी जुलूस में भाग लेगा, परन्तु फिर भी बहुत से लोग ''लीलाक्रीड़ा'' (*kōmos*) के पाप के दोषी हो सकते हैं। मन बहलाव खेलकूद की रोमांचक घटनाओं के सम्बन्ध में कई बार लोग क्रोधित होकर आपा खो बैठते हैं। युवा लोग भीड़ के उपद्रवी व्यवहार के कारण अंतर्राष्ट्रीय सॉकर मैंचों से दांत तुड़वाकर और आंखों के आस-पास काला करवाकर लौटते हैं। कइयों ने तो

रात जेल में भी बिताई है। खबरों में ऐसी घटनाएं सुनने को मिलती हैं जिनमें खेलों के शौकीन, उत्तेजना या क्रोध में इतना आपा खो बैठे कि उन्होंने दर्शकों के ऊपर गिरकर कइयों को कुचलकर मार डाला।

उपद्रवी या बेकाबू व्यवहार किसी का भी हो सकता है। कई साल पहले कॉलेज के फुटबाल गेम के दौरान एक खिलाड़ी जो अपने विरोधियों को गम्भीर चोट लगाने के लिए प्रसिद्ध था उसने दूसरी टीम के एक प्रमुख खिलाड़ी को जख्मी कर दिया। एक मसीही व्यक्ति ने यह चिल्लाते हुए कि ''इसे मार डालो! इसे मार डालो!'' इस खराब खेल पर प्रतिक्रिया दी। इन बेपरवाह शब्दों के साथ वह इस बुराई के शिकार को मिले घाव का अनजाने में जश्न मना रहा था!

मौका चाहे जो भी हो पर हम सब उस शक्ति और होने वाले नुकसान से परिचित हैं जो भीड़ की मनोवृति से हो सकता है (देखें प्रेरितों 19:28-34)। संयम और सादगी आत्मिक गुण हैं और उनका न होना, चाहे हमारी बोल-चाल के सम्बन्ध में ही क्यों न हो, दूसरों को हानि पहुंचाने वाला हो सकता है।

यहां पर, कुछ सुनने वालों ने उस घायल व्यक्ति के लिए जश्न में उसका साथ देने वालों के साथ साथ इस मसीही व्यक्ति के लिए सम्मान खो दिया। मुझे यह मानना पड़ेगा कि इस घटना में मेरी प्रतिक्रिया आत्मिक व्यक्ति वाली नहीं थी क्योंकि इस उपद्रवी आचरण पर मैं उसके ऊपर क्रोध से चिल्लाया था। क्या इस व्यवहार में ''लीलाक्रीड़ा'' (*kōmos*, कोमोस) की बात नहीं थी?

राज्य से निकाले जाने के विरुद्ध चेतावनियां (5:21)

पौलुस ने गलातिया के मसीही लोगों को पहले से चिता दिया कि जो लोग शरीर के काम करते हैं (आत्मा के निर्देशों को मानने के बजाय) वे ''परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे'' (5:21)। इन अपराधियों को परमेश्वर की अनन्त मीरास नहीं मिलेगी जो उसने उनके लिए तैयार की है जो उससे प्रेम करते और उसकी आज्ञा मानते हैं।

इस नियम को पुराने नियम के इस्राएल के उदाहरण से समझाया जा सकता है। लोग मिस्र की दासता के जूए में कराह रहे थे परन्तु परमेश्वर ने उन्हें उनके उत्पीड़न से चमत्कारी ढंग से छुड़ा लिया। उसने उनका अपना अद्‌भुत देश, कनान देश देने का वचन दिया। जो एक ऐसा देश था ''जिस में दूध और मधु की धारा बहती'' थी (निर्गमन 3:8)। परमेश्वर के रक्षक पंखों की छाया तले अपने परिश्रमों से विश्राम की भक्तिपूर्ण आशा और सुरक्षा में सदियों तक कठोर काम कराने वालों के गुलाम बने रहना, गुलामी में जन्मे लोगों के लिए इससे कीमती प्रतिज्ञा और क्या हो सकती थी?

उस प्रतिज्ञा किए हुए विश्राम के बीच में क्या हुआ? इस्राएली शिकायत, और बुड़बुड़ाहट में कोहराम मचाते रहे। उन्होंने अपने अविश्वास और विद्रोह से यहोवा का क्रोध भड़काया। भजन भजन 95:10, 11 की भाषा से लेते हुए इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने समझाया कि इस्राएलियों के साथ अंत में परमेश्वर का धैर्य जवाब दे गया:

> ''इस कारण मैं उस समय के लोगों से रूठा रहा, और कहा, कि इनके मन सदा भटकते

रहते हैं, और इन्होंने मेरे मार्गों को नहीं पहिचाना। तब मैंने क्रोध में आकर शपथ खाई, कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे'' (इब्रानियों 3:10, 11)।

परमेश्वर के आत्मिक इस्राएल के रूप में यह दुखद घटना आज हमें क्या संदेश देती है? इब्रानियों 3:12 में इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है: ''हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर हट जाए।'' लेखक ने इस्राएलियों के आज्ञा न मानने और अविश्वास की नकल करते हुए ''पाप के छल में आकर कठोर'' हो जाने के विरुद्ध और चेतावनी दी (इब्रानियों 3:13, 18, 19)।

प्रतिज्ञा किया हुआ विश्राम जिसकी उसने प्रतिज्ञा की कनान का वास्तविक देश नहीं था, ''और यदि यहोशू उन्हें विश्राम में प्रवेश करा लेता, तो उसके बाद दूसरे दिन की चर्चा न होती'' (इब्रानियों 4:8)।[139] सभी विद्रोही इस्राएली जंगल में अपने चालीस वर्ष के प्रवास के दौरान मारे गए। उसके बाद यहोशू कनान देश में इस्राएलियों की एक नई पीड़ी को ले गया। कहा गया है कि ''यहोवा ने उन सब बातों के अनुसार, जो उस ने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर कही थीं, उन्हें चारों ओर से विश्राम दिया'' (यहोशू 21:44क)। परन्तु लेखक के मन में स्वर्ग का और भी बड़ा विश्राम था। उसने लिखा, ''सो जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है। क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर की नाईं अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है'' (इब्रानियों 4:9, 10)।

अपने पत्र पाने वालों के लिए पौलुस अंतिम चेतावनी पर आ गया। मूल में यह उसके अपने समय के यहूदी मसीहियों को दी गई थी परन्तु यह हर पीढ़ी के हर विश्वासी के लिए भी लागू होती है: ''सो हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें ऐसा न हो, कि कोई जन उनकी नाईं आज्ञा न मानकर गिर पड़े'' (इब्रानियों 4:11)।

अंतिम विश्राम जिसकी उसने बात की वह स्वर्ग में परमेश्वर के साथ स्वर्गीय विश्राम है। हर युग में परमेश्वर के लोग जो पाप के दास रहे थे परन्तु अब छुड़ाए गए हैं उन्हें अपनी मृत्यु के यरदन के पास जाकर अपने बोझ उतारकर वहां असली आराम मिलेगा। परमेश्वर ने आराम की यह अद्‌भुत जगह चाहे हमारे लिए तैयार की है (इब्रानियों 11:10) पर वहां हम अभी नहीं हैं। एक बूढ़े मसीही से एक बार आग्रह किया गया कि आराम करे और कठिन परिश्रम न करे। इस परामर्श पर उसका जवाब था, ''स्वर्ग आराम करने की जगह है और धरती काम करने की जगह।'' वह सही था। हमारे छुटकारे और हमारे यरदन पार जाने के बीच का अंतराल हमारे लिए लेखक की गम्भीर चेतावनी पर ध्यान देने का समय है।

अपने जबर्दस्त रूपक के साथ इब्रानियों की पुस्तक का यह उदाहरण वही संदेश देता है जो पौलुस गलातिया के अपने भाइयों को दे रहा था। इब्रानियों की पुस्तक में तस्वीर प्रतिज्ञा किए हुए देश (स्वर्गीय कनान) की है जबकि गलातियों में यह ''परमेश्वर का राज्य'' है। इब्रानियों में समस्या विश्वास में कमज़ोर होने और विश्वास से गिरने (बेदीनी) के खतरे की थी। जबकि गलातियों में अन्य बातों के साथ-साथ समस्या नैतिक और सोच के पापों की थी, जिससे मसीही लोग अपनी विरासत को खो सकते थे।

चार प्रेम (5:22)

''प्रेम'' के लिए कोयनि यूनानी भाषा में चार शब्द हैं *agapē*, *philia*, *storgē,* और *erōs*। इनमें से तीन तो नये नियम में मिलते हैं।[140] बाइबल में और प्राचीन यूनानी साहित्य में इन शब्दों का इस्तेमाल किस प्रकार किया गया है ?

नये नियम में *erōs* शब्द का इस्तेमाल न तो इसके संज्ञा रूप में और न ही क्रिया रूप में किया गया है। इस शब्द का सम्बन्ध अंग्रेजी शब्द ''erotic'' से है। यूनानी में यह भावुक प्रेम का संकेत देता है परन्तु हमेशा कामुक अर्थ के साथ नहीं। उदाहरण के लिए यह किसी गुलाम के स्वतन्त्र होने की ''प्रबल इच्छा'' को दिखा सकता है। तौभी कई मामलों में इस शब्द का संकेत कामुक ही था।

प्राचीनकाल के सैकुलर यूनानियों के बीच *erōs* के सम्बन्ध में एक विस्तृत शब्दकोष बनाया गया। इसके विपरीत LXX में इरोटिक की शब्दावली बड़ी सीमित है। कई वचनों में ''प्रेमी'' (*erastēs*) शब्द का अर्थ यार के सबसे घटिया अर्थ में इस्तेमाल किया गया है।[141] यह मिलावटी शब्दावली आम तौर पर इस्राएल की मूर्तिपूजा और बाहरी समझौतों के लिए उपमा है। नये नियम में *erōs* का बिल्कुल न होना पश्चिमी संस्कृति में erotic पर दिए जाने वाले वर्तमान बल से नाटकीय रूप में अलग है। यह दिखाता है कि प्रेम की नये नियम की अवधारणा हमारी अवधारणा से कितनी अलग है।

Storgē. नये नियम में न तो संज्ञा शब्द *storgē* है और न इससे मेल खाता क्रिया शब्द *storgeō* मिलता है, हां इससे सम्बन्धित एक विशेष शब्द अवश्य है। यह शब्द *astorgos* है, जिसका अर्थ है ''बिना स्वभाविक लगाव।'' मूल *storgē* के साथ उपसर्ग *a* (''अ-'' या ''बिना'' के अर्थ को जोड़ता हुआ) मिलाया जाता है जो अपने आप में ''परिवार का मोह'' या ''भाइचारे का प्रेम'' से मिलता है।[142] इसलिए विशेषण शब्द *astorgos* में ''प्रेमहीन, अर्थात कुटुम्ब के लिए सामान्य लगाव के अभाव'' का संकेत है। नये नियम में रोमियों 1:31 और 2 तीमुथियुस 3:3 की बुराई की पौलुस की सूची में इसका नकारने वाला विशेषण रूप *astorgos* मिलता है। NASB में इस शब्द का अनुवाद दोनों पदों में ''निर्मोही'' किया गया है।

मरकुस 7 में हमारे प्रभु द्वारा स्वाभाविक लगाव की इस कमी की बात की गई थी। उसने अपने समय के कुछ लोगों के बारे में बताया था जो अपने माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य से बचने के लिए फर्ज़ पूरा करते हुए ''कोरबान'' शब्द बोलकर अपने आपको सही ठहराते हैं। यीशु ने कहा कि वे ''... अपनी परम्पराओं से, ... परमेश्वर का वचन टाल देते हैं ...'' (मरकुस 7:11-13)।

Philia. इस शब्द का मूल फिलॉसफ़ी (''ज्ञान का प्रेम''), फिलानथ्रोपी (''मनुष्यजाति का प्रेम''), और फिलाडेल्फिया (''भाईचारे का प्रेम'') जैसे सामान्य अंग्रेज़ी शब्दों में मिलता है। यह वह शब्द है जो प्रेम की लगाव या मित्रता वाली किस्म का संकेत देता है। यह ऐसा प्रेम है जो हमारी भावनाओं को आकर्षित करता है। हमें अपने प्रेम में कुछ आकर्षण दिखाई देता है। यह आकर्षण कोई सराहनीय व्यक्ति, सुन्दर दृश्य, सुखद गतिविधि, या वास्तव में कोई भी चीज़ हो सकती है।

गलत ढंग से प्रेम करना पाप बन सकता है। यीशु ने कहा कि कपटी लोग ''लोगों को

दिखाने के लिये आराधनालयों में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन को अच्छा लगता [*phileō*] है'' (मत्ती 6:5)। मसीह ने यह चेतावनी भी दी:

> जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय [*phileō*] जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं (मत्ती 10:37, 38)।

यह वचन आज के हमारे संसार की बात करता है। हम एक ऐसे समय में रहते हैं जब उनमें से जिन्हें हम प्यार करते हैं जो शायद हमारे बच्चे हैं, विश्वास को त्यागकर और गलत शिक्षा के पीछे जाने का खतरा है। ऐसे मामलों में आवश्यकता है कि हम अपनी धर्मशिक्षा को बदलकर उन्हें सही ठहराने की परीक्षा में झुक न जाएं। सचमुच हमें सबसे बढ़कर यीशु से प्रेम करना आवश्यक है।

सच्चा मित्र (*philos*) का होना एक बहुत बड़ी बात है। हम इकट्ठे होकर खुश होते हैं और हमें अपने मित्र अच्छे लगते हैं और उनके द्वारा हमें पसंद किया जाना अच्छा लगता है। *Philia* यही है और इसमें कुछ गलत नहीं है। अब्राहम को भी ''परमेश्वर का मित्र'' कहा गया था (याकूब 2:23)। एक विशेष अर्थ में लाज़र ''यीशु का मित्र'' था (यूहन्ना 11:11)। यूहन्ना ने जब लिखा, ''तुझे शान्ति मिलती रहे। यहां के मित्र तुझे नमस्कार कहते हैं। वहां के मित्रों से नाम ले लेकर नमस्कार कह देना'' (3 यूहन्ना 15), तो वह कलीसिया के अपने प्रिय भाइयों के लिए कह रहा था। बारहो से बात करते हुए यीशु ने कहा, ''जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूं, यदि उसे मानों तो तुम मेरे मित्र हो'' (यूहन्ना 15:14)।

हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि चेले यीशु से बेहद प्रेम करते हैं, चाहे हम *phileō* की बात करें या *agapaō* के इन दोनों क्रिया शब्दों का इस्तेमाल यूहन्ना 21:15-17 में पतरस और यीशु की यादगार बातचीत में किया गया है। विद्वान उस संदर्भ में दोनों शब्दों के महत्व पर सहमत हैं। कइयों का मत है कि यूहन्ना द्वारा एक बार *agapaō* का और दूसरी बार *phileō* का नीरसता से बचने के लिए शैली में बदलाव से बढकर और कुछ नहीं दिखाता। दूसरों को उनके बदलाव में अधिक महत्व दिखाई देता है। पतरस ने अपनी बेहतर वफ़ादारी की डींग मारी थी, पर बाद में तीन बार अपने प्रभु का इनकार करके वह बुरी तरह से नाकाम रहा था। इस बार वह यीशु के लिए अपने समर्पित प्रेम (*agapaō*) के बारे में पक्का दावा करने को तैयार नहीं था, जिस कारण वह उसके लिए केवल अपने लगाव (*phileō*) को ही बता पाया।[143]

Agapē। अब हम गलातियों 5:22 में उस शब्द पर आते हैं जिसे पौलुस ने ''आत्मा का फल'' की अपनी सूची में सबसे पहले रखा। कई जगह पर चाहे ''प्रेम'' के लिए इन शब्दों के अर्थ एक दूसरे से मिलते जुलते होते हैं और इस कारण उन्हें समानार्थी कहा जाता है, परन्तु हर शब्द दूसरों से कुछ बातों में अलग है और उसका अपना ही रस है। नये नियम में जिस प्रकार से इसका इस्तेमाल हुआ है, *agapē* के सबसे शानदार गुणों को दिखाता है। निगेल टर्नर ने लिखा है:

> क्रिश्चियन ग्रीक में संज्ञा शब्द *agapē* और क्रिया शब्द *agapaō* हमारे लिए मसीह के प्रेम के साथ-साथ, उपयुक्त मसीही लगाव, विश्वासियों के परमेश्वर और मनुष्य के

लिए प्रेम, और हमारे और मसीह के लिए परमेश्वर के प्रेम को दर्शाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह परमेश्वर और मनुष्य की सम्पूर्ण संगति है, जोकि अलौकिक अनुग्रह है।[144]

परमेश्वर ने अपने पवित्र लोगों (संतों) के मनों में अपना प्रेम "डाला" है, ताकि यह अनुग्रह से प्राप्त किया गया दान है (रोमियों 5:5)।

इस प्रेम को इस प्रकार न समझा जाए जैसे यह महसूस किया जाता है, और हम सवाल भी कर सकते हैं कि इसके अर्थ में "लगाव" है या नहीं। मसीही व्यक्ति को ऐसे प्रेम को कुछ रिश्तेदारों या जिन्हें वह पसन्द करता हो उन तक सीमित रखने की सुविधा नहीं है। परमेश्वर सारी मनुष्यजाति से प्रेम करता और उन्हें आशीष देता है, वे चाहे अच्छे हों या बुरे। मसीह को मानने वालों को इसी प्रकार से सक्रिय रूप में प्रेम करने की आज्ञा दी गई है (मत्ती 5:43-48)।

Agapē जो कि दूसरों की बेहतरी के लिए निस्वार्थ रूप में काम करता है, पिता की ओर से मिलता है (1 यूहन्ना 4:16, 19)। हमारे प्रेम को, परमेश्वर के प्रेम जैसा होने के लिए, परिपक्व प्रेम होना आवश्यक है जिसमें सबसे प्रेम किया जाए। यह पसन्द या ना पसन्द की सनक नहीं होनी चाहिए जो स्वाभाविक मनुष्य यानी सांसारिक मनुष्य के लिए आम है। हर मसीही का जो अपने स्वर्गीय पिता के जैसा बनना चाहता है, लक्ष्य इस सिद्ध प्रेम को पाने का होना आवश्यक है।

यीशु का प्रेम (5:22)

यीशु के शब्द और कार्य कई अर्थों वाले *agapē* शब्द से भरे हैं जो मसीही संसार के पहले कोषकारों के पास नहीं थे। यीशु ने किस प्रकार का प्रेम दिखाया? प्रेम ने उसे क्या करने के लिए प्रेरित किया?

उसने दृढ़ता से अपने वैरियों का सामना किया। मसीह का प्रेम हमेशा मधुर नहीं होता था। कई बार इससे लोगों को ठोकर लगती थी। एक अवसर पर तो इसने दण्ड भी दे दिया, जब यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों पर एक के बाद एक कठोर हाय यह कहते हुए दी, "हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे?" (मत्ती 23:33)। क्या हमें इन शब्दों में कोई मोह सुनाई देता है? प्रभु ने इन लोगों को डांटा, परन्तु क्या हमें इन पर कोई संदेह है कि वह उन से प्रेम करता था? वह उन्हें मन फिराव तक लाने, अर्थात अंत के दिन तक उन्हें दोषी ठहरने से बचाने का प्रयास कर रहा था जब "वह धर्म से जगत का न्याय करेगा" (प्रेरितों 17:31; देखें 2 पतरस 3:9)। वह उन से बेहद प्रेम करता था इसलिए उसे सच्चाई के साथ उनका सामना करना आवश्यक था।

उसने वफ़ादारी से अपने मिशन को पूरा किया। यीशु उस वास्तविकता को जानता था जिससे वह हमें बचा रहा था और उसे उस प्रतापी महिमा का भी उतना ही पता था जिसके लिए अपने मिशन को पूरा करने के लिए आकर वह हमें बचा रहा था। उसे उद्धार और अनन्त मृत्यु के अर्थ की समझ थी, इसी कारण उसने पृथ्वी पर आने के दौरान उस कठिन परीक्षा को सह लिया। सबसे बड़ी बात यह कि उसने खोए हुए मनुष्य के लिए प्रेमी पिता के पास लौटने की पुकार की।

हम में से कौन है जो ऐसे *अगापे* दिखाने के निकट भी पहुंचा हो? हमें अपनी निजी भलाई की इतनी चिंता होती है कि अपने घर की सुख सुविधा को बहुत कम छोड़ पाते हैं। जबकि करोड़ों लोग अंधकार में भटकते हुए प्रेमहीन अस्तित्व को उचित ठहराने का प्रयास कर रहे हैं।

उसने आज्ञाकारी ढंग से उस दण्ड को सह लिया जिसके हम हकदार थे। किसी मनुष्य ने कभी इस प्रकार प्रेम नहीं किया जैसे प्रभु यीशु करता है या इस प्रकार प्रेम नहीं दिखाया जैसे उसने दिखाया। नये नियम में "नरक" (*gehenna*) शब्द बारह बार आया है जिसमें ग्यारह बार इसका इस्तेमाल यीशु ने ही किया है और एक बार उसके भाई याकूब ने (याकूब 3:6)। यीशु इस भयानक शब्द के अर्थ को समझता था जो अनन्तकाल तक दण्ड पाए हुओं की स्थिति को दिखाता है। इस कारण उसने गतसमनी में अपनी ही इच्छा से संताप में पड़े हुए पसीने की बड़ी बड़ी बूंदे बहाईं; उसने क्रूस की अत्याधिक यातना को सहना चुनकर पिता की इच्छा के आगे अपने आपको सौंप दिया। नरक के कारण ही उसने गुलगुता का कष्टदायक दुख और अपमान सहा। इसी कारण वह हमारे खोए हुए संसार के लिए श्राप बन गया जोकि पाप का प्रतीक है। इसी कारण जब उसके प्रेमी पिता ने उससे अपना मुंह फेर लिया तो उसे निराशा में परेशानी भरा अकेलापन झेलना पड़ा। क्या ईश्वरीय प्रेम का यह सबसे बड़ा प्रमाण नहीं है? पवित्र शास्त्र यह दिखाता है कि छुटकारे की परमेश्वर की योजना, जो "जगत की उत्पत्ति के पहले" बनाई गई थी (1 पतरस 1:20; देखें प्रेरितों 2:23, 24), उसके बड़े प्रेम के कारण बनी (देखें यूहन्ना 3:16)। यीशु ने समझाया:

> क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा [*agapaō*] कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना [*agapaō*] क्योंकि उनके काम बुरे थे (यूहन्ना 3:16-19)।

सारांश। मसीह में दिखाए गए परमेश्वर के प्रेम के संदेश का सामना होने पर मनुष्य अपने अपने मनों की बुनियादी स्थिति के अनुसार ही उसे मानेंगे। सच्चाई के प्रति ईमानदार और सच्चाई से प्रेम करने वाले के मनों में इस संदेश के आत्मिक होने की गूंज सुनाई देती है। उनकी ईमानदारी और निष्ठा के कारण वे यीशु को प्रभु के रूप में उस पर विश्वास करके ग्रहण कर लेते हैं। पापी लोग अपने बुरे मन के क्रोध को दिखाकर मुड़ जाएंगे क्योंकि वे संसार से प्रेम करते हैं। पसंद तो नैतिक है पर इसका परिणाम या तो अनन्त जीवन होगा या अनन्त दण्ड (देखें यूहन्ना 3:36)।

हमें उनसे हमदर्दी करनी चाहिए जिन्हें मसीह का कभी पता नहीं चला है। जब तक हम मसीह के मिशन के महत्व को समझकर अपने जीवन उस मिशन के लिए नहीं देंगे तब तक बहुत से लोग मसीह को कभी जान नहीं पाएंगे। मसीह की देह के अंगों के रूप में उन सभी गुणों और योग्यताओं के साथ जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं यदि हम तन मन से इस मिशन के लिए अपने आपको दे दें तो बहुत से लोग मसीह को जान सकते हैं। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम यीशु के प्रेम को दिखाएं और यह सुनिश्चित करें कि संसार हमारे परमेश्वर और हमारे उद्धारकर्त्ता को सुने।

आनन्द को बनाए रखना (5:22)

फिलिप्पियों की पुस्तक पर अपनी टीका में डेविड स्टिव ने लिखा है, ''फिलिप्पियों के पूरे पत्र में, प्रेरित अपने पाठकों से बार-बार आनन्द करने का आग्रह करता है। यह उपदेश इस आज्ञा में अपने चर्म पर पहुंचाता है: 'प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो' (फिलिप्पियों 4:4)।'' फिर स्टिव ने उन बातों का जो मसीही व्यक्ति से उस आनन्द को छीन सकती हैं, संक्षिप्त परन्तु उपयोगी भाग दिया। इनमें उसने समस्याओं, लोगों और चीज़ों की बात की।[145] कई बार ये तीनों सब और अन्य और बातें एक ही घटना या स्थिति में मिल सकती हैं। हमें उन सब बातों की चौकसी करनी आवश्यक है जो हमें अपने आनन्द से भटका सकती हैं। अपने सामने की बाधाओं के बजाय हमें छुड़ाने के लिए परमेश्वर और उसकी सामर्थ पर ध्यान देना चाहिए।

शांति की तलाश (5:22)

यह अद्‌भुत शब्द ''शांति'' (*eirēnē*) कितना कीमती है। क्या इसमें कोई आश्चर्य की बात है कि सदियों से माताओं और पिताओं ने सुन्दर नवजात नन्हीं बच्ची को देखकर उसका नाम ''आइरीन'' रखा हो जिसे ''शांति'' के लिए यूनानी शब्द से लिया गया है? यह दिलचस्पी की बात है कि आरम्भिक मसीही लेखक इरेनियुस (लगभग 130-200 ई.) को अपना नाम यूनानी शब्द *eirēnē* से ही मिला था। इसके अलावा अंग्रेजी विशेषण ''irenic'' इसी शब्द से निकला है। हम आइरेनिक (या शांत) दृश्य की बात कर सकते हैं।

सही सोच वाले लोगों, खासकर किसी प्रकार का युद्ध देख चुके लोगों के लिए शांति हमेशा खज़ाना ही होता है। शांति युद्ध का बिल्कुल उलट है। युद्ध से होने वाले बड़े विनाश को देखना गम्भीर बात है। जहां कभी गगनचुंबी भव्य इमारतें होती थीं अब वहां मलवे के ढेर हैं। इससे भी भयानक बात मारे गए या घायल होने वाले लोगों की संख्या है। बचकर वापस आने वाले लोगों को किसी न किसी प्रकार की अपंगता के साथ आना पड़ता है। उनका दुख युद्ध की बर्बरता को दिखाता है।

शांति चाहे युद्ध का उलट है पर युद्ध केवल हथियारों के युद्ध तक ही सीमित नहीं होता। संसार के कई भागों में जन-जातीय झगड़े, ''गृह युद्ध'' और गिरोहों की आपसी लड़ाइयों में लोगों का मरना। कार्यस्थल में, परिवारों में, और यहां तक मसीही लोगों के बीच शत्रुता पाई जाती है।

मसीह की कीमती शांति संसार के क्रोध और नाराजगी को एक बड़े ही अविश्वसनीय सुन्दर संसार में बदल सकती है परन्तु चाहे मसीही लोग भी क्यों न हों जीवन हमेशा ऐसा ही नहीं मिलता। इब्रानियों के लेखक ने मसीही लोगों को ही लिखा था, ''सबसे मेल मिलाप रखने, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा'' (इब्रानियों 12:14)। शांति हमें अपने आप नहीं मिलती हैं। हमें एक दूसरे को हानि पहुंचाने के बजाय ''आत्मा के अनुसार चलने'' का वास्तविक प्रयास करना आवश्यक है (गलातियों 5:15, 16)।

यीशु ''शांति का राजकुमार'' बनकर आया। शांति दिलाने वाले की अपनी भूमिका में उसने मनुष्यजाति को हमारे पवित्र परमेश्वर के साथ मेल मिलाप करने का तरीका बताया। यीशु ''जो

पाप से अज्ञात था उसी को उस ने हमारे लिए पाप'' बन गया, ताकि ''हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)। आज्ञाकारी विश्वास से सुसमाचार को मानने वालों का ''प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल'' हो गया है (रोमियों 5:1)। मसीह उन्हें एक दूसरे के साथ मेल करने को कहते हुए उन्हें अपनी एक देह में मिला लेता है (इफिसियों 2:14-22)। यदि हम वाचा के इस सम्बन्ध में आ गए हैं तो हमें ''परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है'' मिल सकती है। यही शांति ''[हमारे] हृदयों और हमारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी'' (फिलिप्पियों 4:7)। यह शांति जो परमेश्वर की शांति है जो आत्मा का वह फल है जिसके बारे में गलातियों 5:22 में पौलुस ने लिखा।

बहुतों ने मसीह और उसके सुसमाचार का स्वागत केवल इसी कारण नहीं किया क्योंकि उनके मन बुरे थे। उन्होंने अपने बुरे मार्गों के अंधकार को प्राथमिकता दी (यूहन्ना 3:19-21; रोमियों 1:18-32)। अफ़सोस की बात है कि आज भी बहुत से लोग उससे घृणा करते हैं चाहे उसने उनके लिए ही अपनी जान दे दी। अंधकार बड़ी दृढ़ता से और आक्रमकता से विश्वविद्यालयों में, मीडिया में और सरकारों में विश्वास पर आक्रमण करता जा रहा है। यह तो बिल्कुल वैसा ही है जैसा भविष्यवक्ता ने कहा था:

> परन्तु दुष्ट तो लहराते समुद्र के समान है जो स्थिर नहीं रह सकता; और उसका जल मैल और कीच उछालता है। ''दुष्टों के लिये'' शान्ति नहीं है, ''मेरे परमेश्वर का यही वचन है'' (यशायाह 57:20, 21)।

यीशु का धीरज से सहना (5:22)

यीशु हमारी पीड़ा को समझता है क्योंकि उसने हमारी ही तरह उन पीड़ाओं को सहा है (इब्रानियों 2:17, 18; 4:15)। बेशक कई बार उसका धीरज भी जवाब दे देता था। अपनी तीन वर्ष की सेवकाई के दौरान उसने परमेश्वर की सच्चाई को बताया और बीमारियों से दुखी और दुष्टात्मा से ग्रस्त लोगों को चंगा किया। फिर भी बहुतों ने उसके अद्भुत कामों को अकृतघ्नता और अविश्वास के साथ माना। उसने खुराजीन, बैतसैदा और कफ़रनाहूम नगरों पर हाय कही, जहां उसने आश्चर्यकर्म किए थे पर उन्होंने मन नहीं फिराया था (मत्ती 11:20-24)। एक उदाहरण जो दिखाता है कि किस प्रकार से लोगों ने यीशु को चिढ़ा दिया था, मरकुस 9 में उसके चेलों के पास लाए गए ''मिरगी वाले'' एक लड़के की घटना है। वे उस लड़के में से दुष्टात्मा नहीं निकाल पाए थे जिस कारण शास्त्रियों को उनका और यीशु का अपमान करने का अवसर मिल गया। लड़के को चंगा करने से पहले यीशु ने पुकारकर कहा, ''हे अविश्वासी लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? और कब तक तुम्हारी सहूंगा?'' (मरकुस 9:19)।

विरोध के बावजूद यीशु अपनी सेवकाई में डटा रहा, जो क्रूस पर हमारे लिए उसके बलिदान में समाप्त हुआ। उसके धीरज से सहने का उदाहरण को इस घटना से बेहतरीन ढंग से दिखाया गया है। सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण के अनुसार यीशु ''अपना क्रूस उठाए हुए'' क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह गुलगुता तक गया था (यूहन्ना 19:17)।[146] बेरहमी से कोड़े खाने से बुरी तरह से कमज़ोर होने के कारण वह जहां तक ले जा सका, वहां तक ले गया होगा। अंत में क्रूस के शहतीर का बोझ इतना भारी हो गया होगा कि उससे उठाया नहीं जा रहा होगा, जिस कारण

वह उसके भार तले गिर गया होगा। सुसमाचार के अन्य तीन विवरण बताते हैं कि कुरेने वासी शमौन को बेगार में गुलगुता तक क्रूस को पहुंचाने के लिए रास्ते में पकड़ा गया था (मत्ती 27:32; मरकुस 15:21; लूका 23:26)।

पवित्र शास्त्र में यीशु की कैसी आकृति दिखाने का सुझाव दिया गया है? वह नींद न मिलने से बुरी तरह से थका हुआ था, उसकी पीठ कोड़ों की मार से लहूलुहान थी और कांटों का मुकुट उसके माथे में चुभ रहा था। घिसटते हुए भारी बोझ लेकर तंग गलियों में से गुज़रते हुए बेशक वह कांप रहा था, अपमानित किए जाने, ठट्ठा किए जाने और थप्पड़ मारने से विचलित था। उसने ताने और ठट्ठे केवल रोमी सिपाहियों से ही नहीं बल्कि प्रधान याजकां और शास्त्रियों से भी सहे। उसने यह सब सहा, चाहे परमेश्वर होने के कारण वह अपनी सहायता के लिए स्वर्ग से स्वर्गदूतों की सेना बुला सकता था और इन सब को खत्म कर सकता था (मत्ती 26:53)।

यीशु डटा रहा, तब भी जब उसकी कलाइयों और पैरों में शूल ठोके गए। उसने यहूदी अगुओं के, पास से गुज़रने वालों के और उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए अपराधियों के ठट्ठे सह लिए। उसने अपने स्वर्गीय पिता से अलग होकर संसार के पापों का बोझ अपने ऊपर ले लिया (मत्ती 27:39-46)। सचमुच में इस कार्य से प्रभु की शक्ति और उसके संयम का पता चला। इससे धीरज से सहने और अपने ऊपर काबू पाने का उदाहरण भी मिला जो संसार में इससे पहले कभी नहीं देखा था और न कभी देखेंगे।

हर मसीही को मसीह का अनुसरण करने के लिए समर्पित होना चाहिए, यहां पर उसकी इस बात में नकल करने की कोशिश करना है कि वह अपनी सबसे बड़ी परीक्षा की घड़ी में किस प्रकार से दृढ़ रहा। हमें ''धीरज, सहनशीलता, और दृढ़ता'' रखनी आवश्यक है। ऐसा हमें यीशु के द्वितीय आगमन और अनन्त जीवन को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए (याकूब 5:7, 8)।

कृपा का असर (5:22)

''कृपा'' शब्द को देखने पर हमारे ध्यान में कुछ ऐसे लोगों की आकृतियां आ सकती हैं जिन्हें हम जानते हैं। हमारी शारीरिक और भावनात्मक अवस्था में उनके द्वारा हमारी देखभाल के लिए उनकी सदय मुस्कान से हम शांति और आभार भरी जोशपूर्ण भावनाओं से भर जाते हैं। विरोध का सामना करने या तनाव से भरे, अधूरापन या अकेलापन महसूस करने पर हमें किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो हमें समझ सके और हमें तसल्ली दे सके। ऐसा कौन होगा जो जीवन में कभी उदास न हुआ हो, जब उसे लगा हो कि चारों और अंधेरा ही अंधेरा है? हो सकता है कि वह समय नौकरी छूट जाने का हो, परिवारिक समस्याओं का हो, संदेह आने का हो या न सुधरने वाले सम्बन्धों का हो। या किसी ऐसे नई जगह पर जाने का हो सकता है जहां कोई सहायता करने वाला न हो। फिर हमारी चाहे जो भी आवश्यकता हो उसमें सहायता करने के लिए तैयार कोई मित्र बनकर आ जाता है। मन को कितना सकून मिल सकता है! क्या हम ऐसी दयालुता को जो हमारे साथ की गई हो कभी बुला सकते हैं?

एक बार, साठ से अधिक साल पहले की बात है, मुझे प्रसिद्ध पुराने ''रूपरटो कैरोला, यूनिवर्सिटैट (जर्मनी की द यूनिवर्सिटी ऑफ़ हेडलबर्ग)'' में अध्ययन के लिए चुन लिया गया। विदेश में एक युवा के रूप में मुझे डर लगा, खास कर तब जब अधिक देर नहीं हुई थी कि

अमेरिका को अपने सबसे बड़े शत्रु (नाज़ी जर्मनी) का सामना करना पड़ा था। हेडलबर्ग नगर में अकेले घूमते-घूमते इसके सम्माननीय स्थलों को देखते हुए मुझे एक अजनबी मिल गया। एक कलीनशेव जवान मेरे साथ बात करने के लिए रुक गया और मुझ से पूछने लगा कि क्या मैं उसे नगर के आस पास दिखाने का सम्मान दूं। बेशक मैंने खुशी खुशी मान लिया। उसका बर्ताव अच्छा और सभ्य था और मैं उसकी दयालुता को कभी भूल नहीं पाया।

लूका 10 अध्याय में यीशु ने एक दृष्टांत बताया जो हमें परमेश्वर की कृपा के आदर्श की गहरी समझ देता है। उन यहूदियों के मन में जो यीशु को सुन रहे थे, उसकी कहानी से यह सवाल उठा होगा कि एक सामरी आदर्श यहूदियों से बेहतर कैसे कर सकता है? यह दिल दहला देने वाली कहानी है जो हमें कृपा का बड़ा सबक सिखाती है।

इस कहानी में एक आदमी घायल और दुखी सड़क के किनारे पड़ा था जिसके कपड़े उतारकर उसे मारपीटकर "अदमरा" छोड़ दिया गया था (लूका 10:30)। "ऐसा हुआ" कि पहले एक याजक और फिर एक लेवी आया। यह साफ़ कहा गया है कि दोनों ने उसे देखा परन्तु "कतराकर" चले गए (लूका 10:31, 32)। परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में इन यहूदियों को "जातियों के लिए प्रकाश" (यशायाह 42:6-8; देखें 49:6), अर्थात अपने सृजनहार की सेवा में सब जातियों (अन्यजातियों) के लिए नमूना बनने के लिए बुलाया गया था। इस्राएलियों को एक ऐसी जाति बनना था जिसकी दो सबसे बड़ी आज्ञाएं परमेश्वर से प्रेम करने और अपने पड़ोसी से प्रेम करने पर केन्द्रित थी (लूका 10:25-28)। दूसरी आज्ञा को पूरा करने से ही अन्यजातियों को पता चलना था कि पहली आज्ञा का अर्थ क्या है। याजक और लेवी दोनों ही परमेश्वर के अपने लोगों के लिए सबसे बड़ा नमूना थे परन्तु उन्होंने परमेश्वर के मन को समझा ही नहीं। सामरी की प्रतिक्रिया कितनी अलग थी:

> उसने उसके पास आकर उस [घायल व्यक्ति] के घावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टियां बान्धी, और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया, और उसकी सेवा टहल की (लूका 10:33ख, 34)।

उसने अपनी जेब से उस घायल के रात ठहरने का खर्च ही नहीं चुकाया बल्कि लौटने पर उस व्यक्ति की टहल में जो भी खर्चा आना था उसे चुकाने का वायदा भी किया (लूका 10:35)। कितना अनुकरणीय व्यवहार है और वह भी उस सामरी का जिन्हें तुच्छ माना जाता था! अपनी दयालुता से उसने उस घायल व्यक्ति का "पड़ोसी" होना साबित कर दिया (लूका 10:36, 37)।

परमेश्वर अपने लोगों में कृपा के व्यवहार को देखना चाहता है। दूसरों द्वारा हमारे साथ किए गए कृपा के कार्यों का आनन्द लेना ही काफ़ी नहीं है या हमारे प्रति परमेश्वर की कृपा गदगद होना ही काफ़ी नहीं है। यह व्यवहार हमारे अपने जीवनों में प्रतिदिन काम करना चाहिए। हम अपने आपको कठोर और बेपरवाह बनाने के लिए थकान, चिडचिड़ापन और तनाव को आगे न आने दें। बल्कि हर परिस्थिति में हम आत्मा के चलाए चलते हुए परमेश्वर की कृपा को दिखाते रहें। हमारा कृपालु व्यवहार और काम निश्चय ही दूसरों को मसीह के लिए प्रभावित करेंगे (देखें मत्ती 5:14-16; 1 पतरस 2:12)।

भला मनुष्य (5:22)

''भला'' (*agathos*) शब्द का इस्तेमाल मनुष्य के लिए जिसमें यीशु भी शामिल है कम ही किया जाता है। एक बार किसी व्यक्ति ने उसे ''हे उत्तम गुरु'' कहकर बुलाया था। उस अवसर पर यीशु का उत्तर था कि ''तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर'' (मरकुस 10:17, 18)। सम्भवतया प्रभु उसे यह जानने के लिए परख रहा था कि उसे यीशु की असल पहचान का पता है या नहीं।

बहुत कम लोगों को ''भला'' कहा जाता है। अपने चेलों की विनती पर जब यीशु उन्हें समझा रहा था कि प्रार्थना किस प्रकार करनी चाहिए तो उसने हैरान करने वाले शब्दों का इस्तेमाल किया ''अत: जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को *अच्छी* वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा'' (लूका 11:13)। नये नियम में चाहे कई वस्तुओं और गुणों को ''भले'' कहा गया है (जैसे, ''अच्छा फल,'' ''भले काम,'' और ''अच्छा बुद्ध विवेक'') परन्तु कुछ ही लोगों को ''भले'' (*agathos*) कहा गया है।

जिन्हें ''भले'' कहा गया है उनमें से बरनबास एक है (प्रेरितों 11:22, 24)। इस मनुष्य से जितना अधिक परिचित होते हैं उतना ही हमें आत्मा के उस फल की गहराई से समझ होती है जिसे ''भलाई'' (*agathosunē*, अगाथोसुन) कहा गया है। उसका जीवन उदारता, साहस, प्रेम और दूसरों में भरोसे का प्रतीक था। बरनबास अपने बड़े-बड़े भाषणों या पत्रों के कारण नहीं बल्कि आत्मा और अपने विश्वास से जीवन में आने वाली भलाई के कारण आरम्भिक कलीसिया में दूसरों से हटकर दिखाई देता है।

विश्वास की आवश्यकता (5:22)

Pistis (''वफ़ादारी'') शब्द जिसके नये नियम में कई अर्थ हैं, का अनुवाद आम तौर पर ''विश्वास'' के रूप में किया जाता है। विश्वास के महत्व पर ज़ोर दिया जाना आवश्यक है। हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर में विश्वास और यीशु को मसीह मानने में विश्वास आवश्यक है। आइए इन वचनों पर ध्यान करते हैं:

> जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 3:18)।
>
> जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है (यूहन्ना 3:36)।
>
> इसलिये मैंने तुम से कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे, क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे (यूहन्ना 8:24)।
>
> और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है (इब्रानियों 11:6)।

यीशु की नम्रता (5:23)

''आत्मा का फल'' के सम्बन्ध में यीशु के नमूने से बढ़कर कोई नहीं हो सकता और न कोई उसकी बराबरी कर सकता है। ''नम्रता'' (*prautēs*) के सम्बन्ध में, हमारे लिए दुख सहने और मरने के द्वारा उसने नम्रता, दीनता और संयम की खूबियों को सजीव ढंग से दिखा दिया। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने सब मसीही लोगों के लिए नकल करने के लिए यीशु को नमूने के रूप में इस्तेमाल किया। प्रभु के क्रूस पर दिए जाने का संकेत देते हुए उसने लिखा, ''इसलिए उस पर ध्यान करो, जिसने अपने विरोध में पापियों को इतना विरोध सह लिया, कि तुम निराश होकर हियाव न छोड़ दो'' (इब्रानियों 12:3)। इसी प्रकार से पतरस ने भी यीशु को उस नमूने के रूप में दिखाया जिसका हमें पालन करना चाहिए: ''वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था'' (1 पतरस 2:23)।

यीशु की नम्रता और दीनता बड़ी अनोखे ढंग से दिखाई गई जब याजक और सिपाही उस पर थूकते और उसे थप्पड़ मार रहे थे जब रोमी कोड़ों से उसकी पीठ छलनी हो रही थी और जब भीड़ के लोग चिल्ला रहे थे, ''उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!'' पिलातुस ने उन से कहा, ''तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ। क्योंकि मैं उस में कोई दोष नहीं पाता'' (यूहन्ना 19:6)। ये गुण तीनों लोगों को अपने अपने क्रूस पर होने के समय जो लोग उनके पास से गुज़रे और अधिक दिखाए गए। दण्ड पाए हुए लोग जब तड़प रहे थे तो बेरहम याजकों, शास्त्रियों और प्राचीनों ने ठट्ठे मारते हुए ताने देकर उन्हें उत्तर दिया था (मत्ती 27:42, 43क)। यीशु ने कैसे जवाब दिया? उसने प्रार्थना की, ''हे पिता, इन्हे क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34; ASV)।

यह देहधारी हुए परमेश्वर की दीनता की उत्तमावस्था थी! काश परमेश्वर हमें इस दीनता को सिखाए ताकि हम उस महिमा में से जो अपनी और आत्मा की उस सनातन क्षेत्र की झलक देने के लिए उस थोड़े समय के लिए प्रकट हुई थी, कुछ को दिखा सकें। हमें इस संसार में मसीह की दीनता का अनुकरण करना आवश्यक है ताकि हमारे आस पास के लोगों को पता चल सके कि परमेश्वर कौन है और वह उनसे कितना प्रेम करता है (यूहन्ना 1:14, 18; 3:16, 17)।

दाऊद की नम्रता, भाग 1 (5:23)

पुराने नियम के समयों में यहूदी लोगों के विचार से ''नम्रता'' (''दीनता''; KJV; ASV) को कितना ऊंचा दर्जा प्राप्त था? प्राचीन यूनानियों के बीच तो इसे बहुत कम आंका जाता था। उनकी दृष्टि में यह ''निर्बलता'' के जैसा ही था जैसा कि आज हमारे समय के सांसारिक लोगों के बीच में भी माना जाता है।

दाऊद बिना किसी संदेह के पुराने नियम के सबसे मजबूत और निडर लोगों में से था। भजन भजन 132 में दाऊद का एक हवाला (131; LXX) हमें लड़ाई के बीच सामर्थ के विचार को जांचने में सहायता करता है। भजन का आरम्भ होता है:

> हे यहोवा, दाऊद के लिये उसकी सारी दुर्दशा [*prautēs,* ''दीनता''; LXX] को स्मरण

> कर; उस ने यहोवा से शपथ खाई, और याकूब के सर्वशक्तिमान की मन्नत मानी है, कि निश्चय मैं उस समय तक अपने घर में प्रवेश न करूंगा, और न अपने पलंग पर चढ़ूंगा; न अपनी आंखों में नींद, और न अपनी पलकों में झपकी आने दूंगा, जब तक मैं यहोवा के लिये एक स्थान, अर्थात् याकूब के सर्वशक्तिमान के लिये निवास स्थान न पाऊं (भजन 132:1-5)।

यहां हमारी चिंता मुख्यतया दूसरी पंक्ति है जिमसें इब्रानी धर्मशास्त्र में ''दुर्दशा'' के लिए LXX में (NASB) की तरह ''दीनता'' (*prautēs*) शब्द को बदल दिया गया है। मूल इब्रानी के लिए दोनों में से कोई भी शब्द व्यवहारीय अनुवाद है।

भजन भजन 132 वाली दुर्दशा वह बोझ है जो दाऊद ने यहोवा के घर की ओर से अपने ऊपर उठाया था, विश्राम का स्थान जिसे वह उसके लिए बनाने के लिए इतने भक्तिपूर्ण ढंग से प्रतीक्षा करता था। भजन का यह प्रमुख विषय स्तर्क पाठक के लिए बिल्कुल सही है।

भजन दाऊद के लिए नहीं है। उसे संक्षेप में उद्धृत किया गया है, और भजन में बार बार उसकी और उसके राजवंश की बात की गई है। परन्तु परमेश्वर का घर जहां उसकी उपस्थिति के संदूक के सामने आराधना के लिए इकट्ठा होने उसके लोग आए थे, मुख्य फोकस है। दाऊद का सिंहासन चाहे स्वर्ग में होना था परन्तु यह समझा गया कि उसके पैरों की चौंकी पृथ्वी पर है और इससे भी स्पष्ट कि यह उसके मन्दिर में है (1 इतिहास 28:2; भजन 132:7)। सबसे बढ़कर हमें ऐतिहासिक परिस्थिति और भजन के पीछे की कहानी में संदूक की भूमिका को याद रखना आवश्यक है।

भजन अपने आप में बाद के समयों के तीर्थ यात्रियों के मुख से निकली हुई वेदना भरी पुकार है। वे अपनी राष्ट्रीय राजधानी और दाऊद के नगर यानी उस स्थान के निकट पहुंचने पर जिसे परमेश्वर ने आराधना के लिए चुना था, गया करते थे। यह इन पन्द्रह ''यात्रा के गीतों'' (भजन 120—134) में से एक है, जो अपनी यात्रा के अंत के निकट यरूशलेम पहुंचने पर यात्रियों द्वारा गाया (या दोहराया) जाने वाला भजन था।

इस भजन की पृष्ठभूमि में संदूक के महत्व को बढ़ा चढ़ाकर नहीं दिखाया जा सकता। असल में इस समूह में केवल इसी में ही संदूक का उल्लेख है। इसके सम्बन्ध में दाऊद की परख और कष्ट की कहानी इसे समझने के लिए मुख्य बात है। सबसे पहले इसके स्थापित किए जाने तक प्रतीक्षा के वर्ष थे (भजन 132:6)। दूसरा दाऊद का आनन्द करना उज्जा की मृत्यु पर अचानक क्रोध, दुख और भय में बदल गया, जिसका संदूक को छूने का इरादा इसे उस बैलगाड़ी से गिरने से बचाना था जिस पर उसे ले जाया जा रहा था (2 शमूएल 6:1-11)। अंत में दाऊद की पत्नी मीकल की प्रतिक्रिया और कड़ी परीक्षा थी। उसने उसके लिए जो उसे लगा लज्जाजनक व्यवहार है (उसका उछलना और नाचना), इतनी बुरी तरह से अपमानित किया कि इस झगड़े से उनकी शादी टूट गई (2 शमूएल 6:16-23)।

भजन 132 का मुख्य फोकस अपने प्रिय यहोवा के योग्य स्थाई मन्दिर बनाने की दाऊद की इच्छा है। पहली आयत में *prautēs,* ''नम्रता'' का इस्तेमाल इसी संदर्भ में हुआ है। बेशक यह स्पष्ट कहा गया है कि दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार था (1 शमूएल 13:14), परन्तु इस

भले कार्य को करने की उसकी इच्छा को इनकार करके किसी दूसरे के लिए छोड़ दिया गया। शारीरिक स्तर पर यह उसके पुत्र, सुलैमान के लिए छोड़ दिया गया क्योंकि दाऊद युद्ध करने वाला मनुष्य था जिसके हाथ खून से रंगे हुए थे (1 इतिहास 22:6-10; 28:3)।[147] सुदूर एक आत्मिक स्तर पर एक यह काम मसीह ने करना था।

पुराने नियम का इस्राएल दीनता के गुण को कितना महत्व देता? पुराने नियम के सभी पात्रों में से दाऊद सम्भवतया सबसे प्रिय और सबका लाड़ला नायक था। ''दाऊद'' के नाम का अर्थ ही वास्तव में ''प्यारा'' है। निश्चय ही वह उस अर्थ में जिसमें आज हम इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं एक सैनिक नायक था। यह भजन इस बात का संकेत देता है कि दीनता के गुण के लिए उसके बहुत दिन बाद तक भी यहूदी लोग उसे अत्याधिक सम्मान देते थे। गलातियों 5:23 में पौलुस ने ''आत्मा का फल'' में इसी गुण को शामिल किया।

पवित्र शास्त्र की सच्चाई की बेहतरीन गवाहियों में से एक यह है कि यह अपने विवरणों में से सिवाय इसके कि जो देहधारी हुआ परमेश्वर था यानी प्रतिज्ञा किए हुए मसीहा और उद्धारकर्त्ता यीशु नासरी है, किसी को दोषरहित नहीं दिखाता। दाऊद में बहुत सी सराहनीय खूबियां थीं और वे सब खूबियां प्रभु की ''परछाइयों'' राजा दाऊद ही है जो उस भूमिका के साथ पूरा पूरा मेल खाता है। माना कि वह धुंधली सी छाया है परन्तु फिर भी उसकी उन बड़ी खामियों के लिए, न्याय और पवित्रता के लिए उसके जुनून की यथार्थता पर कौन संदेह कर सकता है? सिंह जैसे साहस और विश्वास में कभी डोलने वाला, वह परमेश्वर के लिए लड़ता था। अपने पाप के लिए जो कई बार बड़ा ही भयानक पाप होता था, फटकार पड़ने पर वह उसे मानकर मन फिराने में गम्भीर हो जाता था। पवित्र शास्त्र में परमेश्वर की महिमा करने में आकाश की ऊंचाइयों तक उड़ान भरने या अपने पाप के लिए शोकपूर्ण पश्चाताप में अधोलोक की गहराइयों में डूब जाने के लिए अपने भजनों में दाऊद के जैसा और कौन है? हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दाऊद नबी था और यह कि उसके भजन इलहाम प्राप्त पवित्र शास्त्र में हैं (लूका 24:44, 45; प्रेरितों 2:25-36)।

भजन 132 ठोस प्रमाण देता है कि बाद में यहूदी लोग दीनता के गुण के बेहद प्रशंसक थे। ये उन बड़ी खूबियों में से एक थी जिसके लिए वह दाऊद की प्रशंसा करते थे। उसकी दीनता निर्बलता नहीं बल्कि बड़े विरोध का सामना करते हुए नम्रता थी। यह *prautēs* ''दीनता'' या ''नम्रता'' उन लोगों के जीवनों में पाया जाने वाला फल है जो आत्मा के चलाए चलते हैं।

दाऊद की नम्रता, भाग 2 (5:23)

दाऊद के जीवन में दूसरों के साथ उसके बातचीत करने में नम्रता या दीनता का गुण भी बार बार दिखाया जाता था। इसके उदाहरण कुछ इस प्रकार हैं।

उसके भाई। दाऊद को कई कष्ट झेलने पड़े, यहां तक कि अपने परिवार से भी। जब उसके भाई ''बहादुरी से'' शाऊल की सेना में सेवा कर रहे थे तो यिशै के सबसे छोटे बेटे के रूप में दाऊद को अपने पिता के झुण्ड को चराने के लिए जाना पड़ता था। यिशै ने दाऊद को अपने भाइयों के लिए खाने पीने का समान देकर भेजा पर उन्होंने अन्यायपूर्ण ढंग से उस पर आगे बढ़कर युद्ध के रोमांच को देखने की इच्छा का आरोप लगाया (1 शमूएल 17:28-30)। उसने

उनकी तीखी आलोचना पर अधिक प्रतिक्रिया नहीं दी या उन्हें परमेश्वर की सेवा वफ़ादारी से करने से उसे रोकने नहीं दिया।

राजा शाऊल। बाद में जब दाऊद राजा के संगीतकार के रूप में सेवा कर रहा था तो शाऊल ने दो बार उसे अपने भाले के साथ दीवार में धंसा देने की कोशिश की (1 शमूएल 18:10, 11; 19:9, 10)। इसके बाद भी शाऊल दाऊद को पकड़कर उसे मार डालने के लिए अपनी सेना के साथ एनगदी के जंगल को छान रहा था। शाऊल उसी गुफा में चला गया जहां दाऊद और उसके आदमी छिपे हुए थे। दाऊद के अपने आदमियों ने उससे मौके का फायदा उठाने हुए अपने सताने वाले को मार डालने को कहा (1 शमूएल 24:1-7)।

अपने साथियों की शाऊल को मार डालने की जायज़ लगने वाली सलाह से इनकार करने से बढ़कर दाऊद के सुन्दर दीन मन को शायद हम इससे स्पष्ट ढंग से और कहीं नहीं देख सकते। आखिर शाऊल को परमेश्वर द्वारा पहले ही नकारा जा चुका था और दाऊद अब यहोवा का अभिषिक्त था। दाऊद को यह मालूम था, परन्तु वह सिर्फ परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के राजसी सत्ता के मिलने के सही समय और ढंग की प्रतीक्षा करना चाहता था: ''यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम करूं, कि उस पर हाथ चलाऊं, क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है'' (1 शमूएल 24:6)। दाऊद का विवेक इस तथ्य से भी परेशान था कि ''उसने शाऊल के बागे की छोर काटी थी'' (1 शमूएल 24:5)। जो व्यक्ति सचमुच में दीन है अधीनगी उसकी एक और खूबी है।

अबशालोम। दाऊद की दीनता तब भी बड़ी स्पष्टता से दिखाई गई थी जब उसके प्रिय पुत्र अबशालोम ने गद्दी हथियाने के लिए उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचा था (2 शमूएल 15:10-12)। अपनी जान और अपने घराने के लोगों को बचाने के लिए दाऊद को यरूशलेम से भागना पड़ा था (2 शमूएल 15:13-18)। अपने भविष्य को यहोवा के हाथ में देते हुए यह काम उसने दीनता में किया था (2 शमूएल 15:25, 26)। उसके भाग जाने पर शाऊल के घराने के एक व्यक्ति शिमी ने आकर उसे कोसा परन्तु राजा ने उसे कुछ नहीं कहा (2 शमूएल 16:5-14)। यरूशलेम में प्रवेश करने और गद्दी पर बैठ जाने पर अबशालेम ने अपने पिता की रखैलों के साथ जो महल की देखभाल के लिए पीछे छूट गई थीं उनके पास गया और अपने पिता को अपमानित किया (2 शमूएल 16:20-23)। अबशालोम चाहे अपने पिता को मार डालने का प्रयास कर रहा था (2 शमूएल 17), परन्तु दाऊद अपने पुत्र की जान बचाना चाहता था। उसने अपने तीन सेनापतियों को निर्देश दिया, ''मेरे निमित्त उस जवान, अर्थात् अबशालोम से कोमलता करना'' (2 शमूएल 18:5)। फिर भी इन में से एक, योआब ने अबशालोम को मार डाला (2 शमूएल 18:14, 15)।

परमेश्वर के जन दाऊद का उल्लेख इब्रानियों 11 में विश्वासी के रूप में हुआ है जिसने परमेश्वर की आज्ञा मानी और उसके अधीन रहा। बड़ी परीक्षा का सामना करते हुए उसने नम्रता या दीनता को दिखाया।

संयम (5:23)

''संयम'' के लिए यूनानी शब्द (*enkrateia*), मूल शब्द (*kratos*) से बना है जिसका अर्थ है, ''शक्ति,'' ''बल,'' ''प्रभुत्व'' या ''नियन्त्रण।'' *Kratos* ने अंग्रेज़ी

''democracy'' (डेमोक्रेसी, लोकतंत्र) ''autocracy'' (एक तंत्र) और ''theocracy'' (धर्मतंत्र) शब्दों को प्रभावित किया। इस हर एक शब्द का पहला हिस्सा यूनानी से लिया गया है। (1) ''डेमोक्रेसी'' का अर्थ लोगों का शासन है क्योंकि *dēmos* का अर्थ ''लोग'' है। (2) ''आटोक्रसी'' स्वशासन की ओर संकेत करता है क्योंकि आटो का अर्थ है ''खुद'' ''आटोक्रेसी'' शब्द किसी राजा का शासन या निरंकुश शासक द्वारा किए जाने वाले शासन को दर्शाता है। (3) ''थियोक्रेसी'' का अर्थ है ''परमेश्वर द्वारा शासन'' क्योंकि ''परमेश्वर'' या ''ईश्वर'' के लिए शब्द *theos* है। धर्मतन्त्र का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण पुराने नियम में इस्राएल पर परमेश्वर का शासन है जिसमें न्यायिक, वैधानिक, राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक यानी हर प्रकार का अधिकार उनके परमेश्वर यहोवा का था।

परमेश्वर का शासन चाहे बिल्कुल मुकम्मल था, परन्तु वह किसी भी अर्थ में निरंकुश नहीं था बल्कि धार्मिकता, भलाई और प्रेम की मूर्त था। कहा गया है कि ''सत्ता भ्रष्ट करती है और सम्पूर्ण सत्ता बिल्कुल भ्रष्ट कर देती है।''[148] नाशवान मनुष्यों के क्षेत्र में यह बिल्कुल सच है; परन्तु परमेश्वर के लिए यह बिल्कुल सच नहीं है। उसकी इच्छा मनुष्य को आशीष देने की है जिसे उसने अपने ही स्वरूप पर बनाया। पृथ्वी पर अपने अस्तित्व के दुखद नाटक के आरम्भिक दृश्यों में मनुष्य जाति ने परमेश्वर की सम्प्रभुता को नकार दिया। उसे अपना ही नुकसान उठाना पड़ा, क्योंकि उसने बुरी तरह से उस स्वरूप को बिगाड़ दिया और ''इस संसार के सरदार'' के (यूहन्ना 12:31; NIV), जो उस सब का विरोधी है जो भला है निरंकुश शासन के अधीन आ गया।

हमारे आदिकालीन माता पिता की यह युगों पुरानी कहानी केवल प्राचीन इतिहास नहीं है, न ही यह अपने माता पिता की आज्ञा न मानने के खतरनाक नतीजों को बताए जाने की काल्पनिक कहानी है। इसके बजाय यह हर मनुष्य की आज की कहानी है। जवान हों या बूढ़े, हर युग के दोषपूर्ण मानवीय मन आज नहीं तो कल उसकी स्वतन्त्रता को रोकने और उसे अपने काबू में करने वाले हर प्रयास को चुनौती देगा ही। अफसोस की बात यह है कि इसमें हमारा सर्वप्रिय सृष्टिकर्त्ता और हमारा स्वर्गीय पिता भी शामिल हैं।

मनुष्य उसकी भूमिका की जगह जिसने उसे जीवन दिया है अपनी ही शकल बनाना चाहता है! परमेश्वर उसे अपनी बाहों में लेकर अपने ही ईश्वरीय स्वभाव की घनिष्ठ संगति में देख सकता है जिसके लिए इसे मूल में बनाया गया था (2 पतरस 1:2-4)। अपने ही मार्ग पर जाने की मनुष्य का पक्का इरादा उसे पीड़ा, कलेश और विनाश ही देती है। बहुत पहले यिर्मयाह ने लिखा था, ''हे यहोवा, मैं जान गया हूँ, कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो हे, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं'' (यिर्मयाह 10:23; NKJV)। यह बहुत कुछ उस बच्चे के जैसा है जो सुन्दर वादी के नीचे के और बेहतर दृश्य के लिए ऊंचे पहाड़ की चोटी के सिरे से जल्दबाजी में नीचे को देखने को दौड़ जब तक कि माता-पिता उसे न रोकें।

यह उस मूर्ख से जो चाहे समझदार ही हो, अलग नहीं है जो परमेश्वर को न जानता हो। उसे ''संकल्प,'' या इरादा जैसी कोई चीज़ दी गई है। वह, जिसे हम ''स्वतन्त्र नैतिक जीव'' कह सकते हैं, जिसके लिए अपनी समझ के अनुसार जो उसे अच्छा लगे वह निर्णय लेना स्वाभावितक है। बिना योग्य नियन्त्रण, संयम और ईश्वरीय अगुआई के, अदन वाली त्रासदी, ''स्वाभाविक

मनुष्य'' को हानि पहुंचाती हुई अपने आपको दोहराती रहेगी। बार बार मनुष्य उस मना किए हुए फल तक पहुंच जाता है क्योंकि वह है तो आकर्षक और स्वादिष्ट। यदि वह शैतान के झूठ पर विश्वास कर लेता है तो यह उसे भी परमेश्वर के जैसा बुद्धिमान बना देगा (उत्पत्ति 3:5, 6; देखें याकूब 1:13-15; 1 यूहन्ना 2:15-17)। यीशु ने उन यहूदियों को जो उसका विरोध कर रहे थे, उत्तर दिया, ''तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं... ।'' (यूहन्ना 8:44)।

संयम में कमी स्वतन्त्रता दिलाने के बजाय पाप का दास बना देती है। मन फिराकर और आज्ञा मानकर यीशु की ओर न फिरने वाले निर्बुद्धि, हठी और घमण्डी लोगों का भविष्य अनन्तकाल का दण्ड है। अपने समय की अनैतिकता को उत्तर देते हुए पतरस ने यह यकीन दिलाने वाले वचन लिखे:

> ... प्रभु भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है। विशेष करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं (2 पतरस 2:9, 10क)।

आइए उस अधर्म और दुष्टता पर ध्यान दें जो हमारे समय में हमारे इर्द गिर्द पाई जाती है। कुछ लोग जो अपनी अनैतिक जीवन शैली को सहन करने की मांग करते हैं, यह घोषित करते हैं कि वह असहनीय हैं। सचमुच ''दिन बुरे हैं'' (इफिसियों 5:16)।

जीवों के रूप में जो संसार में ''जीवित रहते चलते फिरते और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों 17:28; NIV), हमें आम तौर पर संसार की तरह न सोचना कठिन लगता है। प्रार्थना करते हुए यीशु ने अपने चेलों के लिए कहा, ''जैसे मैं संसार का नहीं, वैसे ही वे भी संसार के नहीं'' (यूहन्ना 17:16; देखें फिलिप्पियों 3:20, 21)।

इतिहास में पीछे मुड़कर जब हम देखते हैं तो हम उन ''महान'' लोगों को देखते हैं जिन्होंने बाजू के बल और पक्के इरादे से बड़े बड़े राज्यों को जीतकर किलानुमा नगरों को भस्म कर दिया। हम सिकन्दर महान के बारे में सोचते हैं जिसने अपना साम्राज्य भारत की नदियों तक पूर्व तक फैला दिया। उसकी सबसे बड़ी चुनौती शायद सोर नगर था जिसका एक भाग टापू के तट पर और दूसरा फीनीके के मुख्य तट पर था। सिकन्दर ने महाद्वीप पर पुराने नगर को आसानी से पराजित कर दिया। परन्तु उस ज़माने में समुद्री जहाज न होने के कारण उसे टापू पर नये नगर को हराने के लिए कोई दूसरा रास्ता निकालना था। अंत में उसने महाद्वीप से टापू के किले तक एक पुल बनाकर समस्या का समाधान कर दिया। इस बड़े काम के लिए टापू के लोगों की ओर से बड़ा विरोध हुआ और सिकन्दर ने लगभग इस काम को छोड़ ही दिया था। अंत में उसकी सहायता के लिए 120 जहाज आ गए और फिर उसने सेतू को पूरा किया, किले पर हमला करके इसे गिरा दिया। इस करतब को पूरा करने के लिए उसे सात महीने लग गए।[149]

उसकी सेनाएं इस अपमानजनक और कठिन कार्य को करके दुखी हो रही होंगी, परन्तु सिकन्दर के कारनामों को जानने वाले सब लोग इसे बड़ी से बड़ी सैनिक प्राप्तियों में से एक मानेंगे। हम इस बात से इनकार नहीं करते कि मकिदुनिया का सिकन्दर मसीह के आने के लिए,

विशेषकर भूमध्य सागर के पूर्व के देशों में यूनानी भाषा और संस्कृति को फैलाने के लिए, संसार को तैयार करने के लिए परमेश्वर का अद्भुत और ज़बर्दस्त माध्यम था। इससे बहु भाषा का वह माध्यम मिला जिसमें पुराने नियम का अनुवाद किया जाना (LXX) और नये नियम का लिखा जाना था। फिर भी सोर के भूमध्य सागर के व्यापार केन्द्र की उसकी पराजय के सम्बन्ध में सुलैमान की बात उपयुक्त है कि "विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर के जीत लेने से उत्तम है" (नीतिवचन 16:32)।

हम संसार के सबसे बड़े सैनिक सेनापतियों में से एक सिकन्दर के शानदार कामों पर अचम्भित हुए बिना नहीं रह सकते। वह प्रेरणादायक लीडरशिप के गुणों का ऐसा नमूना बन गया कि चाहे जो भी हो जाए हज़ारों लोग उसके पीछे चलने को अपनी जान बलिदान करने को तैयार हो जाए। इसी प्रकार से अपने जीवन के शिखर पर, संयम न होने के कारण वह अंत में असफल हो गया। युद्ध में प्रख्यात, शांति में बुरी तरह से नाकाम रहा। बुराई, मतवालेपन और क्रोध के बेलगाम दौरों के वश में आकर उसने अपने सबसे प्रिय मित्र को मार डाला, अपनी सेहत को खराब किया और लगभग बत्तीस वर्ष की उम्र में जवानी में मर गया। वह "महान" था और आज भी उसे महान ही माना जाता है। युद्ध में अपनी दृढ़ता के गुण से उसने अपनी सेनाओं को अपनी से बड़ी सेनाओं पर विजय दिलाई। परन्तु सच्चाई के पल में, सिकन्दर अपनी सबसे निर्णायक परीक्षा में नाकाम हो गया और अपने ही मन को जीतने और उस पर शासन करने की अपनी अयोग्यता को दिखा दिया।

"एक दूसरे को छेड़ना" (5:26)

पौलुस ने इस भाग को यह कहते हुए समाप्त किया कि "हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, ..." (5:26)। मसीही व्यक्ति को दूसरों को चिढ़ाने या भड़काने का प्रयास नहीं करना चाहिए। परन्तु यह बात झगड़ों या विवादों को खारिज नहीं कर देती। कई बार सच्चाई की खातिर बहस करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के लिए यहूदा ने कहा "उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था" (यहूदा 3)। "पूरा यत्न करो" (*epagōnizomai*) शब्द से निकला है जो कि खेलकूद का तीव्र शब्द है जिसका इस्तेमाल पूरे बल से मुकाबला करने के लिए किया जाता है। जब हमारे विश्वास या सुसमाचार की बात होती है तो हमें इतने "अच्छे" नहीं बनना चाहिए कि हम यह सोच लें कि यह ऐसी बात है जो मसीही व्यक्ति को नहीं करनी चाहिए।[150]

हम स्तिफनुस के उदाहरण पर भी विचार कर सकते हैं जब "आराधनालय में से जो लिबिरतीनों की कहलाती थी" कुछ लोगों ने उसका सामना किया था। उसका संदेश सुनकर वे "उठकर (उस) से वाद विवाद (*suzēteō*) करने लगे।" "परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिससे वह बातें करता था, वे सामना न कर सके" (प्रेरितों 6:9, 10)। क्रिया शब्द *suzēteō* जिसका अनुवाद "वाद विवाद" हुआ है,[151] स्तिफनुस के विरोधियों के लिए इस्तेमाल हुआ है क्योंकि वे उसके साथ वाद विवाद कर रहे थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि उनकी बातें घृणा और छल से भरी थीं (प्रेरितों 6:11, 12)। स्तिफनुस ने परमेश्वर के वचन की सच्चाई के साथ उनके हमलों का जवाब देने में कोई हिचक नहीं की। वह निडर था और अपराधी

ठहराया गया था, परन्तु उसकी बातें उन खोई हुई आत्माओं के लिए प्रेम से भरी थीं। उनके उसे पथराव से मार डालने पर, पहले मसीही शहीद के यह करुणा भरे शब्द थे: ''हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!'' (प्रेरितों 7:60)।

मसीही व्यक्ति के लिए जो प्रभु और सुसमाचार की सच्चाई की खातिर किसी विरोधी के साथ अपने आपको विवाद करते पाता है, शायद इससे महत्वूपर्ण उदाहरण पवित्र शास्त्र में और कहीं नहीं है। हम उन ''वाद विवादों [डिबेटों]'' से परिचित हैं जिसमें सुसमाचार के संदेश के भावी योद्धाओं ने निर्णायक ढंग से अपने विरोधियों को पराजित किया और मसीह के काम के शत्रुओं की पुष्टि कर दी। हम उन वाद विवादों को भी जानते हैं, जो आज भी किताबों में पाए जाते हैं जिनसे लाखों की संख्या में लोग विश्वास लाए, केवल इसके संदेश के प्रभावशाली प्रस्तुति से ही नहीं बल्कि प्रस्तुतकर्ता के सच्चाई से और स्नेही मन से प्रस्तुत करने के कारण भी।

माना कि किसी बात की जोश भरी, जनूनी चर्चा जिसमें किसी का इतना विश्वास हो कि वह उसके लिए मरने मारने को तैयार हो, अपने आप में बड़ी सामर्थ रखता है। वह सामर्थ नाश करने और बचाने दोनों की है। समर्पित चेले के लिए सम्भवतया यह किया जाने वाले सबसे कठिन कामों में से एक है।

ऐसा नहीं हो सकता कि सुसमाचार का प्रचार हो और विरोध न हो। यह तो सीधी सी बात है कि बुराई सच्चाई से घृणा करती है। हाबिल ने कैन की हत्या क्यों की? परमेश्वर के पृथ्वी पर विचरने के लिए सबसे धर्मी और प्रिय व्यक्ति, अपने पुत्र को भेजने पर, उसके अपने ही लोगों ने उसे क्यों मार डाला? उन्होंने उसे पृथ्वी से क्यों उठा लिया? प्रेरित यूहन्ना ने ऐसे प्रश्नों का उत्तर इन शब्दों के साथ किया:

> और दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सत्य पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों कि वह परमेश्वर की ओर से किए गए हैं (यूहन्ना 3:19-21)

टिप्पणियां

[1]देखें मत्ती 5:10-12; रोमियों 5:3-5; 2 कुरिन्थियों 1:3-7; इब्रानियों 10:32-36; 12:1-11; याकूब 1:2-4; 5:10, 11. [2]सीराच (प्रवक्ता ग्रंथ) 51:23-26 (NAB)। [3]''प्रभु'' या ''स्वामी'' के लिए इब्रानी शब्द *rab* है, जबकि ''मेरे प्रभु'' या ''मेरे स्वामी'' के लिए *rabbi*। [4]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* संशो. व संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 2:900-1 में कार्ल हेनरिच रेंग्सटार्फ। [5]इस शब्द के क्रिया रूप का अक्षरश: अर्थ है ''इर्द-गिर्द से काटना'' (विलियम डी. माउंस, संपा., *माउंस कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2006], 111)। [6]देखें लैव्यव्यवस्था 12:1-3; लूका 1:59; 2:21; यूहन्ना 7:22, 23; फिलिप्पियों 3:4, 5. [7]यहूदी मसीहियों को 2:12, कुलुस्सियों 4:11, और तीतुस 1:10 में ''खतना किए हुए'' और प्रेरितों 10:45 में ''खतना किए हुए विश्वासी'' के रूप में जाना जाता था। [8]अनुवादित यूनानी शब्द (*akrobustia*) ''खतना रहित'' का अक्षरश: अर्थ है ''खलड़ी।'' ''खतना'' (*periteomē*) शब्द यूनानी बाइबल में कई बार

मिलता है, परन्तु नये नियम में इस प्रक्रिया को उलटा करने के लिए तकनीकी चिकित्सीय शब्द (*epispaō*), ''खतना रहित होना'' केवल 1 कुरिन्थियों 7:18 में मिलता है। LXX में यह इस अर्थ के साथ कहीं नहीं मिलता। [9]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 525-26. [10]देखें प्रेरितों 12:7; 27:32; याकूब 1:11; 1 पतरस 1:24.

[11]बाउर, 308. [12]देखें इफिसियों 2:8-10; 2 तीमुथियुस 1:8, 9; तीतुस 3:4-7. [13]देखें गलातियों 3:2, 3, 5, 13, 14; 4:6, 29. [14]आर. ऐलन कोल, *द एपिस्टल ऑफ पॉल टू द गलेशियंस*, द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1965), 142-43. [15]गलातियों 2:16; 3:2, 3, 5, 10; देखें 4:29. [16]बाउर, 484. [17]देखें रोमियों 2:28, 29; फिलिप्पियों 3:2-9; कुलुस्सियों 2:11, 12. [18]देखें 1 तीमुथियुस 3:9; 6:10; 2 तीमुथियुस 3:8. [19]CEB में कहा गया है ''वे सब चमड़े के साथ काम करते थे।'' [20]खेलों में धोखेबाजी पर बड़ी नाराजगी दिखाई जाती थी। असल में ओलम्पिया के स्टेडियम के प्रवेश द्वार पर बैठक पर कथित ''ज़ेनों'' की एक शृंखला थी जिसमें ज्यूस देवता की पीतल की मूर्तियां होती थीं (जिसका ज़ेनस बहुवचन रूप है और जिसके सम्मान में दौड़ करवाई जाती थीं,। हर मूर्ति के स्थान पर उस प्रतियोगी का नाम अंकित होता था जिसने धोखा किया उसका नाम उस मूर्ति स्थल में अंकित होता था जो उसे लज्जित करने के लिए होता था। पीतल के ज़ेनस चाहे बहुत समय से गायब हैं पर मूर्ति स्थल आज भी है।

[21]देखें 2:2; 5:7; रोमियों 9:16; 1 कुरिन्थियों 9:24, 26; फिलिप्पियों 2:16. और जगह यह प्रार्थना करने के लिए कि ''प्रभु का वचन दौड़ सके ['तेजी से फैले'; NASB] और महिमा पाए'' (ASV) संक्षिप्त विनती में 2 थिस्सलुनीकियों 3:1 में मिलता है। [22]यूनानी धर्मशास्त्र में *egeneto*, जिसका अक्षरश: अर्थ है, ''पैदा होना।'' [23]जोसेफ हेनरी थेयर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट* (सिनसिनाटी: अमेरिकन बुक कं.,1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1962), 660. [24]देखें गलातियों 5:9; रोमियों 11:16; 1 कुरिन्थियों 5:6, 7. [25]बाइबल में ''खमीर'' का इस्तेमाल एक बार सकारात्मक अर्थ में किया गया है। यीशु ने यह दृष्टांत दिया: ''स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते-होते वह सब खमीर हो गया'' (मत्ती 13:33)। [26]केन्नथ एल. बोल्स, *गलेशियंस एंड इफिसियंस*, द कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री (जोप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1993), 131-32. [27]जब पतरस ने कैसरिया के लिए अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खुल जाने के बाद यरूशलेम को गया तो ''खतना किए हुए लोग उससे वाद विवाद करने लगे, 'तू ने खतना रहित लोगों के यहां जाकर उनके साथ खाया!' '' (प्रेरितों 11:2, 3; NKJV)। यदि पौलुस खतने का प्रचार कर रहा था, यानी अन्यजातियों को यहूदी मत ग्रहण करने वालों को लौटा रहा होता तो विश्वासी यहूदियों के लिए शिकायत करने का कोई कारण नहीं होना था। [28]''जाती रही'' यूनानी शब्द *katargeō* (कैटार्गियो) से लिया गया है (5:4 की तरह)। [29]''फंदा'' *moqesh* सहित इसका अनुवाद अन्य यूनानी शब्दों में भी किया जाता है। [30]पौलुस ने चाहे ''क्रूस'' के लिए शब्द (*stauros*) बदल दिया हो, परन्तु उसने LXX से ''वृक्ष'' या (खूंटा) के लिए शब्द को यूं ही रखा। ऐसा करके उसने यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने और व्यवस्था में पाए जाने वाले श्राप के बीच निकट सम्बन्ध को बरकरार रखा। ESV KJV में प्रेरितों 5:30; 10:39; 13:29; 1 पतरस 2:24. CJB में इन सभी आयतों में ''खूंटा'' है।

[31]देखें KJV; NRSV; GNT; NLT; [व्यवस्थाविवरण 23:2]; NJB; NJPSV. [32]ये श्लेष ''पैरामोमेसिया'' नामक सर्व सामान्य का एक रूप है जिसकी परिभाषा ''उसी या उससे मिलते जुलते शब्द'' के रूप में की जाती है (एफ. बलास एंड ए. डेबरनर, *ए ग्रीक ग्रामर ऑफ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, अनु. और संशो. रॉबर्ट डब्ल्यू. फंक [शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1961], 258 [नं. 488.1])। पौलुस के लेखों में श्लेष आम है औ यह उसके संदेश पर दिए जाने वाले ज़ोर को विशेषकर अलंकार में बढ़ा देता है। फिलिप्पियों 3:2, 3 में ''काटने'' का संकेत देते हुए मूल शब्द *tomē* को बड़ी नज़दीकी से दो बार इस्तेमाल किया गया है। इसके दो उपसर्ग हैं (*Kata*, ''नीचे'' या ''विरुद्ध'') और (*peri*, ''आस-पास'')। इन शब्दों का इस्तेमाल पुरुष जनन इंद्री के सम्बन्ध में किया जाता है। [33]''घर में जन्मे'' के लिए यूनानी शब्द (*oikogenēs*) है। इस प्रकार के गुलाम की कीमत घर से बाहर से हासिल किए जाने वाले गुलामों से कहीं बढ़कर होती थी। [34]थॉमस वीडमैन, *ग्रीक एंड रोमन सेलवरी* (बाल्टिमोर: जॉन हॉप्किन्स यूनिवर्सिटी प्रैस, 1981), 6-8. [35]वहीं, 23. [36]वहीं,

50. [37]वहीं, 46-47. [38]निश्चय ही पौलुस सब लोगों की स्वतन्त्रता को प्राथमिकता देता था जैसा कि भगौड़े गुलाम उनेसिमुस के मामले में हुआ, उसने उस समय के कानून को ध्यान में रखते हुए प्रिय चेले को उसके स्वामी के पास लौटा दिया (फिलेमोन 10-16)। यीशु ने कभी नहीं चाहा कि उसके लोगों की समस्याएं हिंसा से सुलझाई जाएं। उसने पतरस से कहा था, ''अपनी तलवार म्यान में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं वे सब तलवार से नष्ट किए जाएंगे'' (मत्ती 26:52)। [39]देखें मत्ती 7:12; 22:36-40; रोमियों 12:9, 10; याकूब 2:8. [40]देखें 5:22; 1 कुरिन्थियों 12:31—13:13; कुलुस्सियों 3:12-14.

[41]उत्पत्ति 49:17; गिनती 21:6-9; व्यवस्थाविवरण 8:15; । 10:8, 11; यिर्मयाह 8:17; आमोस 5:19; 9:3. [42]याकूब 3:9 में यूनानी क्रिया का पूर्णकाल अस्तित्व में बनाए रखने के परिणामों के साथ साथ कालांतर में परमेश्वर की सृजनात्मक क्रिया के तथ्य को व्यक्त करता है। NASB ''हे लोगो, जो परमेश्वर की समानता में *बनाए गए है*'' अनुवाद के साथ क्रिया के पिछले पहलू पर ज़ोर देता है। परमेश्वर की सृष्टि के बने रहने वाले परिणाम NRSV में अधिक स्पष्ट दिखाई देते हैं जिन्हें परमेश्वर की समानता में *बनाया गया*। [43]बाउर, 803. [44]वहीं, 1047. [45]इस श्रेणियों का संकेत कुछ संस्करणों के विरामचिह्नों के प्रयोग से मिलता है (NIV; NEB; REB)। [46]KJV में ''व्यभिचार'' के साथ आरम्भ होता है और ''डाहों'' के बाद ''हत्याओं'' में आता है। इन्हें सूची में शामिल नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह बहुत बात की हस्तलिपियों में मिलते हैं। (ई. एच. पैरोन, *द एपिस्टल टू द गलेशियंस,* द कैब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजिस [कैब्रिज: यूनिवर्सिटी 1900], 67.) [47]देखें उत्पत्ति 1:27, 28; 2:18-24; मत्ती 19:3-9; रोमियों 7:2, 3; 1 कुरिन्थियों 7:1-5; इब्रानियों 13:4. [48]*Koitē* का तकनीकी रूप में अर्थ ''बिछौना'' है (इब्रानियों 13:4)। परन्तु इसका इस्तेमाल बिछौने से जुड़ी सैक्सुअल गतिविधि के लिए कोमल भाषा के लिए भी किया जाता है। [49]देखें मरकुस 7:22; रोमियों 13:13; 2 कुरिन्थियों 12:21; इफिसियों 4:19; 1 पतरस 4:3; 2 पतरस 2:7, 18; यहूदा 4. [50]बहुत समर्पित नास्तिक हो तो भी यदि वह ईमानदार है तो इस घटना के बाहरी प्रमाण से इनकार नहीं कर सकता क्योंकि पूरे संसार के मानवीय इतिहास के आस पास इसे इस तथ्य को देखा जा सकता है।

[51]अग्सटिन *क्नफेशन* 1.1. [52]यहां उद्धृत किए गए कवि हैं क्रेटन ऐपिमिनाइड्स (लगभग 600 ई.पू.); पौलुस के अपने इलाके के अरतुस ऑफ़ सोली (315-240 ई.पू.) की पुस्तक क्लेप्पिया के *फेनुमेना* में; क्लैंथस की उपदेशात्मक पुस्तक *हिम्न टू ज्यूस* में(331-233 ई. पू.)। [53]लूसियन, *द ड्रीम (ऑर द क्रॉक)* 24. [54]देखें व्यवस्थाविवरण 4:15-19, 23-28; 6:4, 13-15; 7:3-6, 25, 26. [55]उदाहरण के लिए, फीनीके में लोगों को लगता था कि बआल और अस्तारते के पास पृथ्वी के उपजाऊपन की शक्ति है। फिरुगे की माता देवी सिबेले, या इफिसियों की अरितिमस को जनने की शक्ति देने वाली माना जाता था। पोसेडोन को समुद्र (इस कारण नाविकों का देवता) और भूकंपों का देवता माना जाता था। डायोनिसस शराब का और शायरी की प्रेरणा का देवता था। एरिस युद्ध का देवता था। अपोलो यूनान में डैल्फी में और इटली में क्यूमे के अपने मन्दिर में देववाणी देता था। अथेना कला की और ज्ञान की देवी थी और न केवल एथेंस के बल्कि अन्य केवल नगरों अन की देवी थी सबसे बड़कर देवता पिता ओर शक्तिशाली ज्यूस, आकाश और मौसम का देवता था। अनाथ परदेशी और विधवा का उपकार करने वाला रक्षक माना जाता था। हिरमेस को ज्यूस के दूत लड़के के रूप में सम्मान दिया जाता था (देखें प्रेरितों 14:12)। [56]हेनरी जॉर्ज लिडल एंड रॉबर्ट स्कॉट, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन,* नौवां संस्क., संशो. व परिशिष्ट सहित विस्तार, संशो. हेनरी स्टुअर्ट जोन्स एंड रोडरिक मैकेन्जी (ऑक्सफोर्ड: कलेरन्डन प्रैस, 1968), 1917. [57]बार्कले एम. न्यूमैन, *ए कनसाइस ग्रीक-इंग्लिश डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामेंट* (लंदन: यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज, 1971), 192. [58]लियोन मौरिस, *गलेशियंस: पॉल'स चार्टर ऑफ क्रिश्चियन फ्रीडम* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइ: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1996), 171. [59]''बैर'' के लिए यूनानी भाषा में इस सूची में यह शब्द ही बहुवचन रूप में मिलते हैं: ''क्रोध के प्रकोप,'' ''झगड़े,'' ''लड़ाइयां,'' ''गुटबंदियां,'' ''जलना,'' ''मतवालापन,'' और ''शराब का दौर चलाना।'' [60]जे. बी. लाइटफुट, *द एपिस्टल ऑफ सेंट. पॉल टू द गलेशियंस,* क्लासिक कमैंट्री लाइब्रेरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 211.

[61]ब्रूस एम. मैजगर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसाइटी, 1994), 529. [62]बाउर, 392. [63]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द गलेशियंस,* द न्यू इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 248. [64]बाउर, 427. [65]देखें प्रेरितों 5:17, 18; 13:45; रोमियों 13:13; 1 कुरिन्थियों 3:3; 2 कुरिन्थियों 12:20; याकूब 3:14, 16.

[66]रिचर्ड चेनेविक्स ट्रेंच, *सिनोनिम्स ऑफ द न्यू टैस्टामेंट* (मार्शलटन, डेलवेर: द नेशनल फाउंडेशन फॉर क्रिश्चियन एजुकेशन, तिथि नहीं), 123-24. [67]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहर्ड किट्टल, अनु. व संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 2:660-61 में फ्रैडरिच बुचसेल, *"eritheia"*। [68]बाउर, 392; अरिस्टोटल *पालिटिक्स* 5.3. [69]क्रिया शब्द "बचना" *ekklinō* के वर्तमान आज्ञासूचक के रूप से लिया गया है जो निरन्तर बार बार होने वाली आज्ञासूचक का संकेत देता है। इसका अर्थ है "से दूर रहो," "कन्नी काटते रहो," सम्भवतया तब तक जब तक दोषी ऐसा दुष्ट व्यवहार करना बंद नहीं कर देता। [70]उदाहरण के लिए सैकुलर यूनानी में *hairesis* का इस्तेमाल अलग-अलग दार्शनिक पाठशालाओं के लिए किया जाता था जिसके लिए किसी की कोई सर्वसम्मति की उम्मीद न हो। अन्य सम्भावित अनुवादों में "धर्मसिद्धांत," "सोचने का ढंग," और "झुकाव" शामिल हैं (बाउर, 28)।

[71]5:26 में पौलुस ने "डाह" शब्द का इस्तेमाल क्रिया शब्द *phthoneō* से किया। [72]उस जमाने में जल शुद्धिकरण इतना अच्छा नहीं होता था। इफिसुस में स्पष्टतया पानी से तीमुथियुस को बदहजमी हो गई थी। थोड़ी सी दाखरस से उसका पेट ठीक हो जाना था। (जेम्स ई. समिथ, *एक्सहोरटेशन एपिस्टल,* टीचर्स कमैंट्री [पृष्ठ नहीं: लेखक द्वारा, 2011], 116-17।) [73]देखें गिनती 6:1-4; न्यायियों 13:2-5; मत्ती 11:18; लूका 1:15; 7:33. [74]बाउर, 580. [75]ट्रेंच, 212. [76]विलियम एम. रामसे, *ए हिस्टोरिकल कमैंट्री ऑन सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द गलेशियंस,* लिमिटेड क्लासिकल रिप्रिंट लाइब्रेरी (पृष्ठ नहीं: जी. पी. पुटनामस संस, 1900; रिप्रिंट, मिनियापोलिस: क्लॉक एंड क्लॉक क्रिश्चियन पब्लिशर्स, 1978), 453. [77]देखें रोमियों 1:29-31; 13:13; 1 कुरिन्थियों 5:10, 11; 6:9, 10; 2 कुरिन्थियों 12:20; इफिसियों 4:31; 5:3-5; कुलुस्सियों 3:5-8; 1 तीमुथियुस 1:9, 10; 6:4, 5; 2 तीमुथियुस 3:2-4; तीतुस 1:7; 3:3. [78]देखें मत्ती 15:19; मरकुस 7:21, 22; 1 पतरस 2:1; 4:3, 15; प्रकाशितवाक्य 9:21; 21:8; 22:15. [79]कोल, 160-61; जेम्स डी. जी. डन, *द थियोलॉजी ऑफ पॉल द एपोस्टल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1998), 662-65. [80]देखें मत्ती 3:7-10; 7:15-20; इफिसियों 5:6-12; फिलिप्पियों 1:9-11; इब्रानियों 12:11; याकूब 3:17, 18.

[81]देखें यूहन्ना 4:24; रोमियों 8:20-23; 1 कुरिन्थियों 15:42-53; 2 कुरिन्थियों 5:1-5; फिलिप्पियों 3:20, 21. [82]देखें मत्ती 26:28; प्रेरितों 8:38, 39; 22:16; रोमियों 6:4, 5; कुलुस्सियों 2:12; प्रकाशितवाक्य 1:5. [83]देखें रोमियों 8:9-11; 1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19; 2 कुरिन्थियों 6:16, 17; इफिसियों 2:11-18. [84]और जानकारी के लिए, पपृष्ठ पर देखें *प्रासंगिकता: चार प्रेम,* पृष्ठ 80-82. [85]बाउर, 613. [86]वहीं, 461. [87]वहीं, 612. [88]देखें 2 कुरिन्थियों 6:6; 2 तीमुथियुस 3:10; 4:2; इब्रानियों 6:12; याकूब 5:10. [89]देखें रोमियों 2:4; 9:22; 1 तीमुथियुस 1:16; 1 पतरस 3:20; 2 पतरस 3:9, 15. [90]देखें मत्ती 17:17; मरकुस 9:19; लूका 9:41; प्रेरितों 18:14; 1 कुरिन्थियों 4:12; 2 कुरिन्थियों 11:1, 4, 19, 20; इफिसियों 4:2; कुलुस्सियों 3:13; 2 थिस्सलुनीकियों 1:4; 2 तीमुथियुस 4:3; इब्रानियों 13:22.

[91]बाउर, 1039. [92]वही, 1090. [93]देखें रोमियों 2:4; 11:22; इफिसियों 2:7; तीतुस 3:4. [94]देखें गलातियों 5:22; रोमियों 3:12; 2 कुरिन्थियों 6:6; कुलुस्सियों 3:12. [95]सेसलेस स्पिक, *थियोलॉजिकल लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामेंट,* संशो. व संपा. जेम्स डी. अरनेस्ट (पीबॉडी, मैसाचुसेटस: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1994), 3:515. [96]ट्रेंच, 217. [97]लुडविग कोहलर एंड वाल्टर बाउगार्टनर, *द हिब्रू एंड अरेमिक लैक्सिकन ऑफ द ओल्ड टैस्टामेंट,* स्टडी संस्क., अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:370. [98]लाइटफुट, 213. [99]ट्रेंच, 219. [100]वहीं, 220.

[101]देखें इफिसियों 6:23; 1 तीमुथियुस 2:15; 4:12; 6:11; 2 तीमुथियुस 2:22; 3:10; तीतुस 2:2. [102]बाउर, 820. (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 3:6; 5:8; 1 तीमुथियुस 1:14; 2 तीमुथियुस 1:13; फिलेमोन 5.) [103]देखें मत्ती 10:38; 16:24; रोमियों 8:12, 13; गलातियों 2:20; 5:24; 6:14. [104]स्पष्टता के लिए NASB के अनुवादकों ने "कामुकता के साथ" शब्द जोड़ दिए। कुछ व्याख्याकर्त्ताओं ने यह विचार जताया है कि "कामातुर के लिए (NASB में जलना- अनुवादक)" शब्द नरक की लपटों में अनन्त दण्ड के लिए है। परन्तु यह व्याख्या पूरे संदर्भ के कामुक होने को अनदेखा कर देती है। पौलुस ने विवाह को गलत नहीं कहा। इसके विपरीत वह इस बात से पूरी तरह से सहमत था कि आम तौर पर अधिकतर लोगों के लिए विवाह कर लेना अच्छा होता है (1 कुरिन्थियों 7:1, 2)। [105]2 तीमुथियुस 3:3 में विशेषण शब्द (*akratēs*) के साथ साथ मत्ती 23:25 और 1 कुरिन्थियों 7:5 में संज्ञा

शब्द (*akrasia*) सहित नये नियम में इसके सम्बद्ध शब्द ही मिलते हैं। ये शब्द ''भोग-विलास,'' ''अनुशासन की कमी,'' और ''संयम की कमी'' की अवधारणाओं को व्यक्त करते हैं। [106]बाउर, 274. [107]ब्रूस, 255. [108]एस. एच. हूक, *द सेज पेरिलस* (लंदन: एससीएम प्रैस, 1956), 264. (देखें यूहन्ना 15:1-5; 2 पतरस 1:2-4.) [109]आत्मिक फल मसीही व्यक्ति के जीवन में आत्मा के काम का परिणाम है। इसी प्रकार से यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पवित्र शास्त्र में आत्मा के फल के सभी गुणों की आज्ञा दी गई है। [110]कोल, 167.

[111]वही। [112]देखें मत्ती 7:22, 23; 1 कुरिन्थियों 13:1-3; गलातियों 3:5. [113]विभिन्न संदर्भों में *sarx* किसी की शारीरिक देह या बाहरी दिखावट, वंशिक या जातीय, स्वास्थ्य की स्थिति इत्यादि का संकेत हो सकती है। आम तौर पर यह मनुष्य के सांसारिक जीवन के किसी भी पहलू की यथार्थता की बात करती हो सकती है। यह ज़ोर दिया जाना चाहिए कि *sarx* हमेशा बुरा नहीं होता। सुसमाचार के यूहन्ना के विवरण के आरम्भ में कहा गया है कि ''वचन देहधारी [*sarx*] हुआ और हमारे बीच डेरा किया'' (यूहन्ना 1:14क)। NLT में ''देह'' की जगह ''मनुष्य'' है। (देखें इब्रानियों 2:14; 1 यूहन्ना 4:2, 3.) [114]हम जानते हैं कि किसी भी व्यक्ति के लिए परमेश्वर यह नहीं चाहता है कि वह खोए (1 तीमुथियुस 2:4; 2 पतरस 3:9), इसलिए यह लगता है कि सब लोगों को सृष्टि के उसके कामों में परमेश्वर की गवाही को देखने और उसे ढूंढ़ने की जन्मजात ज़िम्मेदारी दी गई थी (देखें रोमियों 1:18-21; 2:14, 15)। बेशक यह कहा गया है कि परमेश्वर ने पिछली पीढ़ियों को अपने मार्ग जाने की अनुमति दे दी थी (प्रेरितों 14:16), परन्तु सुसमाचार के आने से एक नई सुबह का आरम्भ हुआ। एथेंस में ''अरियुपगुस'' में खड़े होकर कहा, ''हमें यह समझना उचित नहीं किईश्वरत्व सोने या रूपे या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों। इसलिये परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है'' (प्रेरितों 17:22, 29-31)। [115]देखें रोमियों 8:12, 13; 12:1, 2; गलातियों 2:20. [116]यूनानी भाषा में नियमबद्ध वाक्य खण्डों के चार वर्ग हैं। इनमें से पहला वर्ग निर्देशात्मक भाव में क्रिया के साथ आम तौर पर *ei* के साथ होता है जिसमें वक्ता यह मान लेता है कि पहले भाग (यदि वाले वाक्यखण्ड) में बताई गई शर्त वास्तविकता है (जेम्स ए. ब्रूक्स एंड कार्ल्टन एल. विनब्रे, *सिनटैक्स ऑफ न्यू टैस्टामैंट ग्रीक,* टाइपसैट संस्क. [लैनहैम, मैरिलैंड: यूनिवर्सिटी प्रैस ऑफ अमेरिका, 1988], 182)। [117]5:26 में हम जिसकी बात कर रहे थे वह एक नकारात्मक आज्ञा या निषेधाज्ञा है। मत्ती 6:19 में विलियम डग्लस चैम्बरलेन को इसका एक अच्छा उदाहरण मिला है, जहां यीशु ने कहा, ''अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो [*Mē thēsaurizete*]।'' चैम्बरलेन ने इस निषेधाज्ञा का अनुवाद ''धन इकट्ठा करना छोड़ दो'' के रूप में किया और फिर लिखा, ''यीशु की आज्ञा का मतलब यह है कि लोग स्वर्ग में धन इकट्ठा करने के बजाय पहले ही पृथ्वी पर धन इकट्ठा कर रहे हैं और वह चाहता था कि वे उसे छोड़ दें। अंग्रेज़ी सस्करणों में यह अंतर नहीं मिलता है।'' (विलियम डग्लस चैम्बरलेन, *ऐन एक्सेजेटिकल ग्रामर ऑफ द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1941], 86)। [118]बाउर, 871. [119]रॉबर्ट एल. जॉनसन, *द लैटर ऑफ पॉल टू द गलेशियंस,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 163. [120]वारेन डब्ल्यू. विर्यसबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंटरी: न्यू टैस्टामैंट,* अंक 1 (कोलोराडो, स्प्रिंग्स, कोलोराडो: विक्टर 2001), 720.

[121]कोल, 170. [122]ब्रूस, 257. [123]वाल्टर शमिथल्स, *पॉल एंड द नॉस्टिक्स,* अनु. जॉन ई. स्टील (नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस, 1972), 49. [124]ब्रूस, 258. [125]*द न्यू इंटरनैशनल डिक्शनरी ऑफ द बाइबल,* पिक्टोरियल संस्क., संपा. जे. डी. डग्लस एंड मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1987), 393 में पीटर टून ''नॉस्टिसिज्म।'' [126]देखें यूहन्ना 14:15, 21; 15:10; 1 यूहन्ना 2:3-6; 3:16-24; 5:2, 3; 2 यूहन्ना 6. [127]एवरेट फर्ग्यूसन, *द चर्च ऑफ क्राइस्ट: ए बिब्लिकल एक्लेसियोलॉजी फॉर टुडे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.,1996), 390. [128]देखें 4:8-11; मरकुस 7:18, 19; 2 कुरिन्थियों 8:7-9; कुलुस्सियों 2:16, 17; 1 तीमुथियुस 4:1-5; इब्रानियों 9:8-14. [129]देखें मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:45-47; कुलुस्सियों 1:21-23. [130]देखें इब्रानियों 10:4-14; 13:20; यहूदा 3; प्रकाशितवाक्य 14:6.

[131]देखें यशायाह 44:1-3; यहेजकेल 39:29; योएल 2:28, 29; जकर्याह 12:10. [132]देखें प्रेरितों 2:16-39; 5:32; 11:15-18; 1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19; गलातियों 3:2, 3; 4:6; तीतुस 3:4-7. [133]इस वचन से सम्बन्धित

कुछ महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण दिए जाने चाहिए: (1) ''बात'' शब्द को मूल धर्मशास्त्र के अर्थ को सही सही व्यक्त करने के लिए अनुवादकों द्वारा सही ही जोड़ा गया है। (2) क्रिया शब्द ''ठहरा'' स्थाई परिणामों का संकेत देता है। (3) ''सब'' इस अर्थ को दिखाता है कि केवल एक अपराध का दोषी भी पूरी व्यवस्था को तोड़ने का दोषी बन गया। [134]विश्वास परमेश्वर की पुरानी वाचा के लोगों के लिए धर्मी ठहराने के माध्यम का काम भी करता है, जैसा कि इब्रानियों 11 स्पष्ट करता है (देखें रोमियों 3:21-26)। [135]''पोर्नोग्राफी'' शब्द दो यूनानी शब्दों (पोर्न) तथा (ग्राफे) से निकला है। *Pornē* शब्द का इस्तेमाल ''वेश्या'' के लिए होता है। बाइबल में *graphē* शब्द का अर्थ आम तौर पर ''पवित्र शास्त्र'' या ''लेख'' हुआ है परन्तु बाइबल से बाहरी यूनानी में यह ''पेंटिंग या ड्राइंग'' का भी संकेत देता है। इसका अर्थ यह हुआ कि तस्वीरों के द्वारा या लिखित रूप में, ''pornography'' कामुक चित्रों को दर्शाना है, जो व्यभिचार से सम्बन्धित है। [136]1 तीमुथियुस 3:1 में ''अध्यक्ष'' (*episkopos*) दर्शाता है कि प्राचीनों यानी ऐल्डरों के पास अधिकार है, जैसा कि इब्रानियों 13:17 में आज्ञा है। इसके अलावा ''अधिकार'' के लिए एक और यूनानी शब्द (*epitagē*) मूल में ''आज्ञा'' तीतुस 2:15 में सुसमाचार प्रचारक के सम्बन्ध में मिलता है। [137]देखें मत्ती 28:18-20; यूहन्ना 16:12, 13; प्रेरितों 1:8; इब्रानियों 2:3, 4. [138]कई वचन परमेश्वर के संसार का न्याय करने की बात करते हैं (रोमियों 2:2, 5; 3:6; 1 कुरिन्थियों 5:13; 1 पतरस 1:17), जबकि अन्य वचन विशेष रूप में इस भूमिका को यीशु को दिखाते हैं (मत्ती 25:31-46; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:1)। कुछ लोगों को यहां विरोधाभास दिखाई देता है परन्तु इसका समाधान रोमियों 2:16 जैसे वचनों में मिलता है: ''परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा'' (देखें प्रेरितों 17:31)। [139]भजन 95 में दाऊद ने परमेश्वर ने दाऊद के द्वारा एक और विश्राम का संकेत दिया। [140]परन्तु नये नियम में अनुवाद हुए तीन मुख्य जिनका अनुवाद ''प्रेम'' हुआ है, प्रेम की अवधारणा को व्यक्त करने वाले अकेले शब्द नहीं हैं। *Epipotheō* और इसके सजातीय शब्द कोमलता और गहरे लगाव को दर्शाते हैं (फिलिप्पियों 1:8; 4:1; 2 तीमुथियुस 1:4)।

[141]देखें यिर्मयाह 4:30; 22:20, 22; विलापगीत 1:19; यहेजकेल 16:33, 36, 37; 23:5, 9, 22; होशे 2:5, 7, 10, 12, 13. [142]जी. एबट-स्मिथ, *ए मैनुअल ग्रीक लैक्सिकन ऑफ द न्यू टैस्टामैंट,* 3रा संस्क. (एडिनबर्ग: टी एंड टी क्लार्क, 1937), 65. [143]प्रेम के सम्बन्ध में एक और शब्द *philostorgos*, *philia* तथा *storgē* को मिलाता हुआ एक मिश्रित शब्द है। नये नियम में यह शब्द एक बार रोमियों 12:10 में मिलता है जहां NKJV में इसका अनुवाद ''दयालुता पूर्वक स्नेही'' हुआ है। LXX में इस शब्द के कई रूप मिलते हैं। [144]निगेल टर्नर, *क्रिश्चियन वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1981), 261. [145]डेविड स्टिवर्ट, *ए कमैंट्री ऑन फिलिपियंस* (सरसी, आरकैंसा: स्टिवर्ट पब्लिकेशंस, 2006), 535-36. [146]''वाया डोलोरोसा'' (''दुखों का मार्ग'') के सही-सही रास्ते का पता नहीं है। परम्परागत मार्ग जिसे यात्री अंटोनिया के किले से होली स्पलकर चर्च के स्थान तक जाते हैं, संदेहपूर्ण है, अंटोनिया के बजाय यह संभावना है कि पिलातुस, यरूशलेम आने के समय हेरोदेस महान के महल में ठहरता हो और प्रिटोरियम (मत्ती 27:27; मरकुस 15:16; यूहन्ना 18:28, 33; 19:9) नगर के पश्चिम में उस क्षेत्र में हो। [147]दाऊद के इरादे की, परमेश्वर ने सराहना की और उसे मान लिया। यहोवा इस्राएल जाति की स्थापना के लिए उसके सब युद्धों में उसके साथ था, पहले यहूदा में और फिर इस्राएल में परन्तु मन्दिर परमेश्वर का घर है, ''प्रार्थना का घर'' होना था (यशायाह 56:7; मत्ती 21:13); और यह परमेश्वर की ओर से ठहराया गया था कि ''शांति के राजकुमार'' का सुसमाचार सब जातियों में शांति लाने के लिए यरूशलेम से निकले (यशायाह 2:1-4; लूका 24:46, 47; प्रेरितों 1:4-8)। दाऊद और उसके सदा तक रहने वाले सिंहासन के बारे में दाऊद के लेखों में तथा भविष्यवाणियों में कई भविष्यवाणियां केवल यीशु में ही पूरी हो सकती थीं। (देखें यशायाह 9:6, 7; यिर्मयाह 23:5, 6; 30:9; 33:14-16; यहेजकेल 34:23, 24; 37:24, 25; होशे 3:5; मीका 5:2; मत्ती 1:1; 2:1-6; लूका 1:30-33; प्रेरितों 2:25-36.) [148]जॉन बार्टलेट, *फेमिलियर क्वोटेशंस,* 16वां संस्क., संपा. जस्टिन कप्लन (बोस्टन: लिटल, ब्राउन एंड कं., 1992), 521 में उद्धृत जॉन एमरिक एडवर्ड डलबर्ग- एक्टन। [149]क्युंटस कर्टियुस *हिस्ट्री ऑफ एलेक्जेंडर* 4.2.1—4.4.21; जोसेफ़स *एंटिक्विटीज़* 11.8.3-4. [150]2:1-5 में पौलुस का उदाहरण तीमुथियुस के खतने से संबंधित था उसने इस अन्यजाति के खतने का पूरी तरह से इनकार किया, ताकि गलातियों में ''सुसमाचार की सच्चाई बनी रहे'' (2:5)।

[151]*Suzētēo* (सुज़ेटियो) अनुवाद ''बहस'' भी हो सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि अनुवाद आम तौर पर उन संदर्भों में जहां सभ्यता में कमी पाई जाती थी ''बहस'' के बजाय ''वाद विवाद'' को प्राथमिकता देते थे।